

Fence eating the crops

By

VED from VICTORIA INSTITUTIONS

१९४७ में भारत की स्थापना के बाद, एक नया देश सरकारी कर्मचारी वर्ग के स्वार्थी उद्देश्यों की पूर्ति करता जीवंत हुआ। पिछली अंग्रेज प्रशासकों ने इन्हें 'जन सेवक' का नाम दिया था। मगर, वस्तुतः अब वो 'जन मालिक' बने हुए हैं।

With the formation of India in 1947, a new nation catering to the selfish interests of the government employee class came into being. The erstwhile British administrators had named them as 'public servants'. However, now they are literally the 'public masters'.

लगभग हर नौजवान सरकारी कर्मचारी बनना चाहता है। बाकि सारी नौकरियाँ जैसे कि विक्रय, निर्माण, होटल, ऑटोमोबाइल सेवा, अन्य सेवा उद्योग, कम्प्यूटर का क्षेत्र, व्यापार और अन्य कामों को बहुत बहुत निचली दर्जे के व्यवसाय की तरह देखा जाता है। इन नौकरियों को ईमानदार और सम्माननीय काम नहीं माना जाता है। ऐसा क्यों है?

Almost every youngster wants to become a government employee. All other jobs like sales, construction, hoteliering, automobile service, other service industries, writing, computer field, business and much, much else are seen as low-class professions. These jobs are not seen as honest and honourable work. Why is it so?

इसके मुख्य कारण भारतीय सामंतीय भाषाओं के भेदों में देखे जा सकते हैं, जो इन कर्मचारियों को निचली शब्द श्रेणी में दर्शाते हैं।

VICTORIAINSTITUTIONS

Deverkovil673508India

adm@victoriainstitutions.com;

ved036@gmail.com

www.victoriainstitutions.com

Telegram: https://t.me/VI_Home/8

The main reason of this can be seen in the codes of the Indian feudal languages, which grade these employees in the lower indicant word bracket.

हम 'काम' शब्द का इस्तेमाल सरकारी अफसरों के संदर्भ में न कर सकते हैं। वैसे सरकारी रोजगार अब काम नहीं है। वो एक सामाजिक स्थान है। सरकारी कर्मचारी आज शानदार विशेषाधिकार और उत्तम विलासिता के हकदार हैं। उसी समय, इस देश की ज्यादातर आबादी अब भी भयानक स्थितियों में रह रही है।

One cannot mention the word 'work' with regard to the government officials. For government employment is now not a work. It is a social position. The government employees are entitled to fabulous privileges and superb luxury. At the same time, the majority population of this nation still lives in dire conditions.

इस देश के एक मामूली बढ़ई का मामला अगर लिया जाये. उसकी क्या कमाई है? कुछ राज्यों में जहाँ अनियमित विदेशी धन का निवेश है (उदाहरण : केरेला), एक बढ़ई की कमाई करीब ५०० रुपये/ प्रतिदिन है। मगर, कुछ राज्यों में यह बहुत ही कम है। आइये

हिसाब लगाये उच्च वेतन श्रेणी को ध्यान में रखते हुए ।

Take the case of an ordinary carpenter in this nation. What is his wage? In some states where an unregulated input of foreign money is there (example: Kerala), the wages of a carpenter is around Rs. 500/- per day. However, in most other states, it is much less. Let us calculate taking the higher wage scale.

अगर एक बढ़ई ३० दिन काम करता है, तो उसे १५०००/- हर महीने मिलेगा । मगर, ऐसा मुमकिन नहीं कि पूरे ३० दिन काम किया जा सके । साप्ताहिक छुट्टी और अन्य विकर्षण आ सकते हैं। तो, वो अधिक से अधिक २५ काम कर सकता है । इसका मतलब, ज्यादा से ज्यादा उसकी कमाई १२५००/- प्रति महीना होगी, अगर वो बहुत मेहनत करे तो ।

If a carpenter works for 30 days, he will get 15000/- per month. However, it is not possible to work for 30 days. A weekly holiday and other distractions will come in. So, at the most he may work only 25 days. That means, at the best he will earn only around 12500/- per month, if he works hard.

अधिकांश अन्य श्रमिकों के लिये, मजदूरी और भी काम है । उनके पास ना ही सामाजिक जमानत, ना पेंशन, ना अतिरिक्त लाभ, अर्जित छुट्टी, महंगाई भत्ता, पुरस्कृत छुट्टी, यात्रा भत्ता, हर साल एक महीने का मुफ्त वेतन और इनके साथ और भी बहुत सरे भत्ते जिनका कि एक सरकारी कर्मचारी हकदार है ।

For most other labour, the wages are much less. There is no social security, no pension, no bonus, earned leave, dearness allowance, gratuity, leave travel allowance, one month

free salary every year and many other perks that a government employee is entitled to.

क्या उसे सरकार से कुछ मिलता है? यह बात संदेहास्पद है? वो अपने बच्चों को कहा भेजता है? ये बात साफ है कि उसकी सामर्थ सरकारी विद्यालय कि ही है, जहाँ उसके बच्चे उप्-स्तरीय शिक्षकों के प्रभाव में आयेंगे (आप, साब, मास्टर जी, जी, उन् इत्यादि) । यह शिक्षक इनके बच्चों के साथ तुच्छ, निचली श्रेणी के शब्दों का इस्तेमाल करेंगे और उनके माँ बाप के बारे में भी (तू उस इत्यादि)। वो सोचता है कि अगर वो अपने बच्चों कि पढ़ाई पे ज्यादा पैसे खर्च करता है १८ साल के लंबे अंतराल तक, तो वे महान गुणवत्ता के साथ बाहर आयेंगे।

Does he get anything from the government? It is doubtful. Where does he send his children to? Well, he can afford only government schools, where again his children come under substandard teachers (Aap, Saab, Master Ji, Ji, UNN etc.). These teachers would use mean, lower indicant words to his children and about their parents (Thoo, USS etc.). He feels that if he spends much money on his children's education for around 18 long years, they would come out with great qualities.

असल में होता यह है के इन बच्चों के अंदर सैधांतिक तौर पर निचली स्तर के व्यक्तियों को सम्मान देना का बोझ लाद दिया जाता है, जिन्हें ये सिखाया जाता है कि जी, साब, मास, सर इत्यादि कह कर पुकारे। इन शिक्षकों कि अंग्रेजी का कोई स्तर नहीं होता । ये बहुत ही चतुर लोग हैं जिन्होंने सांस्कृतिक नेताओं का चोला ओढ़ रखा है और उन्हें यह बताते हैं कि अंग्रेजी साम्राज्यवादीयों कि भाषा है । वो बताते

है कि उनके लिये केवल स्थानीय सामंती भाषा ही अच्छी है। वो उन्हें बोलते हैं कि अंग्रेजी उनके लिये खराब है। यही अवधारणा बच्चों को शिक्षकों द्वारा परोसी जाती है।

Actually what happens is that the children are indoctrinated with the burden of loaded respect for low-standard persons, who they are taught to call Ji, Saab, Mash, Sar etc. These teachers do not have any standard in English. Very cunning guys who don the mantle of cultural leaders have told them that English is the language of the imperialists. They tell that only their local feudal vernacular is good for them. They tell them that English is bad for them. This idea is fed to the children by their teachers also.

हर साल लाखों (१०० हजार) विद्यार्थी अपनी दसवीं की परीक्षा लिखते हैं। वो अपने जीवन के १८ साल निचली स्तर की शिक्षा में गवां देते हैं, जिसमें से कुछ ही फायदा उठा पाते हैं। स्थानीय सामंती भाषा उन्हें बतलाता है कि कुछ ही रोजगार जैसे कि डाक्टरी, इंजीनियरिंग, सरकारी नौकरी और उन जैसे काम बड़े रोजगार हैं। ये उन्हें यह भी बतलाता है कि ज्यादातर बाकि रोजगार निचली स्तर के काम हैं। वो उन्हें आगे तुच्छ शब्दों के माध्यम से यह बतलाते हैं कि उनके माता-पिता निम्न स्तरीय व्यक्ति हैं। स्थानीय भाषाओं की सामंती विशेषता इस सिद्धांत को बड़े अच्छे तरीके से सिखा देती है। सरकारी अधिकारियों के साथ साथ आमिर बड़े ही चालाक होते हैं। उनके पास धन है। वो चाहे तो अपने बच्चों को अच्छे से अच्छे विद्यालयों में भेज सकते हैं। बाद में वो अपने बच्चों को अंग्रेजी भाषी राष्ट्रों में भेजते हैं। जब ये बच्चे इन अंग्रेजी

भाषी राष्ट्रों में पहुँचते हैं, तो वो वहाँ के समाज और स्थानीय लोगों को उन निचली स्तरीय शब्द श्रेणी के इस्तेमाल से दूषित करना शुरू कर देता है। उसी समय वो भारत में रह रहे लोगों को उनके दोषों के बारे में भाषण देते हैं। वो ऐसी भावना दर्शाते हैं जैसे कि वो प्रतिभाशाली बुद्धिमान हैं, और यहाँ रह रहे लोग बेवकूफ हैं।

Every year lakhs (100 thousands) of students write their 10th class exam every year. They waste around 18 years on low quality education, from which only very few gather any benefit. Local feudal vernaculars inform them that only certain jobs like that of doctors, engineers, government employment and such are big jobs. It also informs them that most other jobs are low grade. They further inform them by means of lower words that they parents are low quality persons. The feudal quality of the local vernaculars indoctrinates this fantastically. The government officials as well as the rich are very cunning. They have money. They can send their children to the best schools if they want. Later, they sent their children to English nations. Once these children arrive in English nations, they spoil the society there by using the same lower grade indicant words about and on the local people there. At the same time, they lecture to the people stuck back in India about their various faults. The feeling that they exhibit is that they are the intelligent geniuses, while the rest of the people stuck here are fools.

भारतीय सरकारी अधिकारियों को शानदार तनख्वाहें और भत्ते मिलते हैं। भारत में सरकारी नौकरी के बहुत सारे स्तर हैं, जहाँ पे पूरी आमदनी और भत्ते करीब ६०,००० से १२५,००० प्रति महीना होती हैं। ज़रा कल्पना

कीजिये इस चौंकाने वाली असमानता कि इनमें और एक मामूली मेहनती मजदूर में , जोकि भारत में करीब ४००० से १५००० रुपये प्रति माह { ज़्यादातर करीब ४०००/- प्रति माह या इससे भी काम कमाते है } और ये डकैत कितना कमाते है ।

Indian government officials get fabulous salaries and perks. There are many levels of government employment in India, where the total salary and perks come between 60,000 to 125000 rupees per month. Just imagine the shocking disparity between a hardworking common worker who in India actually earns between 4000 to 15000 rupees per month {majority earn near to 4000/- per month or even below that amount} and what these dacoits earn.

बहुत मध्य स्तरीय सरकारी अधिकारी करीब ४० से ६० हजार रुपये प्रति माह कमाते है । यहाँ तक कि एक चपरासी कि आय करीब १५००० या उससे ज़्यादा प्रति माह हो सकती है । इस परिदृश्य में एक आम आदमी कहाँ खड़ा होता है ? कल्पना कीजिये उन असंख्य लोगों की जोकि इस देश के सैकड़ों हजारों दुकान में सामान बेचते या बेचती है । उनके आय कि सामान्य स्तर क्या है ? २००० से ६००० तक हो सकती है । शायद ही अधिक हो कभी ।

Many middle level government officials earn between 40 to 60 thousand rupees per month. Even a peon's wages can be 15000 and more per month. Where does the ordinary man stand in this scenario? Imagine the immense people working as salesmen and saleswomen in hundreds of thousands of shops in our nation. What is their common

level of wages? It may vary from 2000 to 6000. Very rarely more.

इंग्लैण्ड में एक महाविद्यालय के प्राध्यापक कि आमदनी करीब डेढ़ से दो गुना होगी एक बढ़ई के संभव मासिक आमदनी से । और यहाँ भारत में, एक प्राध्यापक ७५००० + + + कमाता है जब कि एक बढ़ई ४०००/- और १२५००/- +० +० +० ।

In England, the salary of college professor is at the most around 1½ to 2 times that of a carpenter's possible monthly earnings. Over here in India, the professor earns 75000 + + + while a carpenter gets between 4000/- and 12500/- +0 +0 +0.

ये हाल में ही हुआ कि एक सरकारी कर्मचारी के भत्ते हद से ज़्यादा बढ़ गए । सच्चाई तो यह है कि इस कानूनन लूट कि शुरुवात आठवे वेतन आयोग के लागु होने से हुई ।

It was only very recently that the perks for the government employee became so exorbitant. Actually it was the 8th Pay Commission that started this legally sanctified loot.

भारतीय भाषाएँ बड़ी सामंती होती है । इन भाषाओं में, हमें हर एक शब्द संबोधन और संदर्भ के हिसाब से बदलना पड़ता है अपनी कमाने कि झमता और सामजिक स्थान के हिसाब से । दुनिया कि बहुत सारी और भाषाएँ भी है जिनमें इस तरह कि नाक्रत्मकता है । लेकिन केवल कुछ ही भाषाएँ है जैसे कि अंग्रेजी जिसमें इस तरह कि नाक्रत्मकता नहीं है ।

Indian languages are very feudal. In these languages, one has to change each and every word of address, and reference depending on one's relative earning capacity and social

position Many other world languages also have similar negativities. Only a few languages like English do not have this negativity.

भारतीये भाषाएँ स्वाभाव से बड़ी सामंती होती है । बहुतसारे शब्द जैसे 'यू, ही, शी, हिज़, हर्ज़, देयेर', और अत्यधिक जुड़े हुए शब्द विविधता के साथ आते हैं, हर एक शब्द बदलते सामाजिक स्तर को दर्शाता है और उनके आजादी के अन्य मापदंड । यह संहिताएं भारतीये संविधान कि भावनाये के बिल्कुल विरुद्ध है ।क्योंकि संविधान कानून के सामने बराबरी का अधिकार और गरिमा कि बराबरी का आश्वासन देता है हर नागरिक को । यहाँ कि सामाजिक और प्रशासनिक सच्चाई को देखते हुए संविधान के यह शब्द केवल मुखौटे बन के रह जाते हैं । यह वाक्य देखे: { ही बिट हिम } : (उन उसको मार किया और उस उन्को मार किया.) इनमे से कौन सा अपराध है? अगर यह संहियाये है जिनमें न्यायतंत्र को घटनाएं नियंत्रित करनी है, तो एक आम आदमी को न्याय कैसे मिल सकता है?

Indian languages are very feudal in nature. Many words like 'you, he, she, his, hers, their', and immense connected words come with a variety of terms, each signifying differing social status. Each word also, contains codes that limit a person's social limits, and other parameters of freedom. These codes are totally against the spirit of the Constitution of India. For the constitution assure equality before the law and equal dignity to all citizens. The words of Constitution of India remain just a facade considering the social and administrative reality here. See the sentences: {He beat him}: UNN ussko maar kiya and Uss UNNko maar kiya. Which one is a crime? If this is the codes in which the

judiciary has to define incidences, how can the common man get justice?

एक आम आदमी और एक सरकारी अधिकारी के बीच संचार के वक्त सारे बड़े शब्द जैसे आप, साब, उन्, सर एंड बाकि बहुत सारे सरकारी अधिकारी के अधिकार होते हैं । उस आम आदमी को किसी भी स्तर के शब्दों से पुकारा जा सकता है जिनमे तू, तुम उस और बाकि नीची श्रेणी के शब्द । वास्तव में, इस आधुनिक भारत राष्ट्र में राजशाही का मतलब सरकारी अधिकारी है । आम आदमी उनके लिये केवल गुलाम कि तरह है ।

In a communication between the common man and a government official, all the higher words like Aap, Saab, UNN, Saar and much else are the right of the government officials,. The common man can be addressed by any level of words including a Thoo, Thum, USS and many other lower indicant words. In fact, in the modern nation of India, the government officials are the royalty. The common man is just a serf to them.

उदाहरण के लिये, अगर एक सरकारी अधिकारी और एक आम आदमी में एक विवाद हो, तो अधिकारी को पुलिस स्टेशन में बैठने को एक कुर्सी दी जाती है और उन्हें आप या साब कह कर संबोधित किया जाता है । उसी वक्त आम आदमी को खड़े रहना पड़ता है । उसे तू कह कर संबोधित किया जाता है, और उसके बारे में बात करते वक्त उस और अन्य निचली दर्जे के शब्दों का इस्तेमाल होता है । इन सब के बाद, यह ज़ाहिर है कि उन आम आदमी कि ओर और अपशब्दों का प्रयोग हो। यह भी संभव है कि उसकी बुरी तरह पिटाई हो और उसे मर के

कम्बुम्बा बना दिया जाये। वैसे ऐसा भेदभाव भारतीये संभिदान के अनुसार जायज नहीं है । संभिधान द्वारा सामाजिक गरिमा के लिये बराबरी का अधिकार साथ ही कानून और प्रशासन के सामने बराबरी का अधिकार आश्वासित है । इनकी अवहेलना करना अपराध है ।

For example, if there is a dispute between a government officer and a common man, the officer gets a seat in the police station and is addressed as Aap and Saab. At the same time, the common man has to stand. He would be addressed as **Thu** and referred to as **USS** and other lower grade words. When this is done, it is quite certain that more abusive words would be directed towards the common man. He can even be beaten to a pulp. However, this discrimination is not allowable as per the wordings of the Constitution of India. For, equal rights to social dignity and equality before the law and administration are assured by the Constitution. To violate this is a crime.

अब और क्या ? उनका वेतन अपने आप में शानदार है । अंग्रेजी भाषी राष्ट्रों में हर एक के लिये सामाजिक सुरक्षा है । उदाहरण के तौर पर इंग्लैंड में अगर कोई व्यक्ति बीमार है और काम नहीं कर सकता/ सकती तो भी वो सामाजिक वित्तीय सहायता के अधिकारी है । वास्तव में, हर कोई सामाजिक सुरक्षा कोष का अधिकारी है, अगर वो महिला या पुरुष आर्थिक रूप से सक्षम नहीं है । यह हर एक का अधिकार है । नाकि केवल कुछ सरकारी अधिकारियों का ।

Now what else? The salary itself is fabulous. In English nations, there is social security for everyone. For example in England, if one person is ill and cannot work, even then, he or

she is entitled to public financial support till he or she is fit to work. In fact, everyone is entitled to a social security fund, if he or she is not financially fit. This is everyone's right. Not just the right of a few government employees.

एक सरकारी कर्मचारी को वृत्ति (पेंशन) पाने का अधिकार है। देश के दूसरे नागरिक, जो और क्षेत्रों में काम कर रहे हैं, उन्हें नहीं है।

A government employee is entitled to a pension. Othercitizensof this nation, who also have been working in many fields, are not!

सरकारी कर्मचारी की वृत्ति (पेंशन) खूब है। एक आम आदमी, जिसने अपनी सारी जिंदगी संघर्ष किया है, जानता है की अगर मरते दम तक उसने रोज अपने लिये नहीं कमाया, तो वो हमेशा बर्बादी की कगार पर खड़ा रहेगा। जबकि उसका पडोसी, जिसने सारी उम्र एक सरकारी कर्मचारी के रूप में खुदको बहोत मनोरंजित किया है, शाही पेंशन पाता है। आम आदमी और उसके बच्चों को अपनी रोजगारी, सरकारी कर्मचारी और उनके बच्चों की सेवा करके कमानी पड़ती है।

The government-employee pension is fabulous. An ordinary person, who has literally toiled for the whole of his life, finds that unless he fends for himself everyday till his death, he is literally always on the verge of disaster. At the same time, a neighbour of his, who has simply entertained himself as a government employee all his working life, gets a royal pension. The common man and his children are forced to eke their livelihood as the serving class of the government employee and his/her children.

सारे कायदे और कानून सरकारी कर्मचारियों द्वारा ही लिखे जाते हैं। जो राजनीतिज्ञ कुछ

समय के लिये सत्ता में आते हैं, उन्हें काबू नहीं कर पाते। क्योंकि वो खुद कठिन परिस्थितियों में होते हैं : खुदको कार्यवृत्त श्रेणी के दर्जे में रखने के लिये जूझते।

All laws and rules are basically written by the government employees. The politicians who come to power for small periods of time are not able to control them. For, they themselves are in very precarious conditions: fighting and struggling to keep themselves up to the levels of the official class.

सरकारी कर्मचारियों ने, बड़ी चतुरता से, एक नया बेईमानी का तरीका इजाद किया है, 'वृत्ति का विनिमय' ("कम्यूटेशन ऑफ पेंशन") पहले सेवानिवृत्ति के बाद, १५ साल की पेंशन को जमा किया जाता था, फिर उसका आधा किया जाता था। एक सरकारी कर्मचारी को सेवानिवृत्त होने पर ये सारा रूपया एक साथ मिल सकता था । लेकिन दिक्कत ये थी, के इसके बाद ज़िंदगी भर उसे हर महीने सिर्फ आधी वृत्ति ही मिलेगी।

The government employees, with much cunningness, have evolved another cheating system called 'Commutation of Pension'. The earlier version of this was like this: After retirement, the total amount of pension for 15 years is totalled. The exact half of this is then calculated. A government employee can opt to take this amount in bulk at the commencement of his retired life. The only problem was that for the rest of his life, he would be entitled to only half pension per month.

लेकिन अब, ये अपने आप में एक ग़लत बात है। पहली बात, सिर्फ सरकारी कर्मचारी को वृत्ति पाने का अधिकार है। दूसरी वृत्ति सिर्फ जीवित

व्यक्ति को दी जाती है। यहाँ केवल साढ़ेसात वर्ष की वृत्ति एक साथ दी जाती है। तीसरी बात, ये पैसा नागरिक के आयकर में से दिया जाता है, जो रूपया देश की उन्नति और नागरिक सेवा में लगनी चाहिए। ये सरकारी नौकरों पे फिजूलखर्च के लिये नहीं है। चौथी बात, आम आदमी के पास ऐसा कुछ भी नहीं है, जिससे वो और उसके बच्चे सरकारी कर्मचारी से आर्थिक रूप में टक्कर ले सकें। क्योंकि, सरकारी कर्मचारी को दरियादिली से रकम दी जाती है, जबकि आम आदमी और उसके बच्चे एक एक रूपया कमाने को तरसते हैं।

Now, this itself is a great anomaly. For one thing, only government employees are entitled to pension! Second, pension is to be given only as long as a person is alive. Here simply 7½ years' pension is given in a lump. Third, this huge sum is taken from the public exchequer. This amount is actually meant for developmental and public service activities. It is not for squandering on public servants. Fourth, the common man has nothing with which he and his children can compete with the government employee financially. For, the government employee is flushed with funds, while the common man and his children are finding it hard to earn each rupee.

अब ये विनिमय बेवकूफी का पहला हिस्सा है। अगला हिस्सा और भी ग़लत है। पहले ये पाया जाता था के ज़्यादातर वृत्ति पानेवाले लोग, ६५ वर्ष की आयु से पहले मर जाते थे। अब क्योंकि उनके पास ज़्यादा पैसा होता है, इसलिए उनका सेवा निवृत्ति के बाद का जीवन बहोत बढ़िया से गुज़रता है। वो सामंतों की तरह जीते हैं। बहोत तो ६५ वर्ष की आयु के बाद भी नहीं मरते। अब उन्होंने तो केवल १५ वर्ष की वृत्ति

एक साथ ली थी, तो १५ वर्ष के बाद भी उन्हीं क्यूँ केवल आधी पेंशन मिलनी चाहिए?

Now this is the first part of this Commutation Nonsense. What comes next is more criminal. Earlier, it was found that most retired persons used to die before their 65th year. Now with more funds at their command, their retired life is also a fantastic time. They live as feudal lords. Very few are dying even much after their 65th year. Now, they had commuted only their 15 years pension. Why should they get only half pension after those 15 years?

सरकारी कर्मचारी यहाँ कायदे बनाते हैं। उन्होंने अब ये कायदे बदल दिए हैं। अब अगर वो अपनी वृत्ति परिवर्तित करते हैं, तो भी उन्हें १५ वर्ष बाद भी पूरी वृत्ति मिलेगी. कितने आम आदमी “वृत्ति के विनिमय” (“कम्यूटेशन ऑफ पेंशन”) और उसमें हुए बदलाव के बारे में जानते हैं? ज्यादातर लोगों को ज्ञान ही नहीं की वो अपने सरकारी सेवकों पर कितना खर्च कर रहे हैं। कौन इसपर नज़र रखता है? कौन इस लूट की इजाज़त देता है? किसकी ज़िम्मेदारी के तहत?

The government employees make rules here. They now changed the rules. Now, if they commute their pension, they will get full pension after the 15 years. How many common citizens here know of commutation of pension, and all these later developments? Most of the people do not have any idea about what it is that they are paying to their own public servants. Whose is in charge? Who is allowing all this loot? Under whose authority?

मैंने कई औरतों को बहुत दुखद माहौल में काम करते देखा है, पत्थर तोड़ते, उनके बच्चे उनके कन्धों पर बंधे हुए। उन्हें अपनी सरकार

से क्या मिला है? कुछ नहीं। क्या ये उस आज़ादी का एक ज़रूरी हिस्सा है, जो हम हर वर्ष मनाते हैं?

I have seen many women working in very tragic circumstances, breaking stones, with their children tied in a bundle on their shoulders. What have they got from their government? Nothing. Is this an essential component of the freedom we are celebrating every year?

अगला मुद्दा : बैंक जाके लोन लीजिए। अगर आप सरकारी कर्मचारी हैं, हर चीज़ के लिये लोन है। फ्रिज, कंप्यूटर, गाडी और हर छोटे और बड़े उपकरणों के लिए, यहाँ तक की शानदार घर बनाने के लिए भी। सरकारी कर्मचारी को इतनी बढ़िया तनखाह और भत्ते मिलते हैं, जिससे उन्हें आर्थिक द्रिढता मिलती है, एक अच्छा फायदा। एक आम आदमी की तरफ उनके स्वभाव में अंतर, जिसे उन पैसों की ज़्यादा ज़रूरत है, हर उस इंसान को दिखेगा जिसने बैंक को इसके बारे में पुछा है। बहुत मामलों में कहा जा सकता है की ज़्यादातर सरकारी बैंक केवल सरकारी कर्मचारियों और उनपर निर्भर लोगों के फायदे के लिये बनाये जाते हैं। बैंक के लिये वो काफी आकर्षिक ग्राहक भी होते हैं। क्यूँकि वो बहुत आर्थिक स्थिरता के साथ आते हैं।

The next item: Go to a bank and seek a loan. If you are a government employee, loan for almost everything. For refrigerator, computer, car and every other small and big gadgetry to even building houses. The fabulous pay and perks given to the public servant turn into fabulous collateral security, as a frill benefit. The sharp difference in attitude to an ordinary man over here, who is actually in more need

for funds, is visible to anyone who has dared to approach a bank. In many cases, it may be said that most of government banks exist simply for the benefit of the government employee and his dependants. The banks also find them as attractive customers. For they come with solid security.

काफी वर्ष पहले (१९८०), मैंने एक छोटी सी जांच की, के किस तरह के विद्यार्थी व्यावसायिक सरकारी कॉलेजों में, जैसे मेडिकल, इंजीनियरिंग में पहुँचते हैं। उस वक्त, इंजीनियरिंग सीट भी बहुत अच्छी मानी जाती थी, आज की तरह नहीं जहाँ उसके माप दंड इतने नीचे गिर चुके हैं। ये पाया गया के ज्यादातर विद्यार्थी सरकारी कर्मचारियों के बच्चे थे। जब मैं अंग्रेजी सीख रहा था, तो ये पाया की, सरकारी कर्मचारियों के बच्चे, फिर चाहे चपरासी के, ज्यादा अच्छे कपड़े पहनते। ज्यादा आत्म-विश्वास रखते, अच्छा खाना खाते और आजीविका की अच्छी संभावनाएं भी पाते। जबकि औरों के बच्चे, खासकर कार्यवृत्त स्तर के, खुद को छोटा महसूस करते पाते, साथ में गरीबी और निचले स्तर के अपशब्दों को भी झेलना पड़ता।

Many years ago (1980), I did a minor enquiry on the type of students who reach professional government colleges like Medical, and Engineering. At that time, engineering seat was also a prized one, not like now when it has reached standards of sheer immensity. It was found that most of the students were the children of government employees. When I was taking English classes, I found that the children of government employees, even peons, were better dressed, more confident, better fed, and also with better career possibilities. The children of

others, especially of the working class, were simply bearing a lot of inferiority complex, along with the burden of their lower financial status and lower indicant feudal language words.

सरकारी कर्मचारियों को इसलिए काम दिया जाता है, ताकि वो लोगों का भला कर सकें, और उन्हें बेहतर बना सकें। यहाँ हमें पता चलता है के उन्होंने दश की सारी पूँजी, सहूलतें और धन का गबन कर लिया है।

Government employees are posted to seek to the welfare of the people and for making them better. Here what we find is that they have cornered almost all the funds, amenities, and resources of the nation.

इससे एक बहुत खतरनाक परिस्थिति पैदा होती है। पहले से ही सरकारी अफसरों को बहुत अच्छी सुविधाएं प्राप्त हैं। इसके साथ आता है हमारा पुराना सामंती ओहदा, जो भाषा से मिलता है। किसी भी सभ्य देश में, सरकारी अफसर एक आम आदमी को 'जनाब' (सर) कहके बुलाते हैं। केवल भारत में आम आदमी एक सरकारी अफसर को 'जनाब' कहके बुलाता है।

What this forebodes is a very, very dangerous situation. For, as it is, the government officials are loaded with exquisite privileges. Along with this comes the ancient feudal positioning that they are now claiming in language. Actually, in any civilised nation, the government official should naturally address a member of the public with a 'Sir'. In this nation, it is the common man who has to 'respect' their public servants.

अब एक सरकारी कर्मचारी की श्रेणी क्या होती है? अंग्रेजी सरकार द्वारा लिखित कायदों के

अनुसार, किरानी सिर्फ कार्यालय के अंदर का काम करने के लिये होते हैं। अब वो फैसले भी लेते हैं। ये ठीक होता अगर वो काबिल होते। देखा जा सकता है के ज्यादातर सरकारी किरानी को कम ज्ञान, जानकारी होती है, और वो अंग्रेजी में भी कमजोर होते हैं। तीसरी बात बहुत अहम है, जिस इंसान को अंग्रेजी नहीं आती, वो समाज को एक सामंती नज़र से ही देख पाता है। वो येही मानेगा के वो और उसके साथी सरकारी अधिकारी श्रेष्ठ लोग हैं; भारतीय भाषाओं में ऐसे ही शब्द इस्तेमाल किये जाते हैं।

Now, what is a government official's grade? Under the British-instituted public services, the clerks are just to do the inner office work. Now they have taken over decision-making. This would have been okay if the persons concerned were with enough calibre. It may be found that most government clerks are of very meagre knowledge, information and also very much lacking in English. The third factor has a terrible input, in that a person who does not know English, can imagine the society only in a very feudal manner. This person will naturally believe that he and his fellow government officials are superior beings; thus being the words they possess in Indian language terminology.

अब, मैं आपकी नज़र में हमारी राजकियता का एक और पहलु लाना चाहता हूँ। के वो लोग, अपने ओहदों के लिये भयभीत करने वाले शब्द चाहते हैं, ताकि आम लोग डर के मारे उन्हें और इज्जत दें।

Now, I need to bring into focus another feature about our bureaucracy. That is, they all want intimidating words as their

designation, so that ordinary people can be terrified to give more respect.

मैं एक खूबसूरत कहानी बता सकता हूँ, जो हुई थी। जब अंग्रेज़ भारत पर राज कर रहे थे। हर राज्य में ज़मीन पूंजीकरण विभाग, बहुत महत्वपूर्ण था। वो देश के अच्वल पैसा कमाने वाले विभागों में से एक था। उसके प्रमुख को पूंजीकरण का इंस्पेक्टर जेनेरल कहा जाता था। अंग्रेजों के जाने के बाद, उसका महत्व कम हो गया है। तब भी, विभाग का प्रमुख होने के नाते, और इसकी इस ज़बरदस्त खूबी के कारण, इसका इस्तेमाल कार्यकर्ताओं द्वारा बड़े बड़बोले और ढकोसले तरह से किया जाता था।

I can give a beautiful story that happened. When the British were ruling India, the land Registration department, in each state, was a very significant one. It was one of the main revenue accruing departments in the country. The head was known as the Inspector General of Registration. Since, the departure of the British, its significance has come down. Yet, as the title of a head of a department, and because of its striking quality, it was used by the incumbents with ample pomp and pageantry.

अंग्रेज़ राज्य के दौरान, आई.जी. के नीचे जिला रजिस्ट्रार होते थे। हर राज्य के हर ज़िले में एक होता था। एक छोटे भारतीय राज्य में, चतुर कार्यकर्ता, खुले में पदोन्नति की संभावनाओं की बात कर रहे थे। किसी ने आई.जी. और जिला रजिस्ट्रार के बीच श्रेणी रखने का सुझाव दिया। दरअसल किसी कारणवश नहीं, बल्कि पदोन्नति के मौकों को बेहतर करने के लिये। राजकीय कार्यकर्ताओं को जो चाहिए वो उन्हें मिल जाये। ताकि वो दोनों योजनार्य

बनाये और उन्हें लागू भी करें। राज्य के प्रमुखालय में एक जोनल इंस्पेक्टर का पद रखा गया।

During the British times, below the rank of the IG were the District Registrars. They were one in each district of the state. It so happened that in one small Indian state the scheming bureaucrats in this department were very visibly discussing the possibility of getting more promotion opportunities. Someone suggested the need to have some official grade between the IG and the District Registrars. Actually, not for any need, but to improve the chance for promotion. What the bureaucrats need, they can get. For they do both the conspiring as well as the execution. One Zonal Inspector post was initiated in the headquarters of the State.

ऐसे पदोन्नति का एक मौका बढ़ गया। लेकिन और थे जो बाक़ी रह गए. तो फिर से, योजना और लागू करना । छोटे राज्य को तीन हिस्सों में विभाजित करके तीन और पद बनाए गए ।तो अब चारों अफसरों को अलग-अलग कार्यालय, गाडी, फ़ोन, चपरासी, नीचले और ऊंचले दर्जे के किरानी, सुपेरिन्टेनडेंट और बाकी की ज़रूरतें। पहले आई.जि. के लिये दिया गया कागज़ सीधा उसके पास ही जाता था। लेकिन अब बहुत से नौसिखिए उसका अध्यन करते और उसे रेड टेप में उलझा देते।

One promotion chance was thus increased. But then there are others who are left out. So, again, conspiracy, and then execution. Three more posts were created after officially dividing the tiny state into three zones. Now, all the four officials need separate office, official vehicles, official phones, peons, lower division clerks, upper division clerks, superintendents and a whole lot of other paraphernalia. Earlier a paper forwarded to

the IG went straight to him, from the lower levels. Now, a lot of nitwits would sit over it to study, and wrap it in a vicious red tape.

अब तक जो हुआ वो ठीक। फिर भी शक और संदेह की एक परेशान करती भावना रह गयी। जब मैंने एक कार्यकर्ता को कहते हुए सुना “ज़ोनल इंस्पेक्टर सुनके लगता है पुराने वक्त के सफ़ाई का इंस्पेक्टर”। अंग्रेज़ राज्य के दौरान, ये इंस्पेक्टर नगरपालिका से आता था, और शौचालय देखता था, आम एवं निजी, किसी तरह की सफ़ाई की कमी के लिये, जिसके कारण संक्रमण या बिमारी फैले।

So far so good. Yet, still a nagging feeling of a lingering doubt and misgiving. As I heard one bureaucrat saying, “The word Zonal Inspector sounds like the old Sanitary Inspectors”. During the British times, this was an Inspector from the Municipality, who would come and check all the latrines, both private as well as public, for any incidence of lack of neatness, which may give cause for infection and epidemic.

तो, फिर षड्यंत्र और बाद में उसे लागू करना।ज़ोनल इंस्पेक्टर को बदलके डेप्युटी इंस्पेक्टर जेनेरल कर दिया गया। अब ये एक बहुत रौबदार ओहदा हो गया है। हर कोई प्रभावित है, जबकि पदधारी की शकल एक डकैत से मिलती हो।

So, again conspiracy, and then execution. The name Zonal Inspector was changed to Deputy Inspector General. Now, it is very formidable title. Everyone is impressed, even though the incumbent may have the sneaky looks of a dacoit.

पाठक ये ध्यान में रखे के ये सारी चालें केवल राजकीय कार्यकर्ताओं के अहम को शांत करने के लिये थी। इस में जो बहुत सारा पैसा लगता, वो जनता द्वारा दिए गए पैसों में से दिया जाते ।

The reader may bear in mind that all these manoeuvres were just for the ego satiation of the bureaucrats. The extravagant higher expenses it incurs are taken from the public coffers.

स्वतंत्रता के आने से किसे आज़ादी मिली? नाम की ये आज़ादी केवल राजकीय कार्यकर्ताओं को मिली।

With the coming of independence, who got freedom? The so-called freedom was only for the bureaucrats.

पाया गया है की काफी तालुक दर्जे के पद, जैसे तालुक सेल्स अफसर, तालुक कृषि अफसर आदि को, अब सहायक कमिशनर और सहायक डरेक्टर आदि बुलाते हैं। इससे आम जनता का क्या भला होता है , ये एक फ़िज़ूल का सवाल है। क्योंकि, जनता सुविधाओं के लिये पैसे देती है, नाकि किसीकी इज्जत करने या किसीके सामने झुकने के लिये। जितना खराब पद होता है, उतना ही खराब उस नीचले श्रेणी के कार्यकर्ता का बर्ताव होता है, जो उस पद पर होता है।

It has been found that many Taluk level posts like Taluk Sales Tax officer, Taluk Agriculture Officer etc. are now renamed as Assistant Commissioner and Assistant Director etc. What good does it do for the general public, is a moot question. For, the public pays for service, not of having persons to respect, and bow to. The more terrible is the title, the

more terrible is the behaviour of low grade bureaucrats who don these titles.

अब पुलिस को देखते हैं। पुलिसवाले लोग बहुत अच्छी खूबी वाले और अंग्रेज़ी जानने वाले होने चाहियें। क्योंकि उन्हें आपातकालीन समस्याओं से लड़ने के लिये बहुत बड़ी ज़िम्मेदारियाँ और ताक़त की ज़रूरत होती है। नहीं तो आम आदमी को तकलीफ़ होगी। भारत में पुलिस कांस्टेबल को सिपाही या चपरासी का दर्जा दिया जाता है। जिस तरह के लोगों को कांस्टेबल बनाया जाता है , वो भी उसी दिमागी स्तर के होते हैं। उनसे उनके वरिष्ठ अधिकारी ऐसे ही बात करते हैं। और येही लोग आम लोगों से मिलते हैं और उनसे सवाल जवाब करते हैं। आम आदमी की दयनीय स्थिति के बारे में सोचिये, जिसे ये सिपाही दर्जे के कांस्टेबल तू तड़ाक करके बात करते हैं।

Now let us see the Police. Policemen and women should be persons of very good quality and English knowledge. For they are to possess very great responsibilities and powers to deal in emergencies. Otherwise it the common man who is going to suffer. The police constable now in India is actually designated as a 'sipai' or peon. The type of persons who are taken as constables are also of this mental grade. They are treated in this level by their senior officials. Yet, these are the very persons who are to question and interact with the common man. Imagine the plight of the common man in India, when he is communicated to as 'Thoo', 'USS, by the 'sipai' level police constable.

वरिष्ठ पालिक अधिकारी भी कांस्टेबल को इन्हीं शब्दों से संबोधित करते हैं। येही परवरिश ऊपर से नीचे तक आकार आम आदमी तक पहुँचती

है। आज के समय में, भारत में एक आम आदमी का ओहदा , एक सिपाही दर्जे के पुलिस कांस्टेबल से कहीं नीचे है। अगर यही वो आज़ादी है जिस पर भारतीय हक़ जमाते हैं, तो ये बहोत दयनीय आज़ादी है।

The senior police officials also address the constable with these words. This conditioning is continued down to reach the treatment met out to the common man. In fact, the present-day standard of the common Indian is much below that of the 'sipai' level police constable. If this is the so-called freedom claimed by Indians, then it is a very pitiable level of freedom.

पुलिस से जिस भी काम में व्यवहार होता है, वो गिर चुका है। पुलिसवाले आम आदमी से सिर्फ़ तू तड़ाक करके ही बात करते हैं। तो सोचिये उन लोगों का दर्जा जो इस तरह स बात करने से ही काम कर पाते हैं। किसी भी आत्म सम्मान वाले इंसान के लिये एक गाडी चालाक की नौकरी करना बहोत मुश्किल है। सिर्फ़ वो लोग जो नीचले दर्जे के शब्दों को सह सकते हैं, ऐसे काम कर सकते हैं। गाडी एक ऐसा ताक़तवर यन्त्र है जिसे चलाने के लिये एक स्थिर इंसान की ज़रूरत होती है जो इससे व्यस्त सड़कों और मुश्किल ट्राफिक परिकल्पनाओं में से निकाल सके।

Every job that has to interact with the police has been degraded. The policemen can only address a common person with a 'Thoo' and refer to him with a 'USS'. Imagine the quality of persons who can then function at this level of communication. It is very difficult for any man with some level of self-respect to work as a commercial driver. Only persons who can bear and like the lower level words can exist in these professions. Automobiles are

powerful machines that require undisturbed persons to manoeuvre them through the busy roads and complex traffic designs and requirements.

किसी भी पुलिसकर्मी को इस देश के नागरिक पर हाथ उठाने का अधिकार ना तो इस देश का संविधान देता है और ना ही कोई क़ानून वो ज़बरदस्ती का इस्तेमाल केवल तब कर सकते हैं जब कोई मुजरिम प्रवृत्ति के लोग गिरफ्तार होने में आना कानी कर रहा हो। उन्हें इस देश के नागरिक को मारने का या गाली-गलोच करने का कोई हक़ नहीं है, और नाही तू तड़ाक करके बात करने का। अगर इसकी इजाज़त है, तो ये कहने का कुछ मतलब नहीं है के भारत आज़ाद नागरिकों का एक स्वतंत्र देश है।

No policeman has been given the right to beat any citizen of this nation by the constitution or by any statutory law. They can only use force when anyone with criminal intentions is resisting arrest. They have no right to beat or to use abusive words, or for that matter such degrading words like 'Thoo' etc. to a citizen of this nation. If this is allowable, then there is no meaning in claiming that India is a free nation of persons with individuality.

यहाँ ये समझने की ज़रूरत है की पुलिसकर्मी लोगों को इसलिए मारते पीटते हैं क्यूंकि उनमें ऊंचे दर्जे की बात चीत करने की क्षमता नहीं होती। सो सवाल ये है के पुलिसकर्मी कैसे उन नागरिकों से अंग्रेज़ी में बात कर सकते हैं जिन्हें खुद ही अंग्रेज़ी नहीं आती। ये हमें भारत के शिक्षण गन के सबसे अद्भुत बात पे लाता है। ये खोखले विशेषज्ञ चाहते थे के केवल उनके बच्चों को अंग्रेज़ी सीखनी चाहिए। ये

उनके छोटे दिमाग वाले हित में था के आम आदमी के बच्चों को अंग्रेज़ी ना आये। काफी महत्वपूर्ण भारतीयों की इसीमानसिकता के कारण वो दूसरे भारतीयों से काफी चीज़ें बाँट नहीं सकते। उन्हें डर था के अगर दूसरे भारतीयों को अंग्रेज़ी आ जायेगी तो उनके बच्चों को जो इज्जत उन बच्चों से मिलती थी, वो बंद हो जायेगी। अभी भारत के केवल ५ प्रतिशत लोगों को अंग्रेज़ी आती है।

What has to be understood is that the policemen beat and use abusive manners just because they are not having the calibre to use higher level of interaction and techniques of investigation. Then the natural question comes of how they can interact in English with the citizens here, when the citizens themselves do not know English. This brings us to a most interesting fact about Indian Educators. These so-called shallow experts were very keen that only their children should learn English. It was in their narrow interest to see that the children of the common Indian do not get access to proper English. This very mentality is a common feature of many prominent Indians, who do not want to share any advantage they have with other Indians. What they fear is that if the other Indians are allowed to learn English, they and their children would naturally lose the respect that they were claiming from other Indians. This very negative mentality itself has brought many curses on our nation. Now only 5% of the Indian population know English.

सबसे पहली ज़रूरत ये है, के आम आदमी को अच्छी अंग्रेज़ी सीखने का मौका मिलना चाहिए। नाकि वो जो अभी सरकारी और निजी विद्यालयों में सिखाई जाती है। फिर उससे खुद तय करने दो के अंग्रेज़ी उसके लिये ठीक है

की नहीं। दूसरे चतुर कमीनों को ये तय करने का अधिकार नहीं देना चाहिए।

What is urgently required is that the common man should be given the opportunity to learn good quality English. Not the one that is now being taught in both government as well as private schools in our nation. Let him then judge for himself if English is good for him or not. Other cunning rascals should not be allowed to take this decision.

भ्रष्टाचार सभी सरकारी दफ्तरों में आम हो गया है। वो तुरंत रोका जाना चाहिए। वरना कुछ सालों में लगभग सारी पूँजी कुछ सेवा निवृत्त सरकारी कर्मचारियों के और उनके बच्चों के हाथ में होगी। इसके साथ ज़मींदारी वाली भाषा क्या असर करेगी ये हम सोच सकते हैं। वो और उनके बच्चे, आम आदमियों और उनके बच्चों से तू तड़ाक करके बात करेंगे। फिर वही अंग्रेज़ों का ज़माना आ जायेगा, जब ज़मींदार ऐसे शब्दों का इस्तेमाल करके अपने से नीचे के तबके के लोगों को दबाते और उनपर राज करते थे। आम आदमी ऊँचे दर्जे के लोगों और इकैत जात के लोगों से बात अकरने में और उल्ट जवाब देने में मुश्किल झेलनी पड़ेगी।

Corruption has become common in all government offices. It needs to be stopped immediately. Otherwise within a matter of few years, almost all wealth will be in the hands of a few government retired persons, and their offspring. The effect of this when combined with a feudal language can be imagined. They and their children will be using the feudal words of 'Thoo' etc. to the common man's children. Then it will be back to pre-British times, when the feudal classes used these words to control and suppress those under them. The common man would

find it increasingly difficult to debate or talk back, or argue with the higher, dacoit classes.

दूसरा मुद्दा:

SECOND ISSUE:

एक और बहुत बड़े दर्जे की बेईमानी इस देश के आम आदमी के साथ हो रही है। जो विदेशी मुद्रा कमानेवालों से जुड़ी है। उनके पैसों को बेइन्तहा बढ़ने की आजादी है। जबकि आम आदमी की कमाई कोई सुरक्षा नहीं दी जाती। स्थानीय आदमी की १००० की राशि हमेशा १००० ही रहेगी, जबकि विदेशी मुद्रा रखने वाले इंसान की राशि २० से १०० गुना बढ़ जाती है। मतलब उसके १०००, २०००० से १००००० में बदल जाते हैं। एक बार सुझाव दिया गया के एक एनोखा आयकर रखा जाए जिससे कुछ लोगों की बिना किसी कारण बढ़ती आय को रोका जा सके। लेकिन, जिन लोगों को उस धोकेबाजी से फायदा होता था, उन्होंने उस आयकर को आने नहीं दिया। इसके कारण काफी उत्तर भारतीय और कुछ दक्षिण भारतीय राज्य काफी गहरी गरीबी में चले गए।

There is another gigantic cheating of the common people going on in this nation. That is connected to foreign currency earners. Their money is allowed to expand astronomically. At the same time, no protection is given to the earnings of the local man. A 1000 value currency of a local man remains 1000. However, the value of a foreign currency holder is allowed to expand to 20 to 100 times. That is, his 1000 become 20000 to 100000 rupees. There was once a proposal to impose super tax to control the illogical expansion of a few persons' wealth to the

skies. However, it was shot down by persons who enjoy the benefits of this fraud. Due to this, many people of many North Indian and some South Indian states have gone into deep penury.

इस देश के लोगों की रक्षा करने के लिये कोई नहीं है। बल्कि वोही लोग जो इस देश को और उसकी जनता को धोखा दे रहे हैं, ये सिखाते हैं के अंग्रेज इस देश को लूटके ले गए। सच तो ये है के वो खुद इस देश को, उसके लोगों को और उसके प्राकृतिक सम्पदा को लूट रहे हैं।

There is actually no one to protect the people of this nation. At the same time, the very people who are cheating the nation and its people, teach the people that it is the British who had robbed the nation. The fact is that it is they themselves who are looting this nation, its people and its natural resources.

तीसरा मुद्दा : भारत की केवल ५ प्रतिशत जनसंख्या अंग्रेजी जानती है। अमीर और राज करने वाले वर्ग नहीं चाहते के नीचले वर्ग के लोग अंग्रेजी सीखें। वो उनसे झूठ बोलते हैं। क्योंकि अगर आम आदमी के बच्चे अंग्रेजी सीख गए, तो उनका मानसिक दर्जा सुधर जायेंगे।

THIRD ISSUE: Only 5% of the Indian population knows English. The ruling and rich classes do not want the lower classes to learn English. They tell them lies. For, if the children of the common man learn English, he and she will improve to higher mental levels.

समाप्त करने से पहले, मैं सिर्फ इतना बता दूँ
के सरकार से हम क्या क्या जिम्मेदारियाँ
चाहते हैं:

Before concluding, let me simply mention the
items of duty expected from our government:

१. हर शहर और गांव में सुलभ सौचालय
बनाये जाये | हर सफाई इंस्पेक्टर को कुछ
शौचालय का ख्याल रखने की जिम्मेदारी सौपी
जाये |

1. Public toilets in all towns and villages.
Each sanitary inspector should be assigned a
particular number of toilets for caretaking.

२. विद्यार्थियों के लिये मुफ्त बस की सेवा
मुहैया करवाई जाये |

2. Free school buses for the students.

३. हर गांव, शहर और महा नगरों में विश्राम
और घर जैसा स्वक्ष भोजन की सुविधा यात्रियों
के लिये | इन सार्वजनिक विश्राम ग्रीहों में
अच्छी सुविधाएं हो, जिनमें सौच के साथ साथ
बढ़िया पीने के पानी का इन्तेजाम हो |

3. Places for relaxing and eating
homemade food for all travellers, in all
villages, towns and cities. These public rest
houses should have good conveniences
including toilets as well as good drinking
water.

जनता के पैसों से चलने वाले अस्पतालों में
ज्यादा सीटें और बिस्तर; बाकी सहूलतों के
साथ |

4. Adequate number of cots and seats in
public funded hospitals; along with other
conveniences.

सरकारी नौकरों का आम जनता की तरफ
बहोत ही सभ्य व्यवहार | जनता की तरफ से
किसी भी फोन का जवाब, सरकारी नौकरों की
तरफ से 'जनाब' या इस तरह के स्त्री वाची
शब्द के इस्तेमाल करके संबोधन होना चाहिए |

5. Extremely courteous behaviour from
the public servants towards the members of
the public. Any phone from the public,
attended by the public servant should be
replied with a 'Sir' or its feminine equivalent.

६. पुलिस का व्यवहार जनता की तरफ पूरी
तरह विनम्रतापूर्ण होना चाहिए | इसके लिये
बहुत सारे पुलिस अधिकारियों को हटाने की भी
आवश्यकता हो सकती है, और अच्छे गुण वाले
लोगों की न्युक्ति हो |

6. Absolute civility from the police
towards the public. This may even require the
dismissal of many police officials currently in
office, and the posting of quality personnel.

७. सरकारी कर्मचारियों द्वारा गलत तरीके से
कमाए हुए घुस के पैसे निकले जाये और
जनता के कोष में जमा कर दिया जाये |

7. Extract out the ill-earned bribery
money from the public servant and add it to
the public coffer.

८. अच्छे स्तर की सड़कें | अच्छे फुटपाथ.
सड़क की बतियाँ.

8. Good quality roads. Good foot paths.
Street lights.

९. बड़े और छोटे शहरों में सही मात्रा में पीने
का पानी और घर जैसे खाने की सुविधा प्रदान
करने वाले जगह बनाये जाये, जहाँ लोग बैठ
और आराम कर सके, बिना किसी मूल्य के |

9. Places with adequate drinking water and home-food eating facility in all towns and cities, where people can sit and relax, free of cost.

१०. हर एक के लिये सामाजिक सुरक्षा; और काफी मात्र में वृद्धाश्रम मुहैया कराया जाये ।

10. Social security for everyone; with adequate number of old age homes.

११. विदेशी कमाई में ज़्यादा कर लगाया जाये ताकि उसे स्थानीय कमाई के बराबरी में लाया जा सके। इस कर का इस्तेमाल आम लोगों के लिये अच्छी और बेहतर सुविधाएं बनाने और देने में हो ।

11. Super tax on foreign income to bring it into parity with local earnings. Use this tax money to improve the quality and conveniences of the common people.

१२. नीची वर्ग के बच्चों और लोगों को अच्छी अंग्रेज़ी सीखने का मौका मिले। ना की सामंती नज़रिए वाली अंग्रेज़ी जो आज भारतीये स्कूलों में सिखाई जाती है ।

12. Opportunity for the lower class children and people to learn good quality English. Not the feudal version of English currently taught in Indian schools.

१३. किसी को भी सरकारी कर्मचारी ना बनाया जाये। और अगर हो तो अधिकतम १५ साल से ज़्यादा सरकारी नौकरी पे पाबन्दी हो ।

13. Disallow anyone to be a government employee for life. A maximum of fifteen years ceiling must be placed on most government jobs.

क्या बंद होना चाहिए ?

What should be stopped?

१. सरकारी कर्मचारियों द्वारा लिया जाने वाले अत्यधिक वेतन और अन्य भत्ते।

1. Huge salaries and other perks being taken by the public servants.

२. सरकारी कर्मचारियों का सामंती व्यवहार।

2. Feudal behaviour of the public servants

३. विशेष वृत्ति लाभ जोकि केवल सरकारी कर्मचारियों के लिये है ।

3. Exclusive pension benefits meant only for the public servants.

विक्टोरिअ इंस्टिट्यूशनस इस देश और सारे नागरिकों में अच्छी गुणवत्ता वाले अंग्रेज़ी के प्रसार के लिये खड़ा है ।

Victoria Institutions stands for the spread of good quality English among all citizens of this nation, and everywhere.

विक्टोरिअ इंस्टिट्यूशनस,

आराधना, देवरकोविल

६७३५०८ केरेला

VICTORIA INSTITUTIONS,

Aaradhana, Deverkovil,

673508 Kerala

eMail: ved036@gmail.com,

adm@victoriainstitutions.com

Web: www.victoriainstitutions.com

VICTORIA INSTITUTIONS

Deverkovil 673508 India

adm@victoriainstitutions.com;

ved036@gmail.com

www.victoriainstitutions.com

Telegram: https://t.me/VI_Home/8

WP (C): 23116/2011 of Hon'ble High Court of Kerala

The Hon'ble Chief Justice of Kerala, on the 25 of August 2011 has admitted a Writ Petition filed by the Administrator, Victoria Institutions, Deverkovil, Calicut district, Kerala with regard to Compulsory learning of Malayalam by all children in Kerala.

Of the three prayers, the Hon'ble Court did not want to go into the first contention that **Malayalam is a feudal language** that can bring in **three levels of citizenship** to the people here.

However the second contention that no person can be compelled to study anything against his or her wishes was admitted.

The third prayer that the State Government of Kerala should be ordered to provide good quality English education for the children from the weaker sections of the society was not discussed during the hearing.

Notices were sent to the Chief Secretary, Kerala Government, and to the Principle Secretary, Education department, in this regard.

Malayalam is a feudal language. It should not be imposed compulsorily on the students and people.

VED from VICTORIA INSTITUTIONS (Pennane, mainly online) has filed a Writ petition in the Honourable High Court of Kerala requesting a Writ of Mandamus ordering the Kerala State Government to stop going ahead with the Compulsory education of Malayalam in all schools of Kerala. He has further requested the Honourable High Court to order the government to form a panel of learned persons to go into the feudal features of Malayalam language, and to study its effects on the people, individuals, public officials, police behaviour, and society as a whole. Beyond that, it is also prayed that the Honourable High Court issue an order to the government to arrange for good quality English education for the children from the poorer classes.

VED from VICTORIA INSTITUTIONS (Pennane, mainly online) ബഹുമാനപ്പെട്ട കേരള ഹൈക്കോടിയൽ, കേരളത്തിലെ സ്കൂളുകളിൽ മലയാള ഭാഷ നിർബന്ധമാക്കുന്ന സർക്കാർ ഓഡർ നടപ്പാക്കരുതെന്ന് കേരള സർക്കാരിന് Writ of Mandamus നൽകണമെന്ന് ആവശ്യപ്പെട്ടുകൊണ്ട്, ഒരു റിട്ട് പെറ്റീഷൻ നൽകിയിട്ടുണ്ട്. മലയാള ഭാഷയിലെ ഫ്യൂഡൽ, ജന്മി കുടിയാൻ സാമൂഹികാന്തരീക്ഷ കോഡുകളെക്കുറിച്ച് പഠിക്കുവാനും, അവ ജനങ്ങളേയും, സർക്കാരുദ്യോഗസ്ഥരേയും, പോലീസ് പെരുമാറ്റത്തേയും, സമൂഹത്തെമുഴുവനേയും, എങ്ങിനെ ബാധിക്കുന്നു എന്ന് പഠിക്കുവാൻ പ്രാപ്തരായ യതാർത്ഥവിവരമുള്ളവരുടെ ഒരു സഘത്തെനിയോഗിക്കാനും സർക്കാരിനോട് നിർദ്ദേശം നൽകുവാനും പെറ്റീഷനിൽ അഭ്യർത്ഥിച്ചു. മാത്രവുമല്ല, ഈ നാട്ടിലെ സാമ്പത്തികമായി പിന്നിൽ നിൽക്കുന്ന വീടുകളിൽ നിന്നും വരുന്ന കുട്ടികൾക്ക് നല്ല നിലവാരമുള്ള ഇങ്ഗ്ലീഷ് പഠിക്കുവാനുള്ള അവസരം ഉണ്ടാക്കിക്കൊടുക്കുവാൻ സർക്കാരിനോട് ആജ്ഞാപിക്കുവാനും, പെറ്റീഷനിൽ സവിനമായി

അഭ്യർത്ഥിച്ചു.

The Writ is based on two Articles of the Constitution of India:

- **Article 14:** Right to equality: Right to equality is not inherent in Malayalam
- **Article 19:** Right to study or not to study. Anyone has the right to learn or not to learn anything. If anything is being imposed on the populace, the authorities concerned should make it clear that there is nothing negative or dangerous in that item.

ഈ റിറ്റ് പെറ്റീഷൻ ഇന്ത്യൻ ഭരണഘടനയിലെ രണ്ട് ആർട്ടിക്കിൾസ്സിനെ പ്രതിപാധിക്കുന്നു

1. **ആർട്ടിക്കിൾ 14:** പൗരന്മാരെ നിയമവും, സർക്കാരും സമരായി കാണാൻ ഉള്ള അവകാശം. മലയാളത്തിൽ ഇത് സാധ്യമല്ല.
2. **ആർട്ടിക്കിൾ 19:** ഒരു കാര്യം പഠിക്കുവാനും, പഠിക്കാതിരിക്കുവാനും ഉള്ള അവകാശം. സർക്കാർ ജനങ്ങളുടെ മേൽ എന്തെങ്കിലും അടിച്ചേൽപ്പിക്കുകയാണെങ്കിൽ അതിൽ നിഷേധാത്മകവും, അപകടകരമായിട്ടുള്ള ഒന്നും തന്നെയില്ല എന്ന് ഉറപ്പ് വരുത്തിയിരിക്കണം.

VED from VICTORIA INSTITUTIONS has brought the attention of the Honourable High Court to the two research papers he had written after a lifelong study on the codes inside languages. He contends that languages are software for communication. But they also have codes encrypted in them with many other features, including that of social design and human personality blueprint.

Malayalam language has codes that can split the social system into two or three different strata of levels. It can create **two or more levels of citizenship** in terms of stature, right to equality before law, right against discrimination and right to non-partisan attitude from the authorities.

His two research papers are available online for free download from: www.victoria.org.in/reality.pdf or from www.victoria.org.in

The names of the Research papers are:

- **MARCH of the EVIL EMPIRES; ENGLISH versus the FEUDAL LANGUAGES**
- **CODES of REALITY! WHAT is LANGUAGE?**

VED from VICTORIA INSTITUTIONS വളരെക്കാലമായി ഭാഷകളിലെ കോഡുകൾ കണ്ടെത്താൻ പഠനം നടത്തി എഴുതിയ രണ്ട് റിസർച്ച് പേപ്പറുകൾ കണ്ടെത്തി ഈ പെറ്റീഷനിൽ സൂചിപ്പിച്ചിട്ടുണ്ട്. ഈ പഠനങ്ങളിൽ ഭാഷ ആശയവിനിമയത്തിനുള്ള ഒരു സോഫ്റ്റ്‌വെയറാണ് എന്ന് പറയുന്നു. എന്നാൽ ഭാഷകളിൽ മറ്റ് പല കോഡുകളും കൂടി ഉൾപ്പെടുന്നു എന്നും പറയുന്നു. അവയിൽ സാമൂഹികഘടനയും, മനുഷ്യവ്യക്തിത്വ രൂപകല്പനയും ഉൾപ്പെടുന്നു.

സമൂഹത്തെ രണ്ടോ, അതിൽക്കൂടുതലോ നിലകളായി സമൂഹത്തെ വേർതിരിക്കുവാനുള്ള കോഡുകൾ മലയാളഭാഷയിൽ ഉണ്ട്. അവ ജന

ങ്ങളെ നിയമത്തിന്റെ മുന്നിൽ പലതട്ടുകളിൽ നിർത്താനും, പല തര വിവേചനത്തിന് അവരെ ഇരയാക്കുവാനും, ഇതിന് കഴിയും.

VED from VICTORIA INSTITUTIONS എഴുതിയ രണ്ട് പ്രബന്ധങ്ങളും ഇൻറർനെറ്റിൽ നിന്നും സൗജന്യമായി ഡൗൺലോഡ് ചെയ്യാവുന്നതാണ്. _____

അവയുടെ പേരുകൾ ഇവയാണ്:

- **March of the evil empires: English verses the feudal language**
- **Codes of reality! What is language?**

പെറ്റിഷണറുടെ നിരീക്ഷണങ്ങൾ:

1. ഭാഷകൾ ആശയവിനിമയത്തിനും, മറ്റ് പലകാര്യങ്ങൾക്കുമുള്ള സോഫ്റ്റ്‌വെയറുകളാണ്. ഇവയിൽ സാമൂഹികഘടനയും, കോഡ് ചെയ്തിരിക്കുന്നു.

1. Language is a software for communication and many other things. This software has social designs encrypted in it.

2. മലയാള ഭാഷയിൽ ഫ്യൂഡൽ (ജന്മി-കുടിയാൻ) സാമൂഹികാന്തരീക്ഷത്തിന്റെ ഡിസൈൻ കോഡുകൾ ഉണ്ട്.

2. Malayalam has **feudal (Janmi-Kudiyaan suppressive social relationship)** social design in it.

3. മനുഷ്യരുടെ ഇടയിൽ വികടനവും, പലതരം ആപൽക്കരമായ മാനസിക ഭാവങ്ങൾ ഉളവാക്കാൻ പ്രാപ്തമായ, സമ്പ്രദായനയിലും, സൂചിപ്പിക്കലിലും പല നിലവാരങ്ങളെ സൂചിപ്പിക്കുന്ന വാക്കുകളുടെ ഒരു നിരതന്നെ മലയാളത്തിൽ ഉണ്ട്. ചെറിയ ഒരു ഉദാഹരണം: (നീ, നിങ്ങൾ, താങ്കൾ, സാർ) (അവൻ, ഓൻ, അവൾ, ഓൾ, അവറുകൾ, അയാൾ, അദ്ദേഹം, അവർ)

3. Malayalam has an array of words of addressing and referring to, which can bring in division and many mental complexes in human beings and society. A minor example: (Nee, Ningal, Thangal, Sar) (Avan, Aval, Avattakal, Ayaal, Adheham, Avar, Sar).

4. ഈ വാക്കുകളുടെ ആഗാധം ഏൽക്കുന്നവരിലും, ആ സംസാരം കാണുന്നവരിലും, അവ കേൾക്കുന്നവരിലും, അവയാൽ ആശ്ലേഷിക്കപ്പെടുന്നവരിലും, സമൂഹത്തിൽ മഴുവനിലും, ഈ വാക്കുകൾ വ്യത്യസ്തപരമായ സാമൂഹികവും, മാനസികവും, വ്യക്തിബന്ധപരവുമായ വ്യതിയാനങ്ങൾ വരുത്തുന്നു.

4. These words have different social, mental and relationship effects on the **effected persons, persons who see or hear the conversation** and on the **total society** as a whole.

5. ഈ രീതിയിൽ നോക്കുമ്പോൾ മലയാളവും, മറ്റ് ഇന്ത്യൻ ഭാഷകളും, ഇങ്ഗ്ലീഷിൽ നിന്നും തികച്ചും വ്യത്യസ്തമാണ്.

5. In this sense, Malayalam and many other Indian languages are entirely different from English.

6. വില കുറയ്ക്കുന്നതും, നിലവാരത്തിന് ഹാനിവരുത്തുന്നതും, അപമാനഹേതുവാ യേക്കാവുന്നതുമായ വാക്കുകൾ പ്രായം കുറഞ്ഞവർ, സാമ്പത്തികമായി ശേഷിക്കു റവുള്ളവർ, നിലവാരം കുറഞ്ഞതൊഴിലിൽ ഏർപ്പെടുന്നവർ എന്നിങ്ങനെ കരുതപ്പെടുന്നവരുടെ നേരെ ഉപയോഗിക്കുന്നു.

6. Pejorative words of addressing and referring to are used towards persons who are perceived as lower placed by age, financial acumen, professional standards and much else.

7. ഉയർന്നവർ എന്നുകാണപ്പെടുന്നവരെയും, കരുതപ്പെടുന്നവരെയും, അമിതമായി ബഹുമാനിക്കുന്നതും, ആശ്ലേഷിക്കുന്നതുമായ വാക്കുകളാൽ വിശേഷിപ്പിക്കുന്നു.

7. Ennobling words and usages are reserved for those seen as or defined as superior persons.

8. നിയമത്തിന്റെ മുന്നിലും, ഈ തരം വ്യത്യസ്തമായ നിർവചനങ്ങൾ മനുഷ്യരിൽ വരുന്നു. എന്നുവെച്ചാൽ നിയമവും, ഭരണഘടനയും തന്നെ, വ്യത്യസ്ത മനുഷ്യരെ മലയാളത്തിൽ സമരായി കാണാൻ വിഷമിക്കും.

8. This can create the issue of inequality before the law.

9. ഭരണ സംവിധാനവും, ഉദ്യോഗസ്ഥവർഗവും, വ്യത്യസ്തമനുഷ്യരെ വ്യത്യസ്ത രീതിയിൽ കാണുകയും, അവരോട് വ്യത്യസ്ത രീതിയിൽ പെരുമാറുകയും ചെയ്യുന്നു.

9. This can lead to different manners in which the administrative set-up deals with different persons.

10. പോലീസിന്റെ ഭീകരരൂപത്തിന് ഒരു പ്രധാനകാരണം, ഭാഷയിലെ ഈ നീചത്വമാണ്.

10. This is one of the major reasons for the brutal behaviour of the police.

11. നിശേഷാത്മകമായി ബാധിക്കപ്പെട്ട വ്യക്തികളിൽ വ്യക്തിത്വ വികസനത്തിൽ ഹാനികരമായ ഇഫക്റ്റുകൾ ഇത് സൃഷ്ടിച്ചേക്കാം. ഈ നിഷേധാത്മകതയിൽ നിന്നും രക്ഷ നേടാൻ അവരെ അമിതമായി പ്രതികരിക്കാനും, അല്ലെങ്കിൽ അനാവശ്യമായ അതിസാമർത്ഥ്യം കാണിക്കാനും ഇത് പ്രേരിപ്പിക്കും.

11. This can create personality depreciation in the negatively affected persons. They may feel compelled to overact or act over smart to tide over the feelings of inferiority complex that sets in.

12. വാക്കുകളുടെ ഉയർന്ന നിലവാരങ്ങളിൽ നിലകൊള്ളുന്ന ആളുകളിൽ അമിതമായി പത്യബോധവും, അഹങ്കാരവും, ഇതു സൃഷ്ടിച്ചേക്കാം.

12. This can create excessive feelings of domination and superiority in persons who are placed on the higher strata of the words.

13. വിലകുറയ്ക്കുന്ന വാക്കുകളാൽ നിർവചിക്കപ്പെട്ടും, വിശേഷിക്കപ്പെട്ടും, പല നല്ല തൊഴിലുകളും, വഷളാക്കപ്പെടുന്നു.

13. This can despoil many good professions, jobs and persons by being associated with lower grade pejorative words.

14. ഇത് അതികഠിനമായ ചട്ടക്കൂടുകളിൽ മനുഷ്യനെ കുടുക്കുകയോ, അല്ലെങ്കിൽ തീരെ അച്ചടക്കമില്ലാത്ത ഒരന്തരീക്ഷം സൃഷ്ടിക്കുകയോ ചെയ്യുന്നു. ഇത് പ്രവർത്തനമേഘലകളിലും, സാമൂഹിക സഹവർത്തിത്വത്തിലും, സർക്കാരുദ്യോഗസ്ഥരുടെ കാര്യക്ഷമതയിലും സാരമായി ബാധിക്കുന്നു.

14. This can either lead to over regimentation or lack of discipline in the professional fields and social communication. And also in public administration.

15. നമ്മുടെ രാജ്യത്തിലെ വർഗ്ഗീയകലാപങ്ങളിലും, ഇവയുടെ കാര്യമായി പങ്ക് കണ്ട് പിടിക്കാൻ കഴിയും.

15. The main reason for communal strife in our nation can be connected to the feudal content in our languages.

16. താഴ്ന്നതും, സാമൂഹികമായി വിലകുറഞ്ഞതുമായ വാക്കുകളാണ് വിദ്യാർത്ഥികളോട് അധ്യാപകർ ഉപയോഗിക്കുക. കുട്ടികളുടെയും, മറ്റ് വിദ്യാർത്ഥികളുടെയും മാനസികനിലവാരത്തിൽ ഇത് സാരമായി ബാധിക്കുന്നു. ചില വിദ്യാർത്ഥികളിൽ ഇത് ഒരു ഭീബൽസമായ ഒരു സ്വഭാവരൂപീകരണം വരുത്തുന്നു. മറ്റ് ചിലരിൽ ഇത് മാനസിക തളർച്ചയും വരുത്തുന്നു.

16. Pejorative words are used to students by the teachers. It is not conducive to the personality development of all students. It can lead to a diabolic personality development in certain students, and personality depreciation in others.

17. ഉയർന്ന ഉദ്യോഗത്തിലിരിക്കുന്നവർക്കും, സാമ്പത്തികമായി ഉന്നതിയിൽ നില കൊള്ളുന്നവർക്കും ഉദ്യോഗസ്ഥരുമായും, പോലീസുമായും, സ്വതന്ത്രമായി ഇടപെടാൻ ഇത് സൗകര്യം ഉണ്ടാക്കുന്നു. ഭരണസംവിധാനങ്ങളും, പോലീസും, താങ്കളുടെ സ്വകാര്യ സ്വത്താണ് എന്ന ഒരു ധാരണ ഇവരിൽ വളരെ എളുപ്പത്തിൽ ഇത് ഉളവാക്കുന്നു.

17. Persons who belong to the higher echelons of the administration and those who are financially strong and influential would find it easy to communicate with the bureaucracy and the police. This in many ways leads to a feeling in them that both the administrative set-up as well as the police machinery is their private fiefdom for personal use.

18. സാധാരണക്കാരന്റെ വ്യക്തിത്വം ഭാഷയിലെ ഫ്യൂഡലിസത്താൽ വിപരീതമായി ബാധിക്കപ്പെടുന്നു. കാരണം ഔദ്യോഗികസംവിധാനങ്ങളിൽനിന്നും, പോലീസിൽ നിന്നും, അയാൾക്ക് വിലകുറയ്ക്കുന്ന തരത്തിലുള്ള വാക്കുകളും, പ്രയോഗങ്ങളും ലഭിക്കാൻ സാധ്യതയെറെയാണ്.

18. Common man's individuality is inversely affected by the feudalism in the language. For he or she would receive lower class words of addressing and referring to from the administration and police personnel.

19. സാധാരണക്കാരൻ സർക്കാർ വകുപ്പുകളെയും, പോലീസിനേയും എതെങ്കിലും അത്യാവശ്യകാര്യത്തിന് സമീപിക്കുമ്പോൾ തികച്ചും നിസ്സഹകരണമാണ് സാധാരണയായി ലഭിക്കാൻ സാധ്യത,

19. He or she may find the government departments, including the police, non-supportive when he or she has to approach them.

20. ഭാഷയിൽ താഴ്ത്തിവയ്ക്കപ്പെട്ട വ്യക്തികൾക്ക് മാനുത നിലനിർത്തിക്കൊണ്ട് ഉദ്യോഗസ്ഥരുമായും, പോലീസുമായും, വാദിക്കാനോ, ചർച്ചചെയ്യാനോ, കാര്യങ്ങൾ പറഞ്ഞ് ഫലിപ്പിക്കാനോ പ്രയാസമാണ്,

20. Lower placed persons may find it difficult to negotiate, argue or debate from a position of dignified stature with the personnel in administrative departments, and other persons who are placed superior to him or her by feudal words.

21. മുഴുവനായി നോക്കുമ്പോൾ മലയാളത്തിലെ ഫ്യൂഡൽഘടന നിയമനീതി നടത്തിപ്പ്, സർക്കാർ വകുപ്പുകളുടെ കാര്യക്ഷമത, ജനങ്ങളുടെ വ്യക്തിത്വം, ജനങ്ങളോടുള്ള പോലീസുകാരുടെ പെരുമാറ്റം, വിദ്യാഭാസനിലവാരം, സാമൂഹിക ആശയവിനിമയം തുടങ്ങിയവയെ എല്ലാം സാരമായി ബാധിക്കുന്നു.

21. From an overall perspective, the feudal communication structure in Malayalam can negatively affect: Jurisprudence, Administrative efficiency, Personality development of the people, Police behaviour to the common man, Quality of education, Social communication (which can only move through pre-defined routes of hierarchy and subordination) etc.

22. ജനങ്ങൾക്ക് മലയാള ഫ്യൂഡൽ ഭാവം മനസ്സിലാകുമ്പോൾ, ഈ രാഷ്ട്രത്തോടു തന്നെ വെറുപ്പുതോന്നാൻ കാരണമാകും. തുടർന്ന് എങ്ങിനെയെങ്കിലും ഇങ്ഗ്ലീഷ് രാജ്യങ്ങളിലേക്ക് കടക്കാൻ വെമ്പൽ കൊള്ളും.

22. People would feel repulsion to the nation as soon as they get to understand the negative sides of Malayalam social communication and they would make desperate attempts to migrate to English nations.

23. ഭാഷയുടെ അടിനിലവാരങ്ങളിൽ പെട്ടുപോകുന്ന സാധാരണക്കാരിൽ നിന്നും അകന്ന് നിൽക്കാൻ സർക്കാർ ഉദ്യോഗസ്ഥർ വെമ്പൽകൊള്ളുകയും, അതിനായി, പണമുണ്ടാക്കാൻ അഴിമതി മാർഗ്ഗങ്ങൾ സ്വീകരിക്കുകയും ചെയ്യും.

23. In their haste to reach move away from the people kept on the lower side of the feudal words, the public servants would go in for corrupt means to make money.

24. ഇങ്ഗ്ലീഷിന് സർക്കാർ-തൊഴിൽ, ഡോക്ടർ, എൻജിനീയർ, ടീച്ചർ തുടങ്ങിയ തൊഴിലുകൾക്ക് മാത്രമല്ല മാനുതൽക്കാൻ കഴിയുക. മറിച്ച് ഒട്ടെല്ലാ തൊഴിലുകളെയും ഇങ്ഗ്ലീഷ് മാനുതപ്പെടുത്തുന്നു.

24. English can bring in dignity to many professions other than only to government jobs, doctoring, engineering, teaching and such.

25. ഇക്കാരണത്താൽ തന്നെ മലയാളത്തിലുള്ള വിദ്യാഭാസം വിവേചനം വളർത്തുന്നതാണ്.

25. An education system based on feudal vernacular languages does necessarily degrade a lot of professions, while it ennobles a few others. Thus it is discriminatory.

26. സാധാരണക്കാരന്റെ മക്കൾ സ്കൂളിൽ തങ്ങളുടെ അച്ഛനമ്മമാർ അവനും, അയാളും, അവളും, മറ്റുമായി വിശേഷിപ്പിക്കപ്പെടുമ്പോൾ, ഡോക്ടറായും, സർക്കാരുദ്യോഗസ്ഥരായും, ടീച്ചർമാരായും മറ്റും അദ്ദേഹം, അവർ, മാഷ്, സാർ തുടങ്ങിയ രീതിയിൽ വിശേഷിപ്പിക്കുന്നതായിക്കാണുന്നു. ഇത് അവരിൽ അവരവരുടെ മാതാപിതാക്കളുടെ നിസ്സാരതയെപ്പറ്റി മനസ്സിൽ ഉറപ്പിക്കുന്നു. ഇങ്ങനെ വിവേചന പരമായ ഒരു വിദ്യാഭാസത്തിൽ സാധാരണക്കാരന്റെ കുട്ടികളെ നിർബന്ധിച്ച് ചേർക്കുന്നത് കുറ്റമായിത്തന്നെ കാണണം.

26. A child of a common man who gets naturally indoctrinated thus by the feudal vernacular shall sense his father's and mother's profession to be low-grade, for he or she would see the doctors, engineers, government employees, teachers etc. being given higher grade words and usages.

27. നല്ലനിലവാരമുള്ള ഇങ്ഗ്ലീഷ് പഠിപ്പിക്കാത്ത വിദ്യാഭ്യാസം, നല്ല വിദ്യാഭ്യാസമല്ല.

27. Education that is devoid of good English is not good education.

28. പ്രൈമറി വിദ്യാഭ്യാസത്തെ ടെക്നിക്കൽ വിവരത്തിൽ നിന്നും വേർതിരിച്ച് കാണേണ്ടതാണ്. ആശാരിപ്പണി, സോഫ്റ്റ്‌വെയർ എൻജിനീയറിങ്, മെഡിക്കൽ വിദ്യാഭ്യാസം, ഗണിതം, ഊജതൻത്രം തുടങ്ങിയവ ടെക്നിക്കൽ വിവരമാണ്.

28. Primary education should be differentiated from technical knowledge. Technical knowledge would include such things as Carpentry, Software Engineering, Medical profession, Mathematics, Physics etc.

29. വെറും നല്ല നിലവാരമുള്ള ഇങ്ഗ്ലീഷ് അറിവ് തന്നെ മഹത്തായ വിദ്യാഭ്യാസമാണ്. അതിനോട് ഫ്യൂഡൽ ഭാഷകളെ താരതമ്യപ്പെടുത്താൻ പറ്റില്ല.

29. Good knowledge in English is by itself a grand education that cannot be competed with by feudal vernaculars.

30. സ്വാതന്ത്രത്തിന് ശേഷം ഇന്ത്യൻ പൗരത്വത്തിലേക്ക് ചേർത്ത ആദിവാസികൾ പോലുള്ള പല ജനസമൂഹങ്ങളും, നമ്മുടെ ഭാഷയുടെ അടിനിലവാരങ്ങളിൽ പെട്ട് മാനസികമായും, സാമൂഹികമായും തകർന്നുപോയി. കാടുകളിൽ സ്വതന്ത്രരായി ജീവിച്ചിരുന്ന പല ആദിവാസികളുടെ മൂപ്പന്മാരെപ്പോലും, പോലീസുശൃംഖലയുള്ള സർക്കാർ വകുപ്പുകളുടെ ശിപായിമാർപോലും, നീ, അവൻ, അവൾ, എടാ, എടീ, തുങ്ങിയ മാനുതകർക്കുന്ന വാക്കുകളാൽ നശിപ്പിച്ചു.

30. Social classes that have been amalgamated into the Indian nation such as the *Adivasis*, have been despoiled, since even their clan chieftains have been degraded by the use of lower grade words by even the government peons and policemen of *shipai* rank, apart from all other officials.

31. ഇങ്ഗ്ലീഷ് അറിയാത്ത അധ്യാപകരും, മറ്റും, *ഇങ്ഗ്ലീഷ് ഒരു വിദേശഭാഷയാണ്, അത് പഠിക്കരുത്* എന്ന് പറഞ്ഞ് വിദ്യാർത്ഥികളെ പഠിക്കും.

31. Teachers who do not have adequate knowledge in English would only send the message to the children that English is a foreign language that should not be studied.

32. കുട്ടികളെയും, അവരുടെ മാതാപിതാക്കളെയും പഠിക്കലാണ് ഇത്.

32. It is in many ways a fooling of the child and his or her parents. Parents spend a lot of money and daily effort to get their children to school, where their children are simply fooled into believing that they are learning a lot, even without learning a bit of English.

33. ഈ നാട്ടിലെ വിദ്യാഭ്യാസവും, വിദ്യാഭ്യാസനയം ഉണ്ടാക്കുന്നവരും തങ്ങളെ പഠിക്കുകയാണ് ചെയ്തതെന്ന് ആർക്കെങ്കിലും വിശ്വാസമുണ്ടെങ്കിൽ, അവർക്ക് നഷ്ടപരിഹാരത്തിന് ആവശ്യപ്പെടാൻ അവകാശമുണ്ട്.

33. Individuals who feel that they have been fooled by current day education and education policy makers have the right to sue the authorities and individuals concerned for depriving them of the right and opportunity to learn good English.

34. വിദ്യാർത്ഥികളെ മലയാളം പഠിപ്പിക്കുമ്പോൾ, ആ ഭാഷയിലൂടെ സംഭവിക്കുന്ന സാമൂഹിക ഉയർച്ചയെയും, തളർച്ചയേയുംപ്പറ്റി അവരെ ബോധവാന്മാരാക്കേണ്ടതാണ്.

34. When children are being taught Malayalam, they or their parents should be informed about the feudal character of Malayalam; and their position *viz-a-viz* that of their teachers and others.

35. കാരണം, ഫ്യൂഡൽ ഭാഷകൾ ഒരു വ്യക്തിയെ നിർവചിക്കാനും, അയാളുടെ മേൽ മേൽക്കോയ്മ ചെലുത്തുവാനും, ബുദ്ധിമുട്ടിക്കാനും, സാമൂഹികമായി ഞരുകാനും മറ്റുള്ളവർക്ക് കഴിവു, അവകാശവും നൽകുന്നു. ഇങ്ങിനെയുള്ള ആക്രമണങ്ങളിൽ നിന്ന് രക്ഷപ്പെടാൻ പലർക്കും കഴിയാറില്ല.

35. For feudal languages extend a diabolic right to others to define, dominate, distract and even socially strangle a person. There is no defence against this attack that can come through words, even in its soft spoken form.

Marxist party had promised in the Left Front Election Manifesto that Malayalam would be imposed on students inside Kerala once they come back to power. This was given in the guise of lending support to the common man. However, there had been another Communist Party in India, the **SUCI**, which has consistently worked for bringing English to the common man. So, it is clear that an anti-English stance is not really a pro-common man stance. Numerous generations of people in West Bengal have grown up devoid of any English knowledge, making them vulnerable to severe suppression and exploitation, lacking skills to compete with the English knowing elite class.

The UDF government that came into power literally followed the people-hoodwinking gimmick of the LDF in this regard.

A few excerpts from **Codes of Reality! What is language?**

- **The hint of the spectrum or array of indicant words**

In Malayalam, You is: *Nee* (lowest), *Ningal* (middle), *Thangal* (highest), *Sar* (highest).

He is: *Avan* (*oan*) (lowest), *Ayaal* (middle), *Adheham* (highest), *Avar* (highest), *Sar* (highest)

She is: *Aval* (*oal*) (lowest), *Avar* (highest), *Sar*, *Madam* etc. (highest).

Depending on the dialect, there can be many other in-between words.

Now to place the idea in very clear perspective, let me use a very silly example:

A person arrives by *bus*: He is *Avan*.

He arrives by *autorickshaw*: He is *Ayaal*.

He arrives by *car*: He is *avar*.

This is a basic idea, but then many other inputs like a person's dressing standards, his looks of prosperity and otherwise, he coming with an adjutant or not, and many other frill elements can also interfere with the wordings. But the basic philosophy of the indicant word selection is based on such a type of evaluation.

The idea can be dealt again like this:

A man with two coconut trees is an *Avan* (lowest he), when introduced. A

man with a hundred coconut trees is an *Ayaal* (middle he), when introduced. A man with a thousand coconut trees is an *Avar* (highest he). This typical type of introductions was common many years back, when village folks introduced a person as per his financial acumen.

Another illustration:

A man approaches a police station for any service. He says that he is a close relative of the District Superintendant of Police (SP). The words of address by the police Sub Inspector would be '*Sar*' (*higher word for You, He etc.*) Tea and a bite are immediately offered.

Instead, he says that he is something like a teacher or a social somebody, the addressing can be more or less *Ningal*. Tea and bite may not be on offer, but a seat might be offered.

If instead of this, the man says that he is something like a casual worker, taxi driver or some such thing, the words of address can very fast go down to *Nee* (*lowest You*). If he has entered without any patron to support him, and he is insistent in his demands, abusive words can be expected. Once the addressing turns to *Nee*, even a slap or a snapping word, are really imminent.

- **A sample of the power within**

A man is being beaten up by a small group of people for some alleged misdemeanour. A commonly respected person arrives on the scene. He says: 'Why are you beating him?'

What happens? It depends. If the word used for 'him' is *avan*, nothing much is gained. For the beating may continue. If the word for 'him' is *ayaal*, then the beating may subside slowly. However, if the respected person is saying '*Adheham*' or '*Avar*', then the beating would immediately stop, and the mob would go into a pose of obsequious apology.

This silly sample incident is given here to simply give an idea of the different social meaning each word has.

Reply Affidavit filed to counter the State Government of Kerala's arguments

1. The contention that the request for the government to arrange for good quality English education for the children from the financially weaker classes is frivolous and has no merit means that the government is not taking up its objective of being a **welfare state** seriously. For, the weaker sections desperately need governmental intervention to learn good English, which is being cunningly denied to them.

1. സാമ്പത്തികമായി പിന്നോട്ട് നിൽക്കുന്ന വിദ്യാർത്ഥികൾക്ക് നല്ലനിലവാരമുള്ള ഇംഗ്ലീഷ് പഠനത്തിനുള്ള അവസരം ഉണ്ടാക്കിക്കൊടുക്കണമെന്ന പെറ്റീഷണറുടെ അപേക്ഷ തികച്ചും നിസ്സാരവും പരിഹാസ്യവുമാണെന്ന സർക്കാർപക്ഷത്തിന്റെ വാദത്തിന്റെ അർത്ഥം, സർക്കാർ ഇവിടെ ഒരു **welfare state** ഉണ്ടാക്കാൻ ഉള്ള കർത്തവ്യത്തിൽ നിന്നും മാറിനിൽക്കുന്നുവെന്നാണ്. കാരണം, സാമ്പത്തികമായി പിന്നോക്കം നിൽക്കുന്നവരുടെ മക്കൾക്ക് ഇംഗ്ലീഷ് വിദ്യാഭ്യാസം വളരെ കുറുത് ബുദ്ധിയോടെ നിഷേധിക്കപ്പെടുകയാണ്. അവരെ ഈ കെണിയിൽ നിന്നും രക്ഷിക്കാൻ സർക്കാർ യഥാർത്ഥത്തിൽ ഇടപെടേണ്ടതാണ്.

2. The petitioner has not attempted to denigrate Malayalam. He has only spelled out that there are certain features in Malayalam that can design social relationship in a feudal or hierarchical or '*Janmi-kudiyaan*' relationship manner. For, it is language that connects people. The designs in a language create a social system based on that design. Pointing out a visible feature about a language is not denigration, but only what can be defined as *scientific observation*. It indicates

a sense of intolerance that a person cannot make scientific observation about a language.

2. പെറ്റീഷനർ മലയാളത്തെ അപമാനിക്കാൻ ശ്രമിച്ചിട്ടില്ല. മലയാളത്തിലുള്ള ജന്മി-കുഡിയാൻ, ഉച്ഛ-നീചത്വ, ഫ്യൂഡൽ കോഡുകളെക്കുറിച്ച് പറയുകമാത്രമാണ് ചെയ്തത്. ഭാഷയാണ് മനുഷ്യരെ കോർത്തിണക്കുന്നത്. ഭാഷയിലുള്ള ഡിസ്ക്രൈനുകൾ അനുനയിച്ചായിരിക്കും ഒരു സമൂഹം രൂപപ്പെടുക. കാണാൻ പറ്റുന്ന ഒരു കാര്യം പറയുന്നത് അപമാനിക്കലല്ല. അത് ഒരു ശാസ്ത്രീയ നിരീക്ഷണം മാത്രമാണ്. ഒരാൾക്ക് അങ്ങനെ ഒരു നിരീക്ഷണം നടത്താൻ അനുവദിക്കാത്തത് അസഹിഷ്ണുത മാത്രമാണ്.

3. The contention that there is no merit in the argument that Malayalam does discriminate on the basis of financial acumen, social status, age, professional levels, and connections to bureaucratic higher-up persons, is a lie. The government officials concerned are not allowing themselves to examine the contentions of the petitioner. For, they belong to the higher levels of the feudal language and do not want to give up their advantages in this regard. The respondent has not given any hint that he or any other government official concerned has even cursorily gone through the findings in this regard of the petitioner. So the contention that they are frivolous becomes just a mere prejudiced personal opinion of the respondent. And not a considered view.

3. മലയാളം, സാമ്പത്തിക നിലവാരം, സാമൂഹികപദവി, വയസ്സ്, തൊഴിൽനിലവാരം, ഉദ്യോഗസ്ഥരുമായിട്ടുള്ള അടുപ്പം മുതലായ കാര്യങ്ങളുടെ അടിസ്ഥാനത്തിൽ വിവേചനം കാണിക്കാറില്ല എന്നു പറയുന്നത് കളവ് മാത്രമാണ്. ഈ ഹരജിക്ക് മറുപടി നൽകുന്ന ഉദ്യോഗസ്ഥർ

ഈ ഹരജിക്കാരന്റെ വാദങ്ങളെ വേണ്ടവിധം പരിശോധനയ്ക്ക് വിധേയമാക്കുന്നില്ല എന്നതാണ് ഇതിനർത്ഥം. കാരണം, ഫ്യൂഡൽ ഭാഷയുടെ ഉന്നതങ്ങളിൽ വിലസുന്നവരാണവർ. ആ പദവികൾ നഷ്ടമാകുന്നത് അവർക്കിഷ്ടമല്ല. അവർ ഈ ഹരജിക്കാരന്റെ റിസർച്ച് നീരിക്ഷണങ്ങളെ തെല്ലെങ്കിലും പഠനത്തിന് വിധേയമാക്കിയതായി എവിടേയും പറയുന്നില്ല. അതിനാൽ തന്നെ ഇവയെല്ലാം വെറും നിസ്സാരകാര്യങ്ങളാണെന്ന അവരുടെ വാദം, വെറും മുൻവിധികൾ മാത്രമാകുന്നു. പഠിച്ചും, ചിന്തിച്ചും ഉള്ള അഭിപ്രയങ്ങളല്ല.

4. In English nations, even a slightly hurting or disparaging word is pointed out as hurtful and the speaker asked to refrain. Even such words as *nigger* etc. have been statutorily banned. However, in Kerala there is no way to limit or control negative and disparaging, pejorative words used by the officialdom, teachers, social seniors etc. The government should necessarily see that such discriminatory words are pointed out as impolite. The government is shutting its eyes on this issue which really bring in despoilment to a great percentage of the people here. It is acting as per the wishes of certain vested interests.

4. ഇങ്ഗ്ലീഷ് രാഷ്ട്രങ്ങളിൽ നിസ്സാരമായി വേദനിപ്പിക്കുന്നതോ, അപമാനിക്കുന്ന വാക്കുകളോ പറഞ്ഞാൽ, അവ വേദനാജനകമാണെന്ന് ചൂണ്ടിക്കാട്ടപ്പെടുന്നു. എന്നാൽ കേരളത്തിൽ നിഷേധാത്മകവും, അപമാനകരവുമായ, തരംതാഴ്ത്തുന്ന വാക്കുകൾ സർക്കാർ ഉദ്യോഗസ്ഥർ, അധ്യാപകർ, സമൂഹത്തിലെ ഉന്നതർ, തുടങ്ങിയവർ ഉപയോഗിച്ചാൽ, അവയെ തടയാൻ യാതൊരു മാർഗ്ഗവുമില്ല. ഇങ്ങിനെയുള്ള വാക്കുകൾ അപമാന്യാദപരമാണെന്ന് അറിയിക്കാനെങ്കിലുമുള്ള കർത്തവ്യം സർക്കാരിനുണ്ട്. ഈ നാട്ടിലെ വലിയൊരു വിഭാഗം ജനങ്ങളെ

മലിനപ്പെടുത്തുന്ന ഈ പ്രശ്നത്തിനോട് സർക്കാർ കണ്ണടക്കുകയാണ്. ഏതാനും ചില തത്പരകക്ഷികളുടെ താത്പര്യങ്ങൾക്ക് അനുസൃതമായാണ് സർക്കാർ പ്രവർത്തിക്കുന്നത്.

5. It is true that the impugned order has been superseded by later orders of the government. The later orders insist Malayalam-study till the 10th class, instead of 8th. It is seen that the government has come out with an order (dt. 01-09-2001) after the filing of this petition that is of more intensity in its negative aims of imposing the language, and removing the **right to opt out**. For, all schools that do not come under the Kerala State Education Board are also being brought under its purview.

5. ഇവിടെ ചോദ്യം ചെയ്യപ്പെട്ട സർക്കാർ ഉത്തരവ്, അതിന് ശേഷം വന്ന പല ഉത്തരവുകളാലും, പിൻത്തള്ളപ്പെട്ടിട്ടുണ്ട് എന്നത് ശരിയാണ്. ആ ഉത്തരവിന് ശേഷം പുറപ്പെടുവിച്ച ഉത്തരവുകൾ പ്രകാരം, 8ാം ക്ലാസിന് പകരം, 10ാം ക്ലാസുവരെ മലയാളം പഠിക്കാൻ നിർബന്ധിക്കുന്നവായാണ് ഈ പുതിയ ഉത്തരവുകൾ. ഈ റിറ്റ് ഹരജി ഫയൽ ചെയ്തതിന് ശേഷം വന്ന ഉത്തരവ് വളരെയേറെ നിഷേധാത്മകവും, മലയാള ഭാഷ അടിച്ചേൽപ്പിക്കുന്നതിൽനിന്ന് ഒരാൾക്ക് ഒഴിഞ്ഞ് നിൽക്കാനുള്ള അവകാശം നിഷേധിക്കുന്നതുമാണ്. കാരണം, കേരള സംസ്ഥാന വിദ്യാഭ്യാസ ബോർഡിന്റെ കീഴിൽ വരാത്തതുമായ സ്കൂളുകളുടെ മുകളിൽ പോലും, മലയാളം അടിച്ചേൽപ്പിക്കുന്നു.

6. It is seen that in this regard it is aiming for punitive measure to ensure its objectives in the case of schools under the Central Education Boards by withholding NOC, if there is non-compliance by such Schools. In all sense, the State Government is being draconian in its attitude. What is on display is intense parochial linguistic fanaticism.

6. ഈ ഉത്തരവ് അനുസരിക്കാത്ത Central Education Board സ്കൂളുകളുടെ NOC പിൻവലിക്കാൻ സർക്കാർ നടപടിയെടുക്കും എന്ന ഭീഷണി ഇതിൽ അടങ്ങിയിരിക്കുന്നു. എല്ലാ അർത്ഥത്തിലും, സർക്കാർ ഒരു ഭീകരാന്തരീക്ഷമാണ്, ഇക്കാര്യത്തിൽ കൊണ്ട് വരുന്നത്. വെറും പ്രാദേശിക ഭാഷാ ഭ്രാന്തിന്റെ ഉദാഹരണം മാത്രമാണ് ഇത്.

7. It is seen that there is discrimination with regard to Kerala-born or Kerala-family linked students who are studying abroad. They do not come under the purview of these orders and can continue studying Special English, instead of Malayalam. For, it is sure that if Malayalam is insisted upon, many students will move out of those schools, and go in for other local education boards available there. For, students out there can opt for Cambridge University Certificate Course, join International Baccalaureate Certification or opt for other education boards available in those nations. While students who live here in Kerala would not get this option, if Malayalam is insisted upon. Or else, these international certificates also will have to bear the encumbrance of Malayalam. It is seen that only people who are rich can opt out of the strangle hold of language fanaticism here. The common man who is not rich falls prey to their nefarious schemes.

7. ഈ സർക്കാർ ഉത്തരവിൽത്തന്നെ ചില വിവേചനങ്ങൾ ദൃശ്യമാണ്. വിദേശത്ത്, കേരളാ സ്കൂളുകളിൽ പഠിക്കുന്ന കേരളീയരായ വിദ്യാർത്ഥികൾ ഈ ഉത്തരവിന്റെ പരിധിയിൽ വരുന്നില്ല. കാരണം വ്യക്തമാണ്. മാലയാളം അവരിൽ അടിച്ചേൽപ്പിച്ചാൽ ഈ വിദ്യാർത്ഥികൾ കേരളാസ്കൂളുകളിൽനിന്നും മാറി, മറ്റു സ്കൂളുകളിലേക്ക് പോകും. കാരണം, അവിടങ്ങളിലുള്ള വിദ്യാർത്ഥികൾക്ക് Cambridge University

Certificate Course, International Baccalaureate Certification തുടങ്ങിയവയിലേക്ക് വളരെ എളുപ്പത്തിൽ മാറാൻ കഴിയും. അതേസമയം, കേരളത്തിനുള്ളിൽ പെട്ടുപോയവർ ഈ ഉത്തരവിന്റെ വിനാശത്തിൽ പെട്ടുപോയതുതന്നെ. ഇവിടെയുള്ള പണക്കാരുടെ കുട്ടികൾക്ക് മാത്രമെ ഈ ഭാഷാഭാഗത്തിന്റെ പിടിയിൽ നിന്നും രക്ഷനേടാൻ കഴിയൂ. സാധാരണക്കാരനും, അയാളുടെ കുട്ടികളും അതിന് അടിമപ്പെട്ടത് തന്നെ.

8. Mr. Suresan A R, Under Secretary to the Govt of Kerala, General Education department is speaking about the glorious culture and traditions of Kerala. It is seen that the culture and traditions of Kerala seen in retrospective now are not the real culture and traditions of Kerala. For, Kerala was born of an amalgamation of at least two totally different areas, the Malabar and the Travancore-Cochin areas. Many of the traditions of the different areas were quite different from each other. Beyond all that Malabar bureaucracy was first a creation of the British, with many feudal ingredients removed by the English in the bureaucratic communication. In Travancore this was different and the bureaucratic culture there was modelled on the feudal monarchical system there. However, current day Kerala bureaucracy follows the Travancore systems and is quite feudal.

8. ശ്രീ. സുരേഷൻ എ ആ, കേരള സർക്കാർ അണ്ടർ സെക്രട്ടറി, പൊതുവിദ്യാഭ്യാസ വകുപ്പ്, കേരളത്തിന്റെ മഹനീയമായ സംസ്കാരത്തെക്കുറിച്ചും, പാരമ്പര്യത്തെക്കുറിച്ചും പ്രതിപാദിക്കുന്നു. എന്നാൽ ഇന്ന് തിരിഞ്ഞ് നോക്കുമ്പോൾ കാണുന്നതല്ല കേരളത്തിന്റെ യഥാർത്ഥ പാരമ്പര്യവും, സംസ്കാരവും. ഇന്ന് കേരളം എന്ന് പറയപ്പെടുന്ന സ്ഥലം തന്നെ രണ്ട് വ്യത്യസ്ത സ്ഥലങ്ങളുടെ കൂട്ടിച്ചേരലോടെ രൂപപ്പെട്ടതാണ്: മലബാറും, തിരുവിതാംകൂർ-കൊച്ചിയും. ഈ രണ്ട്

പ്രദേശങ്ങളുടെയും, സംസ്കാരങ്ങളും, പാരമ്പര്യങ്ങളും, പാടെ വ്യത്യസ്തങ്ങളായിരുന്നു. മാത്രവുമല്ല, മലബാർ ഉദ്യോഗസ്ഥവർഗ്ഗം ബ്രിട്ടീഷുകാരുണ്ടാക്കിയതാണ്. അത് ഇങ്ഗ്ലീഷിൽ അടിസ്ഥാനപ്പെടുത്തിട്ടുള്ളതിനാൽ ഔദ്യോഗിക ആശയവിനിമയങ്ങളിൽ മലയാളത്തിലെ ഒട്ടുമിക്ക ഫ്യൂഡലിസവും, ഈ ഉദ്യോഗസ്ഥവർഗ്ഗത്തിന് അതീതമായിരുന്നു. എന്നാൽ തിരുവിതാംകൂർ ഉദ്യോഗസ്ഥവർഗ്ഗം അവിടെ ഉണ്ടായിരുന്ന ഫ്യൂഡൽ സംസ്കാരങ്ങളുടെ സൂഷ്ഠി ആയിരുന്നു. എന്നാൽ ഇന്ന്, കേരളത്തിന്റെ മുഴുവൻ ഉദ്യോഗസ്ഥവർഗ്ഗവും, തിരുവിതാംകൂർ സംവിധാനം പിൻതുടരുന്നു. അത് തികച്ചും ഫ്യൂഡൽ സ്വഭാവം കാണിക്കുന്നു.

9. The original language dialect of Malabar was totally incomprehensible to the southern people. If Malayalam is to be preserved, why was no attempt made to preserve the Malabar dialect? It was also part of the 'glorious culture and traditions' of Malabar. Sentences like: *Onea oriyan njaalu Keechi. Ole theeyanu baratha* etc. cannot be understood by 99.9% people who speak the official version of Malayalam.

9. മലാബാറിലെ യഥാർത്ഥ ഭാഷ തെക്കൻ ജില്ലകളിലെ ആൾക്കാർക്ക് തീരെ മനസ്സിലാക്കാൻ പറ്റാത്തതാണ്. മലയാളം സംരക്ഷിക്കണമെങ്കിൽ, എന്ത് കൊണ്ട് മലാബാറിലെ ഭാഷയെ രക്ഷിക്കാൻ യാതൊരു നടപടിയും എടുത്തില്ല. അതും, മലാബാറിലെ മഹനീയമായ സംസ്കാരത്തിന്റെയും, പാരമ്പര്യത്തിന്റെയും ഭാഗമായിരുന്നു. *ഓനെ ഞാള് ഒരിയാനെ കീള്*, തുടങ്ങിയ മലാബാറിലെ വാക്യങ്ങൾ മലയാളത്തിന്റെ ഔദ്യോഗിക ഭാഷസംസാരിക്കുന്ന 99.9% ആളുകൾക്കും മനസ്സിലാകില്ല.

10. Apart from this, there was a *Mappila* (Malabar Muslim) Malayalam also in prevalence here. This has also more

or less vanished in the face of the onslaught of the so-called official version of Malayalam, which is more or less Kottayam based Malayalam. The so-called passionate attempt to preserve Malayalam is, on close examination, only an attempt to propagate the Kottayam based Malayalam. I do not want to attack that aim. However, it needs to be pointed out that propagation is not to be done by compulsion.

10. മാത്രവുമല്ല, മലബാറിൽ ഒരു മാപ്പിള മലയാളം കൂടി ഉണ്ടായിരുന്നു. അതും, ഔദ്യോഗിക ഭാഷയുടെ വേലിയേറ്റത്തിൽ ഒട്ടുമൂക്കാലും അപ്രത്യക്ഷമായിപ്പോയി. ഔദ്യോഗിക മലയാളം കോട്ടയം മലയാളമാണ്. അങ്ങിനെ നോക്കുമ്പോൾ, കോട്ടയം മലയാളത്തിന്റെ പരിപോഷണം മാത്രമാണ്, ഈ മലയാള ഭാഷാ സംരക്ഷണം കൊണ്ട് ഉദ്ദേശിക്കുന്നത്. എന്നിരുന്നാലും, ഈ ലക്ഷ്യത്തെ വിമർശിക്കുവാനോ, ആക്രമിക്കുവാനോ, ഈ ഹരജിക്കാരൻ ഉദ്ദേശിക്കുന്നില്ല. എന്നിരുന്നാലും, എടുത്തുപറയേണ്ടത്, പ്രചാരണം, നിർബന്ധിക്കലിലൂടെയാകരുത്.

11. The issue of many cultural inputs should be discussed in the context of the antiquity of a highly feudal *Janmi-Kudiyan* social set that was there in Kerala. If Kerala traditions have to be re-activated again, then this should be given statutory promotion, which could be very negative in its implications.

11. സാംസാരിക പൈതൃകത്തെക്കുറിച്ച് പറയുമ്പോൾ, കേരളത്തിലുണ്ടായിരുന്ന അതി ഭീകരമായ ജന്മി-കുടിയാൻ സാമൂഹികാന്തരീക്ഷത്തെക്കുറിച്ച് പറയേണ്ടിയിരിക്കുന്നു. കേരളത്തിലെ സാംസ്കാരിക പൈതൃകങ്ങൾ പുനരുജ്ജീവിപ്പിക്കുമ്പോൾ ഈ ഫ്യൂഡൽ സമ്പ്രദായങ്ങളും, തിരിച്ച് കൊണ്ടുവരേണ്ടതായിവരും. അങ്ങിനെയുള്ള കാര്യങ്ങൾക്ക് നിയമിത്തിന്റെ പിൻബലം കൂടികിട്ടുകയാണെങ്കിൽ, അത് വളരെ നിഷേധാത്മകമായ ഫലങ്ങൾ ഇവിടെ ഉണ്ടാക്കും.

10. Even *Onam* that is being celebrated as a glorious Kerala tradition actually decries modern Kerala customs. For it speaks of a time when there was no lies, treachery and corruption, and the society was quite egalitarian. It is obvious that the period alluded to, is not during the *Malayalam-speaking-times* of Kerala, for no king by name Mahabali is there in recorded historical times. Malayalam started as a language only in the recent past. Moreover, the festival of Onam is actually a reminder that lies, cheating, treachery, and corruption have become the order of the day. The presence of a polite, egalitarian language can help in correcting this social malice.

10. യഥാർത്ഥത്തിൽ കേരളത്തിലെ മഹനീയമായ ഓണം എന്ന വാർഷികാഘോഷം തന്നെ ഇന്നത്തെ കേരളത്തെ വിമർശിക്കുന്ന ഒരാഘോഷമാണ്. സമൂഹത്തിൽ എല്ലാരുടെയും ഒരേ നിലവാരമുണ്ടായിരുന്ന ഒരു കാലത്തെ അയവ്പ്പെടുത്തുന്നതാണ് ഈ ഉത്സവം. അന്ന് കള്ളവില്ല, ചതിവില്ല, അഴിമതിയില്ല. തീർച്ചയായും, ആ കാലഘട്ടം കേരളത്തിൽ ആളുകൾ മലയാളം സംസാരിക്കുന്ന കാലമായിരുന്നില്ല. കാരണം മഹാബലിയെന്ന പേരിൽ ഒരു രാജാവിനെക്കുറിച്ച്, ചരിത്രകാലഘട്ടങ്ങളിൽ രേഖപ്പെടുത്തിയിട്ടില്ല. മലയാളം ഭാഷതന്നെ വളരെ അടുത്തകാലഘട്ടത്തിൽ ഉടലെടുത്ത ഒന്നാണ്. എന്നാൽ ഓണം നമ്മെ ഓർമ്മപ്പെടുത്തുന്നത് ഈ അടുത്തകാലങ്ങളിൽ കള്ളവ്, ചതി, പറ്റിക്കൽ, അഴിമതി, തുടങ്ങിയ സാമൂഹികവിപത്തുകൾ കേരളത്തിൽ വന്നിട്ടുണ്ട് എന്നതാണ്. ഇതിൽ നിന്നെല്ലാം രക്ഷപ്പെടാൻ, ഒരു ജനങ്ങളെ എല്ലാവരെയും ഒരു പോലെ കാണുന്ന ഒരു ഭാഷയ്ക്ക്, സഹായിക്കാൻ കഴിയും.

11. The respondent as well as the government of Kerala seems to be using the words '*opportunity*' and '*compulsion*' in

the same sense. The mentioned words are antonyms in all senses. To use the word '*opportunity*' as a synonym of '*compulsion*' and '*imposition*' is a crude sort of deceit on the people. It is in much sense an insult to local human intelligence.

11. കേരള സർക്കാരും, സാർക്കാരിന് വേണ്ടി സംസാരിക്കുന്ന ഉദ്യോഗസ്ഥനും, അവസരം എന്ന വാക്കും, നിർബന്ധിക്കൽ എന്ന വാക്കും ഒരേ അർത്ഥത്തിൽ ഉപയോഗിക്കുന്നു. എന്നാൽ ആ രണ്ടു വാക്കുകളും, ഏറ്റവും കുറഞ്ഞത്, വിപരീത അർത്ഥങ്ങളുള്ള പദങ്ങളാണ്. ഈ രണ്ട് പദങ്ങളും, ഒരേ അർത്ഥത്തിൽ ഉപയോഗിക്കുന്നത് ജനങ്ങളുടെ മേലുള്ള ഒരു തരം തട്ടിപ്പാണ്. ഈ നാട്ടിലെ ജനങ്ങളുടെ ബുദ്ധശക്തിയെ അപമാനിക്കുന്ന ഒരു പരിപാടിയാണ് ഇത്.

12. It is understandable that some persons may love Malayalam, and the feudal social system that it ensues. In this nation of ours, everyone has the *right to profess, practice and propagate* the religion, language, culture and such things that he or she likes. However, he or she has no right to impose his own likings, religion, language, ideas, social systems etc. on others.

12. മലയാളത്തേയും, അത് ഉളവാക്കുന്ന ഫ്യൂഡൽ സാമൂഹികന്തരീക്ഷത്തെയും ഇഷ്ടപ്പെടുന്ന അളുകൾ ഉണ്ടാകാം. ഈ രാജ്യത്തിൽ ഏവർക്കും അവർ ഇഷ്ടപ്പെടുന്ന മതം, ഭാഷ, സംസ്കാരം തുടങ്ങിയ കാര്യങ്ങളിൽ ഏർപ്പെടാനും, പ്രചരിപ്പിക്കുവാനും ഉള്ള അവകാശം ഉണ്ട്. എന്നാൽ അവർ ഇഷ്ടപ്പെടുന്ന മതം, ഭാഷ, ആശയങ്ങൾ, സാമൂഹികാന്തരീക്ഷം തുടങ്ങിയവ അന്യരിൽ അടിച്ചേൽപ്പിക്കാൻ അവകാശമില്ല.

13. Language is based on communication in the society. It goes on changing. So, to enforce a rule that will remove the possibility of change and development of a communication system in a society is to stagnate and to stall progress. It is a dangerous retrograde step.

13. ഭാഷ സമൂഹത്തിലെ ആശയവിനിമയവുമായി ബന്ധപ്പെട്ടുകിടക്കുന്നു. അതിൽ മാറ്റം വന്ന് കൊണ്ടിരിക്കും. അത് കൊണ്ട് തന്നെ സംസാര ഭാഷയിൽ യാതൊരു മാറ്റവും വരുത്താൻ പറ്റില്ല എന്ന നിലപാട് പുരോഗമനത്തെ തടയും. അത് വളരെ അപകടകരമായ, ഒരു പിന്നോട്ടുള്ള കാൽവെപ്പാണ്.

14. Even though the word *Mother Tongue* is used to denote a person's native language, it has no connection to the term '*maternal*' and '*mother*', with the concept of '*maternity*' or '*motherhood*', and with *breast milk* and *breastfeeding*. The term *Mother Tongue* is being currently used to incite emotional connections and passions by connecting the powerful emotional strings connected to Mother to that of language. The respondent is also using this term, without delineating the difference. In this context, the term *native language of Kerala* would be more appropriate. For, it would remove extraneous emotional tugs from the issues under contention.

14. മാതൃഭാഷ എന്ന വാക്ക് ഒരാളുടെ സ്വദേശത്തിന്റെ ഭാഷയെ സൂചിപ്പിക്കുന്നുണ്ടെങ്കിലും, അതിന് അമ്മ, മാതൃത്വം, ഗർഭധാരണം, പ്രസവം, അമ്മയുടെസ്തനങ്ങൾ, മുലപ്പാൽ എന്നിവയുമായി യാതൊരു ബന്ധവുമില്ല. എന്നാൽ തത്പര കക്ഷികൾ ഒരാൾക്ക് അയളുടെ അമ്മയോടുണ്ടാകുന്ന വൈകാരിക ബന്ധത്തെ ഭാഷയുമായി കൂട്ടിയിണക്കി, അതെ വൈകാരികത ഭാഷയിലും കൊണ്ടുവരാൻ

ശ്രമിക്കുന്നു. സർക്കാരും ഇതേ കാര്യമാണ് ചെയ്യാൻ ശ്രമിക്കുന്നത്. ഭാഷയും, അമ്മയും തമ്മിലുള്ള വ്യത്യാസം സൂചിപ്പിക്കുന്നില്ല. അതുകൊണ്ട്, ഈ അവസരത്തിൽ മാതൃഭാഷ എന്ന് പറയുന്നതിനേക്കാൾ പ്രാദേശികഭാഷ എന്നു പറയുന്നതായിരിക്കും നല്ലത്. അങ്ങിനെ ചെയ്യുമ്പോൾ പ്രസക്ത സംഗതിയുമായി യാതൊരു ബന്ധവുമില്ലാത്ത വൈകാരികചരടുകൾ ഒഴിവാക്കപ്പെടും.

15. It is seen that the respondent has not given a clear-cut answer to the Hon'ble High Court's query as to whether the impugned order has the **effect of absolutely eliminating any choice for a child in the subject matter**. The respondent has only restated and re-asserted that the child will be given the **opportunity** to study any other language of his or her choice. The answer is not to the query: **whether the student has the right to choose to opt out of the compulsion**. It is not about the right to choose to study more languages.

15. ബഹുമാനപ്പെട്ട ഹൈക്കോടതി ചോദിച്ച ചോദ്യം ഇതാണ്: സർക്കാർ ഉത്തരവ്, ഒരു കുട്ടിക്ക് തിരഞ്ഞെടുക്കാനും, ഒഴിവാക്കാനും ഉള്ള അവകാശത്തെ ഖണ്ഡിക്കുന്നുണ്ടോ എന്ന്? ഈ ചോദ്യത്തിന് ഒരു ശരിയായ ഉത്തരം പറയുന്നതിൽ നിന്ന് സർക്കാർ ഒഴിഞ്ഞുമാറിയതായിക്കാണുന്നു. ആകെ സർക്കാർ പക്ഷം ചെയ്തിട്ടുള്ളത്, ഒരാൾക്ക് മറ്റ് ഭാഷകൾ പഠിക്കാനുള്ള അവസരം ഒരുക്കിക്കൊടുക്കും എന്ന് ആവർത്തിക്കുകയും, ഊന്നൽ കൊടുക്കുകയുമാണ്. ബഹുമാനപ്പെട്ട ഹൈക്കോടതിയുടെ ചോദ്യമായ നിർബന്ധത്തിൽ നിന്നും ഒഴിവാകാനുള്ള അവകാശം അയാൾക്ക് ഉണ്ടാകുമോയെന്ന ചോദ്യം ഉത്തരം കിട്ടാതെ കിടക്കുന്നു. ചോദ്യം മറ്റു ഭാഷകൾ പഠിക്കാനുള്ള അവകാശത്തെപ്പറ്റിയല്ല.

16. The government order is silent on the issue of what would happen if the child in question **refuses** to learn

Malayalam. What is the punitive measure that the government will or can impose on the person of young age who desires not to study Malayalam?

16. ഒരു വിദ്യാർത്ഥി മലയാളം പഠിക്കാൻ വിസമ്മതിച്ചാൽ എന്തു സംഭവിക്കും എന്നതിനെപ്പറ്റി സർക്കാർ ഉത്തരവ് നിശ്ചയിച്ചിട്ടുണ്ട്. ചെറുപ്രായമുള്ള ഒരാൾ മലയാളം പഠിക്കാൻ ആഗ്രഹിക്കുന്നില്ലെങ്കിൽ, അയാളുടെ മേൽ സർക്കാർ എടുക്കാൻ പോകുന്ന ശിക്ഷാനടപടി എന്താണ്?

17. I would like to take up the two issues of: **a).** Right to opt out. **b).** Right of the person who is the student to refuse to study what he or she does not want to study.

17. ഈ അവസരത്തിൽ രണ്ട് വ്യത്യസ്ത കാര്യങ്ങൾ ചർച്ചക്ക് എടുക്കാൻ താല്പര്യപ്പെടുന്നു.

Item No: a). The right to opt-out

ഒഴിവാകാനുള്ള അവകാശം

The right to opt out of what is understood to have negative features:

നിഷേധാത്മകമായ കാര്യങ്ങൾ ഉണ്ട് എന്ന് കാണുന്നവയിൽ നിന്ന് ഒഴിഞ്ഞ് നിൽക്കാനുള്ള അവകാശം.

- 1) There is a numerically significant, lower caste community in Malabar, called the Thiyyas. With an exception of a few higher class families, by hereditary vocation, they were the labour and coconut plucking class. Incidentally I do belong to this community. Over the centuries, their dressing standard was like this: The men wore *throth* (thin

white towel) as lower garment. They wore nothing as upper garment. On the head they had a *Palathoppi* (cap made of *aracnut* palm leaf).

മലബാറിൽ, എണ്ണത്താൽ പ്രസക്തിയുള്ളതും, എന്നാൽ ജാതിപരമായി താഴെ നിലകൊള്ളുന്നതുമായ ഒരു ജനവിഭാഗമാണ് തീയർ. ഇവരിൽ ഏതാനും പാരമ്പര്യമായി കുലമഹിമയുള്ള കുടുംബങ്ങൾ ഒഴിച്ചാൽ, മറ്റുള്ളവരൊക്കെ പാരമ്പര്യമായി കർഷകതൊഴിലാളികളും, തെങ്ങുകയറ്റക്കാരും, അടിയാന്മാരും ആയിരുന്നു. ഈ ഹരജിക്കാരനും, സംഭവവശാൽ തീയസമുദായത്തിൽ ജനിച്ചതാണ്. നൂറ്റാണ്ടുകളായി താഴെക്കിടയിലുള്ള തീയരുടെ വസ്ത്രധാരണം ഇങ്ങിനെ ആയിരുന്നു: പുരുഷന്മാർ കീഴ് വസ്ത്രമായി ഒരു തോർത്ത് ഉടുക്കും. അവർ നെഞ്ച് മറക്കാൻ ഒന്നുതന്നെ ഇടില്ല. തലയിൽ പാളത്തൊപ്പി (കമുകിന്റെ ഇല) ധരിക്കും.

- 2) The women wore something like a *lungi* or *kayili* as lower garment and *did not wear* any upper garment, other than a *thorth* as a shawl. The dressing standards had a link to social suppression. Actually women from this community who tried to opt out of this social code, by wearing a blouse, were levied a penal tax.

തീയസ്ത്രീകൾ കൈലിപോലുള്ളത് കീഴ് വസ്ത്രമായി ധരിക്കും. മാറ് മാറയ്ക്കാൻ ഒന്നു തന്നെ ഇടില്ല. ചുമലിൽ ഒരു തോർത്തുണ്ടാകും. ഈ നിലയിലുള്ള വസ്ത്രധാരണത്തിന് സാമൂഹിക അടിച്ചമർത്തലുമായി ബന്ധമുണ്ടായിരുന്നു. ബ്ലൗസ് ധരിച്ച്, ഈ സാമൂഹിക-വസ്ത്രധാരണ ചട്ടത്തിൽ നിന്നും ഒഴിഞ്ഞുമാറാൻ ശ്രമിക്കുന്ന സ്ത്രീകളുടെ മേൽ ഒരു കരം തന്നെ അധികാരി വർഗ്ഗം അടിച്ചേൽപ്പിച്ചിരുന്നു.

3) They were compelled to clothe themselves thus by **social as well as statutory compulsion**. They could not opt out. Yet, it was only a hereditary compulsion about which no one, even the affected persons, associated any issue of feudalism or social suppression. For, it was a way of life. However, when Malabar came under the British rule, the statutory compulsion got removed. Only social compulsion remained. They could opt out of this dressing code, if they wanted. It was then only the affected persons could get to see that they had been under a social suppression and that this was not the only way to live and dress, allowable.

തീയ്യ സ്ത്രീകൾ ഇങ്ങനെ വസ്ത്രം ധരിക്കാൻ സാമൂഹികവും, നിയമപരവുമായ സമ്മർദ്ദം ഉണ്ടായിരുന്നു. അവർക്ക് അതിൽ നിന്നും ഒഴിഞ്ഞുമാറാൻ പറ്റില്ലായിരുന്നു. എന്നിരുന്നാലും, പാരമ്പര്യമായി വന്ന ഈ സമ്മർദ്ദം അനുഭവിച്ചവർ, അത് അടിമത്തമായോ, അടിച്ചമർത്തലായോ കരുതിയിരുന്നില്ല. കാരണം, അത് അവർക്ക് അറിവുള്ള ജീവിത നിലവാരം മാത്രമായിരുന്നു. എന്നാൽ മലബാർ ബ്രിട്ടീഷ് ഭരണത്തിന് അധീനപ്പെട്ടപ്പോൾ, നിയമപരമായ സമ്മർദ്ദം മാറി. പിന്നെ സാമൂഹികസമ്മർദ്ദം മാത്രം ബാക്കിവന്നു. അവർക്ക് വേണമെങ്കിൽ ഈ വസ്ത്രധാരണരീതിയിൽ നിന്നും ഒഴിയാമായിരുന്നു. അപ്പോൾ മാത്രമായിരുന്നു ഈ വസ്ത്രധാരണ രീതി സാമൂഹിക അടിച്ചമർലിന്റെ ഭാഗമാണെന്ന് അവർക്ക് ബോധോദയം ഉണ്ടായത്. ഇതല്ലാതെ വസ്ത്രം ധരിക്കാൻ മറ്റു രീതികളും ഉണ്ട് എന്ന് മനസ്സിലായത്.

4) The men started wearing *mundu* and women slowly changed to *sari* and *blouse*. Both *mundu* and *sari* are not really the hereditary dresses of the majority people of this place, even though it is taught to students as that.

പുരഷന്മാർ മുണ്ട് ഉടുക്കാനും, സ്ത്രീകൾ സാരിയും, ബ്ലൗസും ധരിക്കാനും തുടങ്ങി. മുണ്ടും, സാരിയും, ഇന്നാട്ടിലെ ഭൂരിഭാഗം ജനങ്ങളുടേയും, പാരമ്പര്യവസ്ത്രമല്ല. എന്നിരിക്കിലും, അവയാണ് ഇവിടുത്തെ പാരമ്പര്യ വാസ്ത്രങ്ങൾ എന്നാണ് പഠിപ്പിക്കുന്നത്.

- 5) Similarly Malayalam has suppressive and feudal features. Yet the average Malayalam speaking person would not have thought about this, for it was a way of life. No other social relationship is considered possible. Until one gets to learn pristine English.

ഇത് പോലെ മലയാളത്തിൽ അടിച്ചമർത്തലിന്റേയും, ഇന്ത്യൻ ഫ്യൂഡലിസത്തിന്റേയും അംശങ്ങൾ ഉണ്ട്. എന്നാൽ ഒരു ശരാശരി മലയാളം സംസാരിക്കുന്നയാൾ ഇതിനെക്കുറിച്ച് ചിന്തിച്ചിട്ടുണ്ടാകില്ല. കാരണം, ഇത് ഇവിടെ സാധാരണമായ ഒരു കാര്യം മാത്രമാണ്. മറ്റൊരു സാമൂഹികാന്തരീക്ഷവും, സാധ്യമാണ് എന്ന് ആരും ചിന്തിക്കാറില്ല. കലർപ്പില്ലാത്ത ഇംഗ്ലീഷ് പഠിക്കുന്നതു വരെ.

- 7). Currently the need to learn Malayalam is only due to social compulsion. A person or child can opt out of it, if he or she desires it. The impugned government order has the effect of making it a statutory compulsion.

ഇനിപ്പോൾ മലയാളം പഠിക്കാൻ സാമൂഹിക നിർബന്ധമേയുള്ളൂ. ഒരു വ്യക്തിക്ക് വേണമെങ്കിൽ അതിൽ നിന്നും ഒഴിയാം. എന്നാൽ പ്രസക്തമായ സർക്കാർ ഉത്തരവ് മലയാളം പഠിക്കുന്നത് ഒരു നിയമപരമായ നിർബന്ധമായി വരുത്തുന്നു.

- 6) There is no justification to make it a statutory compulsion. If a person wants to learn Malayalam, then it is his or her

right to do so. Like there are women in many places in the world who go around topless. It is their right. Likewise if anyone wants to learn Malayalam, it is their right. But it is not to be imposed on others. Like topless dressing standards should not be enforced on other women.

6. അതിനെ നിയമപരമായ ഒരു നിർബന്ധമാക്കുന്നതിന് യാതൊരു ന്യായവും ഇല്ല. ഒരു വ്യക്തിക്ക് മലയാളം പഠിക്കണമെങ്കിൽ, അയാൾക്ക് അതിനുള്ള അവകാശം ഉണ്ട്. ലോകത്തിൽ പല ഇടങ്ങളിലും സ്ത്രീകൾ മാറിടം മറയ്ക്കാതെ പോകുന്നതുപോലെ. അത് അവരുടെ അവകാശമാണ്. അത് പോലെ, ഒരാൾക്ക് മലയാളം പഠിക്കണമെങ്കിൽ, അതിനവകാശമുണ്ട്. എന്നാൽ അത് മറ്റുള്ളവരിൽ അടിച്ചേൽപ്പിക്കരുത്. മാറിടം മറയ്ക്കാതെയുള്ള വസ്ത്രധാരണം മറ്റുള്ളവരിൽ അടിച്ചേൽപ്പിക്കാൻ പറ്റാത്തത് പോലെ.

7) There are people who love Malayalam and the hierarchical social relationship it brings in. They fear that Malayalam would slowly vanish, if is not imposed on others. There is no need for them to fear that. For, if they love Malayalam, they can learn it themselves and also teach their children. Lovers of Malayalam can make the language live. And also see that the '*cultural nuances and heritage*' embedded in Malayalam can be made to continue in them.

മലയാളത്തേയും, അത് ഉളവാക്കുന്ന ഉച്ചനീചത്വ സാമൂഹികാന്തരീക്ഷത്തേയും ഇഷ്ടപ്പെടുന്ന ആളുകൾ ഇവിടെയുണ്ട്. മറ്റുള്ളവരുടെ മേൽ അടിച്ചമർത്തിയില്ലെങ്കിൽ, മലയാളം മല്ലെ അപ്രത്യക്ഷമാകും എന്ന് അവർ ഭയക്കുന്നു. അവർ അങ്ങിനെ

പേടിക്കേണ്ടകാര്യമില്ല. അവർക്ക് മലയാളത്തെ സ്നേഹമുണ്ടെങ്കിൽ, മലയാളം പഠിക്കാം, അവരുടെ മക്കളെപ്പഠിപ്പിക്കാം. മലയാളത്തെ സ്നേഹിക്കുന്നവർക്ക് ആ ഭാഷയെ എന്നെന്നേക്കുമായി ജീവിപ്പിക്കാം. മലയാളത്തിലെ, സംസ്കാരവും, പൈതൃകവും, അങ്ങിനെ നിലനിർത്താം.

- 8) In 1947, the number of people who speak Malayalam was less than 50 lakhs. Now, there are around 3.5 crore people Malayalam speakers in Kerala alone. So the contention that Malayalam is disappearing is not correct.

1947ൽ മലയാളം സംസാരിക്കുന്നവരുടെ എണ്ണം 50 ലക്ഷത്തിൽക്കുറവായിരുന്നു. എന്നാൽ ഇന്ന് 3.5 കോടിയിൽക്കൂടുതൽ ആളുകൾ കേരളത്തിൽ മാത്രം മലയാളം സംസാരിക്കുന്നു. അതുകൊണ്ട് മലയാളം അപ്രത്യക്ഷമാകുന്നു എന്ന വാദത്തിന് പ്രസക്തിയില്ല.

- 9) Children of the poorer classes bear the brunt of the feudal words in Malayalam. They should be given a helping hand by the government to learn good quality English. Instead of the government pumping in crores of rupees for teaching more Malayalam, that money should be spend on teaching English to the financially lower class children. A study on this matter should be done. That is, on whether the poorer class parents want their children to learn English or not. Organised minorities with vested interests are forcing the poor class children to bear the brunt of their selfish interests. Learning Malayalam in Kerala is a very easy thing. Any man, who lives here, can pick up Malayalam within six months of social interaction here, if he or she desires. A 100 crore rupees spending on this is

a useless expense, and should be used for improving English standards of the children. There is enough and more infrastructure here to learn Malayalam, including the print and visual media which promote Malayalam.

മലയാളത്തിലെ നീചത്വ വാക്കുകളുടെ ആഘാതം മുഴുവനും ഏറ്റു സാമ്പത്തികമായി പിന്നോട്ട് നിൽക്കുന്നവരുടെ മക്കളാണ്. സർക്കാർ അവർക്ക് നല്ല നിലവാരമുള്ള ഇങ്ഗ്ലീഷ് പഠിക്കാനുള്ള അവസരം ഒരുക്കിക്കൊടുക്കണം. എന്നാൽ ഇതിനാവശ്യമായ പണം മുഴുവൻ മലയാളം പഠിപ്പിക്കുവാനാണ് ധൂർത്തടിക്കുന്നത്. ഇക്കാര്യത്തിൽ ഒരു പഠനം തന്നെ ആവശ്യമാണ്. സാമ്പത്തികമായി പിന്നോട്ട് നിൽക്കുന്നവരുടെ കുട്ടികളെ ഇങ്ഗ്ലീഷ് പഠിപ്പിക്കാൻ ആഗ്രഹമുണ്ടോയെന്ന്. ഇന്നിപ്പോൾ സംഘടിതരായ സ്വാർത്ഥ തൽപരരാണ് ഈ കുട്ടികളെക്കുറിച്ച് തീരുമാനങ്ങൾ എടുക്കുന്നത്. കേരളത്തിൽ മലയാളം പഠിക്കാൻ ഏളുപ്പമാണ്. വെറും ആറുമാസം സാമൂഹികമായി ഇടപഴകുന്ന ഏതൊരാൾക്കും, വേണമെങ്കിൽ മലയാളം സ്വായത്തമാക്കാം. ഒരു നൂറു കോടി രൂപ ഇതിനായി പാഴ്ചിലവാക്കുന്നത് തെറ്റാണ്. ആ പണം, ഇവിടെ സാമ്പത്തികമായി പിന്നോട്ട് നിൽക്കുന്നവരുടെ മക്കളെ ഇങ്ഗ്ലീഷ് പഠിപ്പിക്കാൻ വിനിയോഗിക്കണം. പത്രങ്ങളും, ടിവിയും, സിനിമയുമടക്കം, മലയാളം പഠിക്കാൻ ഇവിടെ ആവശ്യത്തിലധികം കാര്യങ്ങൾ ലഭ്യമാണ്.

- 10) A few generations of people of West Bengal has suffered heavily due to the removal of English from their primary education. This should not be allowed to happen here.

വെസ്റ്റ് ബെൻഗോളിലെ ഏതാനും തലമുറ പ്രൈമറിവിദ്യാഭ്യാസത്തിൽ നിന്നും ഇങ്ഗ്ലീഷ് ഒഴിവാക്കപ്പെട്ടതിനാൽ വളരെ വിഷമത്തിൽപ്പെട്ടിട്ടുണ്ട്. ഈ അവസ്ഥ ഇവിടെ വരാൻ അനുവദിക്കരുത്.

Item b). The right to refuse to study

- 1) I am an informal researcher on the affect of codes inside languages. It is true that the academic world has not dealt with this issue in detail. I have not given my findings to the academic world. However, they are available for perusal online.

ഞാൻ ഭാഷകളിലെ കോഡുകളെപ്പറ്റിപ്പഠിക്കുന്ന ഒരു അനുപചാരിക റിസർച്ചറാണ്. ഇവിടെ ഞാൻ പറഞ്ഞ മിക്കകാര്യങ്ങളും, വിദ്യാഭ്യാസ ലോകം ചർച്ചചെയ്യതിട്ടില്ല എന്നത് വാസ്തവമാണ്. ഞാൻ എന്റെ നിരീക്ഷണങ്ങൾ വിദ്യാഭ്യാസ ലോകത്തിന് കൈമാറിയിട്ടില്ല. എന്നാൽ അവയെല്ലാം തന്നെ ഇന്റർനെറ്റിൽ ലഭ്യമാണ്.

- 2) On the basis of my own findings and understandings, I had brought up my children in a complete atmosphere of English. It was based on my rights as an individual, and also based on my understandings.

എന്റെ നിരീക്ഷണങ്ങളുടെ അടിസ്ഥാനത്തിൽ, ഞാൻ എന്റെ കുട്ടികളെ തികച്ചും ഇംഗ്ലീഷ് അന്തരീക്ഷത്തിലാണ് വളർത്തിയത്. ഇത് എനിക്കുള്ള അവകാശങ്ങളുടേയും, അറിവിന്റേയും അടിസ്ഥാനത്തിലാണ് ചെയ്തത്.

- 3) There were a number of complaints against me in this regard by local vested interests as well as local politicians. Numerous enquiries by both the police as well as by other government agencies were conducted against me in this regard.

ഇക്കാര്യത്തിൽ എനിക്കെതിരെ അനവധി ആരോപണങ്ങൾ പല തൽപരകക്ഷികളും, ചുറ്റുമുള്ള രാഷ്ട്രീയക്കാരും, ഉന്നയിച്ചിരുന്നു. പോലീസും, മറ്റുചില സർക്കാർ ഏജൻസികളും പല അന്വേഷണങ്ങളുമായി എന്റെ അടുത്ത് വന്നിട്ടുണ്ട്.

- 4) One such complaint is given here as Exhibit P6.

അങ്ങനെയുള്ള ഒരു പരാതിയുടെ പകർപ്പ് Exhibit P6 ആയിത്തരുന്നു.

- 5) The Children's Welfare Committee's ruling in this regard is given here as Exhibit P7.

ഈ പരാതിയുടെമേൽ Children's Welfare Committee പുറപ്പെടുവിച്ച ഉത്തരവിന്റെ പകർപ്പും ഇവിടെ സമർപ്പിക്കുന്നു: Exhibit P7

- 6) If the government does come out with the argument that there will be personality impairment or lessening in the intellectual capacity of an individual if he or she does not do his or her learning and social interaction in Malayalam or in the native language of the place of birth or domicile, then I would request the Hon'ble High Court to summon my senior daughter Varuna aged 15 for apprising her intellectual standards, personality category and social interaction.

Reply Affidavit given counter the arguments of the third respondents

1. Most of the arguments presented in the petition for impleading have already been mentioned in the counter petition filed on behalf of the State Government of Kerala. A detailed reply to the counter petition has already been given, with almost all the points covered.

1. രണ്ടാം എതിർ കക്ഷി ഉന്നയിച്ചിട്ടുള്ള മിക്കവാറും വാദങ്ങൾ ഒന്നാം എതിർ കക്ഷി ഉന്നയിച്ചിട്ടുള്ളതാണ്. അവയ്ക്ക് ഉചിതമായ മറുപടിയും നൽകിയിട്ടുണ്ട്.

2. So most of those points may not be repeated here to the extent possible. However, the petitioner needs to give in more detailed answers due to the fact that the third party respondents are from the **scholastic world, with rights and claims to deep knowledge** about languages and on Malayalam. The fact that they have formal qualifications that signify profundity in their field of study may lend an aura of authenticity to whatever they claim.

2. അതിനാൽ കഴിയുന്നിടത്തോളം അവ ഇവിടെ ആവർത്തിക്കുന്നില്ല. എന്നാൽ രണ്ടാം എതിർ കക്ഷിക്കാർ **പഠിപ്പും വിവരത്തിന്റേയും** ലോകത്തു നിന്നുള്ളവരാണ്. അവർക്ക് മലയാളത്തെക്കുറിച്ചും, ഭാഷകളെക്കുറിച്ചും, അനവധി വിവരം ഉണ്ടെന്നുമുള്ള അവകാശവാദവും, അവകാശവും ഉണ്ടാകാം. മാത്രവുമല്ല, ഔദ്യോഗികമായ പല ക്യാളിഫിക്കേഷനുകളും അവർക്ക് ഉണ്ട്. ഇവ, അവരുടെ വാദങ്ങൾക്ക് ഒരു ആധികാരികത നൽകിയേക്കാം.

3. The issue at stake is a very important one. For, a verdict favouring either side can have **far reaching affects on the destiny of the people** here and **on posterity**. It is because of this reason that a very exhaustive scrutiny of the issue/s is being pleaded for by the petitioner. A lot of points brought up by the respondents need to be examined in minute detail for their genuineness.

3. ഇവിടെ വളരെ പ്രാധാന്യം ഉള്ള ഒരു കാര്യമാണ് ചർച്ചക്ക് ബഹുമാനപ്പെട്ട കോടതിയുടെ മുന്നിൽ വന്നിരിക്കുന്നത്. കാരണം, ഏതു പക്ഷത്തെ അനുകൂലിച്ചുള്ള തീരുമാനം വന്നാലും, ഈ നാട്ടിലെ ജനങ്ങളുടെ ഭാവിയേയും, വരും തലമുറയേയും, അത് കാര്യമായി ബാധിക്കും. ഇക്കാരണം കൊണ്ടുതന്നെയാണ്, ഈ പെറ്റീഷണർ ഈ വിഷയത്തിൽ ബഹുമാനപ്പെട്ട ഹൈക്കോടതി വളരെ സൂക്ഷ്മമായ പരിശോധന നടത്തണമെന്ന് അഭ്യർത്ഥിക്കുന്നത്. എതിർ കക്ഷികൾ ഉന്നയിച്ചിട്ടുള്ള എല്ലാ വാദമുഖങ്ങളെയും, അവ എത്രത്തോളം ശരിയാണ്. എന്ന് പരിശോധിക്കേണ്ടിയിരിക്കുന്നു.

4. The respondents have relied upon the Articles and 8th Schedule of the Constitution of India to support their contentions. **A detailed answer to the same**

is given in item No: 52 of this reply affidavit. It may be mentioned in passing here that the State government has the powers to make rules on various things. However, the right of any citizen of India to request for a judicial scrutiny of any rule enacted by the State Government as to whether they are tenable as per the provisions and spirit of the Constitution of India is not disputable.

4. എതിർ കക്ഷികൾ ഇന്ത്യൻ ഭരണഘടനയിലെ ഏതാനും Articles കളേയും, 8ാം ഷെഡ്യൂളിനേയും അവരുടെ വാദങ്ങൾക്ക് ശക്തിയേകാൻ ആശ്രയിക്കുന്നു. ഇവയ്ക്കുള്ള വിശദമായ മറുപടി ഈ Reply affidavit ലെ Item 52 ആയി കൊടുത്തിട്ടുണ്ട്. സംസ്ഥാന സർക്കാരിന് പല കാര്യങ്ങളിലും നിയമം ഉണ്ടാക്കാനുള്ള അവകാശമുണ്ട്. എന്നാൽ അവ ഇന്ത്യൻ ഭരണഘടനയിലെ **മൗലിക അവകാശങ്ങൾ**ക്ക് നിരക്കുന്നവയാണോ എന്ന് അന്വേഷിക്കുവാൻ ഉചിതമായി ഒരു കോടതിയോട് അഭ്യർത്ഥിക്കുവാനുമുള്ള ഒരു പൗരന്റെ അവകാശം അനിഷേധ്യമാണ്.

5. The **spirit of the Constitution of India** does extend beyond the exact word-meanings of the Constitution. The spirit of the Constitution of India is to create a Welfare State, wherein all citizens get the opportunity to develop their personality and individuality to their best possible potential. The state should not impose anything that shall selectively promote certain levels of people and enfeeble others. That is, things that are *discriminatory*. These ideas are there in the Directive Principle of State Policy (Article 36 to 51).

5. ഇന്ത്യൻ ഭരണഘടനയിലെ വാക്കുകൾക്കും, വചനങ്ങൾക്കും പല പ്ലോഴും അഗാധമായ ആന്തരികാർത്ഥമുണ്ട്. ഈ ഭരണഘടനയുടെ വിശാലമായ ഉദ്ദേശ്യം ഇവടെ എല്ലാ പൗരന്മാർക്കും, അവരവരുടെ വ്യക്തിത്വങ്ങളും, കഴിവുകളും, ആവുന്നിടത്തോളം, വളർത്തുവാനുള്ള സാഹചര്യം ഒരുക്കുന്ന ഒരു Welfare State ഉണ്ടാക്കുക എന്നതാണ്. ഏതാനും ആളുകൾക്ക് മാനസികവും, മറ്റുമായ വളർച്ചക്ക് വഴിവക്കുന്നതും, മറ്റുള്ളവർക്ക് അവ മുടക്കുന്നതുമായ യാതൊരു സംവിധാനത്തിനും, സർക്കാർ അനുകൂലമായ നയം സ്വീകരിക്കുകയോ, അടിച്ചേൽപ്പിക്കുകയോ ചെയ്യാൻ പാടില്ല. അങ്ങിനെ ചെയ്യുന്നത് വിവേചനപരമാണ്. ഈ ആശയങ്ങൾ ഇന്ത്യൻ ഭരണഘടനയിലെ **Directive Principles of State Policy** യിൽ ഉണ്ട്. (Articles 36 to 51).

6. The Hon'ble High Court of Kerala has only taken up the contention that the issue of whether the studying individual may lose his or her **right to opt out** of learning a language which he or she has no inclination for. However, as both the first respondent as well as the second respondents has allowed themselves to discuss the other issues, the petitioner is impelled to give the raised points a required answer.

6. ബഹുമാനപ്പെട്ട കേരള ഹൈക്കോടതി, ഏതെങ്കിലും ഒരു പ്രത്യേക ഭാഷ പഠിക്കുന്നതിൽ നിന്നും, ഒഴിയാനുള്ള, ഏതൊരു കുട്ടിയുടേയും, അയാ

ളുടെ മാതാപിതാക്കളുടേയും അവകാശം ഹനിക്കപ്പെട്ടിട്ടുണ്ടോ എന്ന ചോദ്യം മാത്രമേ ചർച്ചക്ക് എടുത്തിട്ടുള്ളൂ. എന്നാൽ എതിർപക്ഷത്തുള്ള രണ്ട് കക്ഷികളും, മറ്റ് ചോദ്യങ്ങൾ ചർച്ചക്ക് എടുക്കുകയും, അവയെല്ലാം ഘണ്ടിക്കാൻ ശ്രമിക്കുകയും ചെയ്തിട്ടുണ്ട്. അതിനാൽ ഈ പെറ്റീഷണറും, അവയെ ചർച്ച ചെയ്യേണ്ടതായി വന്നിട്ടുണ്ട്.

7. The first is the assertion that Malayalam is facing serious threat from various corners. Since the number of Malayalam speaking persons has increased exponentially over the decades since the formation of India, the petitioner is unable to understand what sort of threat the respondents are alluding to. They speak of some crises in Malayalam that might be causing cultural degradation in Malayalam; or else among the Malayalam speaking persons. It is not clear which or what they are pointing at.

7. ആദ്യമായി എടുക്കേണ്ടത്, മലയാളം പലരീതിയിലുമുള്ള ഭീഷണി നേരിടുന്നുണ്ട് എന്ന വാദമാണ്. 1947ലെ ഇന്ത്യയുടെ ജനനത്തിന് ശേഷം, മലയാളം സംസാരിക്കുന്നവരുടെ എണ്ണം വളരെക്കുറവിൽ നിന്ന് വളരെക്കൂടുതലായി വളർന്നിട്ടുണ്ട്. അപ്പോൾ മലയാളം നേരിടുന്ന ഭീഷണി എന്താണെന്നു മനസ്സിലാകുന്നില്ല. എതിർകക്ഷിക്കാർ, മലയാളം എന്തൊരതരം പ്രതിസന്ധി നേരിടുന്നുണ്ടെന്നും, അത് മലയാളത്തിലോ, മലയാളം സംസാരിക്കുന്നവരിലോ സാംസ്കാരിക മൂല്യശോഷണം വരുത്തുന്നു എന്നും അവകാശപ്പെടുന്നു. ഇത് എന്താണെന്നോ, ഏതാണെന്നോ മനസ്സിലാകുന്നില്ല.

8. If, indeed, there is such a crisis that is leading to cultural degradation, then it can be rectified by improving the quality and culture of Malayalam and the Malayalam-speaking-populace. How the same can be affected by making non-Malayalam speaking persons also to join the crisis is not clear.

8. ഇങ്ങനെ ഒരു സാംസ്കാരിക ശോഷണം നടക്കുന്നുണ്ടെങ്കിൽ, മലയാളത്തിന്റെയും, മലയാളം സംസാരിക്കുന്നവരുടെയും, നിലവാരങ്ങൾ വളർത്തി, ആ ന്യൂനത മാറ്റാവുന്നതാണ്. ഇതിന് പകരം, മലയാളം സംസാരിക്കാത്തവരെക്കൂടി ഇതിലേക്ക് വലിച്ചിറക്കുന്നതെന്തിനാണെന്ന് മനസ്സിലാകുന്നില്ല.

9. As to economic repercussion that has been mentioned, it may be pointed out that Kerala is a state that enjoys financial prosperity due to the fabulous currency exchange rate discrepancy. For, many persons of Kerala nativity work abroad and send money home. Again it is seen that if the same persons do know good quality English, they stand at a greater advantage in the foreign lands. So connecting imposition of Malayalam here to economic prosperity is not tenable under logical thinking. In fact, the effect is the opposite of what is contended.

9. മലയാളം എല്ലാരുടെയും പഠിക്കാത്താൽ ഉളവാകുന്ന സാമ്പത്തിക പ്രതിസന്ധിയെപ്പറ്റി സൂചിപ്പിച്ചുകാണുന്നു. കേരളം ഇന്ത്യൻ രൂപയുടെ മൂല്യത്തിൽ

ഉളവാക്കപ്പെടുന്ന അതി ഭയങ്കരമായ തരം താഴ്ത്തൽ മുഖേനെ സാമ്പത്തികമായി വളർച്ച പ്രാപിച്ച ഒരു സംസ്ഥാനമാണ്. കാരണം, അനവധി കേരളീയർ വിദേശങ്ങളിൽ പണിയെടുത്ത് അയക്കുന്ന പണമാണ്, ഇവടെ സാമ്പത്തിക സ്ഥിരത വരുത്തുന്നത്. ഇങ്ങിനെ വിദേശങ്ങളിൽ പണിയെടുക്കുന്ന കേരളീയർക്ക് ഇങ്ഗ്ലിഷ് അറിവ് നന്നായി ഉണ്ടെങ്കിൽ വിദേശ രാജ്യങ്ങളിൽ കൂടുതൽ നല്ല തൊഴിലുകൾ കിട്ടും എന്നത് സാമാന്യ വിവരം മാത്രമാണ്. അതിനാൽ നിർബന്ധ മലയാള പഠനത്തെ കേരളത്തിന്റെ സാമ്പത്തിക ഉന്നമനവുമായി കൂട്ടിക്കുഴക്കുന്നത് ശരിയല്ല. യാഥാർത്ഥ്യത്തിൽ അവകാശപ്പെട്ടതിന്റെ നേരെ വിപരീത ഫലമാണ്, ഈ നിർബന്ധപഠനം കൊണ്ട് ഉണ്ടാവുക.

10. The term *Mother tongue* is seen mentioned. It only means the *native language* of the place of the nativity of the individual. This petitioner has already clarified in his reply to the first respondent (State Govt) the need to limiting the emotional sense the word '*mother tongue*' creates in its mention. It has no connection to the term '*maternal*' and '*mother*', with the concept of '*maternity*' or '*motherhood*', and with *breast milk* and *breastfeeding*. The term *Mother Tongue* is being currently used to incite emotional connections and passions by connecting the powerful emotional strings connected to Mother, to that of language: *Ammayanu, Amminhayanu, Amminhappaalaanu, Amrithaanu; Maathavaanu, Mathruthwamaanu Malayalam*.

10. മാതൃഭാഷ എന്ന വാക്ക് ഉപയോഗിച്ച് കാണുന്നു. അത് ഒരു വ്യക്തിയുടെ സ്വദേശത്തിലെ സംസാരഭാഷ, എന്നേ അർത്ഥം വരുന്നുള്ളൂ. ആ വാക്കിന്, *മാതാവ്, മാതാവിന്റെ* തുടങ്ങിയവാക്കുകളോടോ, *മാതൃത്വം, മാതാവകൽ* തുടങ്ങിയ അവസ്ഥകളോടോ, *മാതാവിന്റെ സ്തനങ്ങളോടോ, മുലപ്പാലിനോടോ*, യാതൊരു ബന്ധവുമില്ല. മാതൃഭാഷ എന്ന പദപ്രയോഗത്തിലൂടെ, ഒരു വ്യക്തിക്ക് സ്വാഭാവികമായും, അമ്മയോട് ഉണ്ടാവുന്നു വൈകാരികമായ ഭാവങ്ങൾ ഭാഷയോട് കൂട്ടിക്കുഴച്ച്, അസ്വാഭാവികമായ വൈകാരിക ബന്ധങ്ങൾ വ്യക്തികളിൽ ഭാഷയോട് ഉണ്ടാക്കാൻ തൽപരകക്ഷികൾ ശ്രമിക്കുന്നു. *അമ്മയാണ്, അമ്മിഞ്ഞയാണ്, അമ്മിഞ്ഞപ്പാലാണ്, അമ്മൂതാണ്; മാതാവാണ്, മാതൃത്വമാണ് മലയാളം* എന്നൊക്കെയുള്ള പദപ്രയോഗങ്ങൾ സുലഭമാണ്.

11. Beyond that the argument that **what the mother talks has** to be taught to the child is not a powerful one. For, in most households in current day Kerala, the majority of the womenfolk talk a comparatively lower quality Malayalam. This is mainly due to the social and familial conditioning. For example, this petitioner's wife used to talk an interior village kind of Malabar Malayalam, which was far removed from the official version.

11. ഇതിനപ്പുറം, അമ്മ സംസാരിക്കുന്നത് തന്നെ കുട്ടികളെ പഠിപ്പിക്കണം എന്ന് പറയുന്നതിൽ വളരെ കഴമ്പില്ല. കാരണം, ഇന്നത്തെ കേരളത്തിലെ, പൊതുവെപ്പറഞ്ഞാൽ ഒരു നല്ലൊരു ശതമാനം സ്ത്രീകളും, സംസാരിക്കുന്ന

മലയാളം, നിലവാരം കുറഞ്ഞ രീതിയിലുള്ളവയാണ്. ഇതിന്റെ മുഖ്യകാരണം, സാമൂഹികവും, കുടുംബപരവുമായ കൺഡീഷണിങ്ങാണ്. ഉദാഹരണത്തിന്: ഈ പെറ്റീഷണറുടെ ഭാര്യ സംസാരിക്കാറുണ്ടായിരുന്നത്, ഒരു ഉൾനാടൻ, ഗ്രാമീഷ, അപരിഷ്കൃത മലയാളമായിരുന്നു.

12. The respondents have argued for preserving the rich culture and heritage of the *Malayalees*. Here again there is need to differentiate between two words, which get continuously used as synonyms. The first is the term *Malayalee*. The other is the term *Keraleeyan* (*Keralite*). Usually there is no discrepancy in the sense. But then, in certain conditions there is an issue of lack of clarity or misunderstanding. For example, this petitioner's own children who are unmistakably *Keralites*, do not know Malayalam at all. Terming them as *Keralites* would very sharply point to their nativity. However, calling them *Malayalees* would define them in a category that does not include them. This is mentioned just to bring in caution in using certain terms here without understanding their proper ambit. There is no intention on the part of the petitioner to act extremely pedantic or as an extraordinary person. Actually this issue would find much concurrence about defining many persons of Kerala-family linkage in many parts of the world. It is a strange observation that in almost all other states of India, the people there are defined with the language of the state. In the case of Kerala, there are two different words: *Malayalee* and *Keraleeyan* (*Keralite*). The petitioner does not know whether a Kannadiga is known as Karnatikan, a Maratha as a Maharashtrian, a Bengali as a West Bengolian, a Tamilian as a Tamilnadian etc. in their native language. However, in English there used to be the use of two different words; such as Madrasi, Mysorian, Andhraite etc. Whether all this has any powerful codes or sense is not known. However, it is possible that the petitioner is not correct in this summarisation.

12. എതിർ കക്ഷിക്കാർ മലയാളികളുടെ ഉന്നതമായ സംസ്കാരവും, പാരമ്പര്യവും കാത്തുസൂക്ഷിക്കാൻ ആവശ്യപ്പെടുന്നു. ഇവിടെ രണ്ട് വ്യത്യസ്ത വാക്കുകളെക്കുറിച്ച് പ്രതിപാദിക്കേണ്ടതുണ്ട്. ഒന്ന്, **മലയാളി**, രണ്ട്, **കേരളീയൻ**. ഇവ രണ്ടും, തുല്യ അർത്ഥങ്ങളുള്ള വാക്കുകളായി ഉപയോഗിക്കപ്പെടുന്നു. പലപ്പോഴും ഇതിൽ തെറ്റില്ല. എന്നാൽ ചില പ്രത്യേക അവസരങ്ങളിൽ, ഈ രണ്ട് വാക്കുകളും, ഒരേ അർത്ഥത്തിൽ ഉപയോഗിച്ചാൽ, ശരിയാകില്ല. ഉദാഹരണത്തിന്: ഈ പെറ്റീഷണറുടെ കുട്ടികൾ കേരളീയരാണ് എന്നത് അനിഷേധ്യമാണ്. എന്നാൽ അവർ മലയാളം തീരെ പഠിച്ചിട്ടില്ല. അവരെ കേരളീയർ എന്ന് വിളിച്ചാൽ, അവരുടെ ജനന-സ്ഥല ബന്ധങ്ങൾ ശരിയായി സൂചിപ്പിക്കപ്പെടും. എന്നാൽ അവരെ മലയാളികൾ എന്ന് വിശേഷിപ്പിച്ചാൽ, അവർ തികച്ചും ഉൾപ്പെടാത്ത ഒരു ഗ്രൂപ്പിൽ അവർ പെടും. ഇക്കാര്യം ഇവിടെപ്പറഞ്ഞത്, വാക്കുകൾ ഉപയോഗിക്കുമ്പോൾ അവയുടെ സൂചനാർത്ഥത്തിന്റെ പരിധികളെക്കുറിച്ച് സൂചിപ്പിക്കാനാണ്. ഈ പെറ്റീഷണർക്ക് ഒരു

ബുദ്ധിമാന്റെ പരിവേഷം ചമയാനല്ല. യഥാർത്ഥത്തിൽ ഈയൊരു പ്രശ്നം, ലോകത്തിലെ പല ഭാഗങ്ങളിലും, താമസിക്കുന്ന കേരളീയരിൽ പലക്കും, ബാധകമാണ്. ഒരു വിചിത്രമായ കാര്യം ശ്രദ്ധയിൽ പെട്ടിട്ടുണ്ട്. ഇന്ത്യയിലെ പല സംസ്ഥാനങ്ങളിലെയും, ജനങ്ങളെ അവരുടെ ഭാഷയാലാണ് അറിയപ്പെടുന്നത്. കേരളത്തിന്റെ കാര്യത്തിൽ രണ്ട് വ്യത്യസ്ത വാക്കുകളുണ്ട്. കേരളീയൻ എന്നും, മലയാളിയെന്നും. ഒരു കന്നടികനെ കർണാടികനെന്നും, ഒരു മറാഠിയെ മാഹാരാഷ്ട്രിയനെന്നും, ഒരു ബൻഗോളിയെ വെസ്റ്റ് ബൻഗാളിയെന്നും, ഒരു തമിഴനെ തമിഴ്നാടിയെന്നും, അവരവരുടെ പ്രാദേശിക ഭാഷകളിൽ വിളിക്കാറുണ്ടോ എന്നറിയില്ല. എന്നാൽ ഇങ്ഗ്ലീഷിൽ രണ്ടു വാക്കുകളുണ്ടായിരുന്നു: Madrasi, Mysorian, Andhraite etc. ഇവയിൽ എന്തെങ്കിലും കോഡുകൾ അടങ്ങിയിരുപ്പുണ്ടോ എന്നറിയില്ല. മാത്രവുമല്ല, ഈ പെറ്റീഷണറുടെ നിരീക്ഷണങ്ങൾ ഇക്കാര്യത്തിൽ ശരിയായിരിക്കണമെന്നുമില്ല.

13. It is argued that the State Government of Kerala has every right to impose Malayalam in primary classes to preserve the rich culture and heritage of the *Malayalees*. Well, it could be a laudable aim, as mentioned by the respondents, if the target group is strictly limited to the acquiescing *Malayalees* (Malayalam speaking persons) and others who innately love Malayalam. Imposing Malayalam on others who are not inclined to speak or learn Malayalam more or less negates the commendableness of the spirited aim.

13. മലയാളികളുടെ മഹനീയമായ പാരമ്പര്യവും, സംസ്കാരവും, പരിപാലിക്കാൻ പ്രൈമറി ക്ലാസുകളിൽ മലയാളം നിർബന്ധിച്ച് അടിച്ചേൽപ്പിക്കാൻ അവകാശമുണ്ട് എന്ന് എതിർ കക്ഷിക്കാർ വാദിക്കുന്നു. അവർ അവകാശപ്പെട്ടപോലെ, ഇത് മലയാളം ഇഷ്ടപ്പെടുന്നവരുടെ ഇടയിലും, മലയാളം സംസാരിക്കുന്നവരുടെ ഇടയിലും മാത്രമാണ്, നടപ്പിലാക്കുന്നതെങ്കിൽ, ഇത് ഒരു സ്തുത്യർഹമായ കാര്യമാകാം. എന്നാൽ മലയാളം പഠിക്കാൻ ഇഷ്ടപ്പെടാത്തവരിൽ ഇത് അടിച്ചേൽപ്പിക്കുമ്പോൾ, ഇത് അതിന്റെ മഹനീയത നഷ്ടപ്പെടുന്നു.

14. It may be noted that a language is not something that come along with one's birth. It is more or less acquired through inputs that the individual receives mentally. It follows that Malayalam is not an innate feature of a person born in Kerala, like other innate features a person has. It has no more claims to impose itself on an individual than any other language, idea, philosophy, dressing standards, political philosophy and such.

14. ഭാഷയെന്നത് ഒരു വ്യക്തിക്ക് ജനനം മുതൽ ലഭിക്കുന്ന ഒന്നല്ല. ജനനത്തിന് ശേഷം, ഒരു വ്യക്തി കേട്ടും പഠിച്ചും, സ്വരൂപിക്കുന്ന ഒന്നാണ് ഭാഷ. ഇതിന്റെ അർത്ഥം മലയാളം എന്നത് ഒരാളുടെ ശരീരത്തിന്റെയോ, മനസ്സിന്റെയോ, ജന്മനാലുള്ള ഭാഗമല്ല. മറ്റേതൊരു ഭാഷയ്ക്കും, ആശയത്തിനും, തത്വചിന്തയ്ക്കും, വസ്ത്രധാരണരീതിയ്ക്കും, രാഷ്ട്രീയതത്വസംഹിതയ്ക്കും, ഉള്ള അവകാശമേ മലയാളത്തിനും ഉള്ളൂ.

15. To explain this more, let me say this: A person born in Kerala is trained by social conditioning to instinctively stand as a **part of a clustering crowd** for getting anything like a ticket, getting into a bus or train, standing at the bank teller counter etc. However, he or she can be mentally trained to understand that creating a queue is a better manner of performing the same action. Now, this second attitude is not a colloquial input. The other group cannot put up the argument that forming a queue is not part of our culture and thus should not be tried for or created. If such attitudes of intolerance are given statutory status, then there can be no social progress here. Languages are also something one learns from the local society, but then one need not necessarily follow what the local society tries to instil.

15. ഇക്കാര്യം കൂടുകൾ വിശദീകരിച്ച് പറയുകയാണെങ്കിൽ: കേരളത്തിൽ ജനിച്ച ഒരു വ്യക്തി സാധാരണയായി, ഒരു ടിക്കറ്റ് കൗണ്ടറിൽ നിൽക്കുമ്പോൾ, ബസ്സിലോ, ട്രെയിനിലോ കയറാൻ ശ്രമിക്കുമ്പോൾ മറ്റും, ഒരു കൂട്ടംകൂടി നിൽക്കാൻ ശ്രമിക്കുന്നു. എന്നാൽ ഈ ആളെത്തന്നെ കൂവായി നിൽക്കാൻ പഠിപ്പിക്കാവുന്നതാണ്. എന്നാൽ ഇത് ഒരു പ്രാദേശിക രീതിയല്ല. എന്നിരുന്നാലും, എതിർ കക്ഷിക്കാർക്ക് കൂടുതൽ ഒരു ദേശീയരീതിയല്ല; അത് കൊണ്ട് അത് ഇവിടെ നടപ്പിലാക്കാൻ പറ്റില്ല എന്ന് പറയാൻ അവകാശമില്ല. ഈ മാതിരിയുള്ള അസഹിഷ്ണുതയുള്ള നിലപാടുകൾക്ക് നിയമത്തിന്റെ പരിവേഷം നൽകിയാൽ ഇവിടെ യാതൊരു സാമൂഹികവളർച്ചയും നടക്കില്ല. ഭാഷകളും നമ്മൾ പ്രാദേശിക ദേശത്തിൽ നിന്നും പഠിക്കുന്നവയാണ്. എന്നാൽ നാട് പഠിപ്പിക്കുന്നത് മാത്രം നമ്മൾ പഠിക്കണം എന്ന് പറയുന്നത് ശുദ്ധ ബോധ്കരമാണ്.

16. It is mentioned that the society has by and large welcomed the government order. However, the report made by the RVG Menon committee has alluded to the fact that the people of Kerala are **stubbornly trying to put their children in English medium schools**, whereby the Malayalam-promoting Government schools are heading for their demise. Since the respondents themselves have made such an inference, it may be correct to summarise that the common people at large are not quite amused by the government's endeavours in this regard. Another summarisation could be that the whole campaign for imposing Malayalam on all and sundry has something to do with the vested interest of Government and Government-aided-school managements and their staff members, who may be desperate to save their institutions as people desperately try to get out of their clutches.

16. സർക്കുലറിന്റെ ഈ തീരുമാനങ്ങൾ ജനത്തിന് ഇഷ്ടമാണ് എന്ന് പറയുന്നു. എന്നാൽ ആർ വി ജി മേനോൻ കമ്മിറ്റി റിപ്പോർട്ട് തന്നെ പറയുന്നു, ഈ നാട്ടിലെ ജനങ്ങൾ അവരുടെ കുട്ടികളെ ഇംഗ്ലീഷ് മീഡിയം സ്കൂളുകളിൽ

ളിൽ പഠിപ്പിക്കാൻ ശ്രമിക്കുന്നുവെന്ന്. അത് കൊണ്ട് ഇവിടെയുള്ള, മലയാളം പ്രോത്സാഹിപ്പിക്കുന്ന, സർക്കാർ സ്കൂളുകൾ തകർച്ച നേരിടുന്നുവെന്ന്. മലയാളം അടിച്ചേൽപ്പിക്കാൻ ശുപാർശ ചെയ്യുന്നവർ തന്നെ ഇങ്ങിനെ പറയുമ്പോൾ, ഇവിടുത്തെ ജനങ്ങൾക്ക് സർക്കാരിന്റെ ഈ നിലപാടിനോട് യോജിപ്പില്ല എന്ന് തന്നെ തെളിയുന്നു. ഇതിൽ നിന്നുള്ള മറ്റൊരു നിഗമനം ഇതാണ്: ഇവിടെയുള്ള എല്ലാവരെയും മലയാളം നിർബന്ധിച്ച് പഠിപ്പിക്കാൻ കുറെ തൽപരകക്ഷികൾ ആഗ്രഹിക്കുന്നു. ഇവർ സർക്കാർ സ്കൂളുകളുടേയും, സർക്കാർ എയ്ഡഡ് സ്കൂളുകളിലേയും മാനേജ്മന്റുകളും, സ്റ്റാഫുകളും ആകാനാണ് സാധ്യത. കാരണം ജനങ്ങൾ ഇവരുടെ കൈകളിൽനിന്നും രക്ഷപ്പെടാൻ ശ്രമിക്കുന്നത്, ഇക്കൂട്ടർക്ക് തടയണം.

17. However, this contention would make it a necessity for the Hon'ble High Court to order the State Government to conduct a referendum so as to ascertain the exact wishes of the common man. Neither this petitioner nor the respondents can take up the stand that what they say is what the parents want. It has to be ascertained by means of a referendum.

17. ഇങ്ങിനെ പറയുമ്പോൾ ബഹുമാനപ്പെട്ട കേരള ഹൈക്കോടതിക്ക് ഒരു ജനഹിതപരശോധനയ്ക്ക് കൽപന ചെയ്യാനുള്ള ബാധ്യതവരുന്നു. കാരണം. കുട്ടികളുടെ മാതാപിതാക്കളുടെ യഥാർത്ഥ ഇഷ്ടം എന്താണെന്ന് അറിയാൻ ഇതാവശ്യമായി വരുന്നു. ഈ പെറ്റീഷണർക്കോ, എതിർകക്ഷിക്കാർക്കോ ഇക്കാര്യത്തിൽ തീർത്തൊന്നും പറയാനാവില്ല.

18. This is being respectfully prayed for by the petitioner with regard to the need to educate the children of the common-man *good quality* English. Whether a person wants his or her children to learn Malayalam or not has nothing to do with this aim, and is unconnected to this issue.

18. സാധാരണക്കാരന്റെ കുട്ടികളെ നല്ലനിലവാരമുള്ള ഇംഗ്ലീഷ് പഠിപ്പിക്കണം എന്ന കാര്യം വളരെ വീനീതമായാണ്, ബഹുമാനപ്പെട്ട കേരള ഹൈക്കോടതിയോട് അപേക്ഷിക്കുന്നത്. ഒരാൾ അയാളുടെ കുട്ടികളെ മലയാളം പഠിപ്പിക്കണമോ, വേണ്ടയോ, എന്ന കാര്യവുമായി ഇതിന് ബന്ധമില്ല.

19. It is mentioned by the respondents that Malayalam has a great legacy of art, culture and literature. The petitioner does not dispute the claims in this regard. However, that is not a logical reason to impose it on everyone.

19. മലയാളത്തിന് കലയുടെയും, സംസ്കാരത്തിന്റെയും, സാഹിത്യത്തിന്റെയും പൈതൃകമുണ്ട് എന്ന് എതിർ കക്ഷിക്കാർ വാദിക്കുന്നു. പെറ്റീഷണർ ആ വാദഗതിയെ എതിർക്കുന്നില്ല. എന്നാൽ അത് മലയാളത്തെ അടിച്ചേൽപ്പിക്കാൻ മാത്രം ഉതകുന്ന ന്യായമല്ല.

20. Moreover, it needs mention that there were a number of mutually discordant dialects in the geographical area currently called Kerala. Many of them were simply made to vanish as the sole aim of the State Government was the

promotion of the official version of Malayalam, which was actually the dialect of a particular part of South Kerala. Some of the other dialects were so different from this version that to even call them a dialect of Malayalam would have been equivalent to calling Kannada a dialect of Malayalam, by simply equating and making small changes to word sounds. However the petitioner can understand the compulsions that the State Government had in developing a standard Malayalam. The respondents have mentioned the threat of imminent death of this standardised Malayalam. The only issue here is that when the other dialects went in for their demise, no one felt any requirement to forestall the onslaught of the official version of Malayalam to save those dialects. For example, the dialects used by the tribal people are more or less getting erased from their own communication. It is only intelligent to bear in mind that if the same kind of financial and terminology inputs had been done on them also, the intellectual, literary and artistic legacy they all have would have come out. I mention this only to emphasis the point that such legacies cannot be used as a claim for imposing them on others.

20. മാത്രവുമല്ല, കേരളമെന്ന് ഇന്ന് വിളിക്കപ്പെടുന്ന ദേശത്തിൽ തമ്മിൽ ഇണങ്ങാത്ത പല പ്രാദേശിക ഭാഷകൾ ഉണ്ടായിരുന്നു. കേരളസർക്കാർ ഔദ്യോഗിക ഭാഷയെ മാത്രം പ്രോത്സാഹിക്കാൻ ശ്രമം നടത്തിയതിന്റെ ഭാഗമായി, അവയിൽ മിക്കവയും നശിച്ചുപോയി. ഈ ഔദ്യോഗിക ഭാഷ തന്നെ ദക്ഷിണ കേരളത്തിലെ ഒരു പ്രാദേശിക ഡയലക്റ്റ് മാത്രമാണ്. കേരളത്തിലെ ചില ഇതര ഡയലക്റ്റുകൾ, ഈ ഔദ്യോഗിക ഭാഷയിൽ നിന്നും, തികച്ചും വ്യത്യസ്തമായിരുന്നു. അവയെയെല്ലാം മലയാളം എന്നു വിളിക്കുന്നത് തന്നെ, കന്നടയിലെ വാക്കുകളുടെ ശബ്ദങ്ങളിൽ ചെറിയവ്യതിയാനം വരുത്തി, കന്നടയെ മലയാളത്തിന്റെ ഒരു ഡയലക്റ്റ് എന്ന് വിളിക്കുന്നത് പോലെയാണ്. എന്നിരുന്നാലും, സംസ്ഥാന സർക്കാർ ഒരു Standard Malayalam ഉണ്ടാക്കുന്നതിന് ശ്രമിച്ചതിന്റെ കാരണം മനസ്സിലാക്കാവുന്നതാണ്. എതിർ കക്ഷിക്കാർ ഈ Standardised Malayalamത്തിന്റെ ആകസ്മികമായ മരണത്തെ കുറിച്ചാണ് വേവലാതിപ്പെടുന്നത്. ഇവിടെ പറയേണ്ടുന്ന കാര്യം ഇതാണ്: മറ്റ് പ്രാദേശിക ഡയലക്റ്റുകൾക്ക് Official Malayalamത്തിന്റെ വേലിയേറ്റത്തിൽ മരണം സംഭവിച്ചപ്പോൾ, ഇവർക്കും യാതൊരു വേവലാതിയും തോന്നിയില്ല. ഉദാഹരണത്തിന്, ആദിവാസികളുടേയും, മറ്റ് ഗോത്രവർഗ്ഗക്കാരുടേയും ഭാഷകൾ പലതും ഇല്ലാതായിക്കൊണ്ടിരിക്കുകയാണ്. അവരെല്ലാം Standard Malayalam ആണ് പഠിക്കുന്നത്. ഈ ഭാഷകൾക്കും, മലയാളത്തിന് നൽകിയപോലുള്ള പണവും, പുതിയ വാക്സമ്പത്തും നൽകിയിരുന്നെങ്കിൽ, അവയിലേയും, കലാപരവും, സാഹിത്യപരവും, ശാസ്ത്രപരവും മറ്റുമായ സമ്പത്തുകൾ പുറത്തുവരുമായിരുന്നു. ഇങ്ങനെയുള്ള കാര്യങ്ങൾ ഇവിടെപ്പറയുന്നത്, ഈ വക പൈതൃകങ്ങൾ ഒരു ഭാഷയെ ആളുകളിൽ അടിച്ചേൽപ്പിക്കാനുള്ള അധികാരം നൽകുന്നില്ല എന്ന് പറയാനാണ്.

21. A lot of modern technical terminology was mischievously inducted into Malayalam by simply creating new words by a **Kerala State Language Laboratory**. It may be mentioned that this type of adding to the literacy legacy of a language does not connect the process or the creation to any natural antiquity of the language.

21. അനവധി പുതിയ ടെക്നിക്കൽ വാക്കുകൾ മലയാളത്തിൽ ഒരു കേരള ഭാഷാ ലാബറട്ടറി നിർമ്മിക്കുകയുണ്ടായി. ഇവിടെപ്പറയേണ്ടത്, ഇങ്ങനെയുള്ള ചെയ്തികൾ ആ ഭാഷയുടെ യഥാർഥ പൈതൃകവുമായി ബന്ധപ്പെടുത്താൻ പറ്റില്ല എന്നതാണ്.

22. Teaching such newly created words in all the sciences and art subjects was a very unnecessary thing. And also a real disturbance to the ordinary student. For many of them, when they went in for higher education in other states, had to unlearn and re-teach themselves the English equivalents of technical terminology. Moreover, all the Malayalam terminology that they had acquired over the years simply became redundant the moment they crossed the Kerala border. It may be remembered that the geographical space of Kerala is quite small. A person on the West side of Kerala at Calicut will be able to cross the East side border at Palghat (*Valayaar*) within a matter of 3 hours.

22. ശാസ്ത്രവിഷയങ്ങളിലും, ആട്സ് വിഷയങ്ങളിലും, ഇങ്ങിനെ പുതിയ വാക്കുകൾ സൃഷ്ടിക്കേണ്ട ആവശ്യമില്ലായിരുന്നു. സാധാരണക്കാരന്റെ മക്കൾക്ക് ഇത് തികച്ചും ഒരു പ്രയാസം തന്നെയാണ് ഉണ്ടാക്കിയത്. കാരണം, അവർ മറ്റ് സംസ്ഥാനങ്ങളിൽ ഉയർന്ന വിദ്യാഭ്യാസത്തിന് പോകുമ്പോൾ പഠിച്ച വാക്കുകൾ അത്രയും, ഇംഗ്ലീഷിലേക്ക് മാറ്റിപ്പഠിക്കേണ്ടതായി വന്നു. അവർ കേരളാതിർത്ഥി കടക്കുമ്പോൾ മലയാള ടെർമിനോളജി അത്രയും ആവശ്യമില്ലാത്ത വാക്കുകളായിത്തീരുകയും ചെയ്യുന്നു. ഇവിടെ കേരളത്തിന്റെ വീതിയെക്കുറിച്ച് പറയേണ്ടതുണ്ട്. കേരളത്തിന്റെ കിഴക്കൻ അതിർത്തിയിൽനിന്ന് പടിഞ്ഞാറൻ അതിർത്തിവരെ യാത്രചെയ്യാൻ മൂന്ന് മണിക്കൂർ മതിയാകും. (വാളയാർ മുതൽ കോഴിക്കോട് വരെ).

23. As to the students of the financially weaker classes, they were left with the burden of being under a layer of blocks to imbibing modern technical knowledge in its grand vastness. What they could get to imbibe was what came through translation versions, with the translators themselves becoming some sort of fountainheads of knowledge).

23. സാമ്പത്തികമായി പിന്നോട്ട് നിൽക്കുന്ന വിദ്യാർത്ഥികൾക്ക് ആധുനിക വിജ്ഞാന ശേഖരത്തിന്റെ വ്യാപ്തിയെക്കുറിച്ച് അറിയുന്നതിൽ നിന്ന് വഴി മുടക്കാൻ ഇംഗ്ലീഷ് വിജ്ഞാനമില്ലായ്മ ഒരു കാര്യമായ തടസ്സം തന്നെയായി നിലകൊണ്ടു. അവർ പലപ്പോഴും, വിവർത്തനങ്ങളെ ആശ്രയിക്കേണ്ടതായി വന്നു. വിവർത്തകർ ഒരു തരം, വിജ്ഞാനശേഖരങ്ങളുടെ ഉറവിടമായി വില

സുകയ്യം ചെയ്തു.

24. It is true that many states in India are trying this plan of bringing in division and fragmentation of modern knowledge by creating their own terminology in all subjects of study. It is only a mad scheme that need not be followed by Kerala also, without considering where all this will lead the whole nation to. In fact, when different people from different states move to other states, it literally becomes like moving to another nation. For each state is inflexibly promoting its own language.

24. ഇന്ത്യയിലെ പല സംസ്ഥാനങ്ങളും, രാജ്യത്തിൽ വികടനവും, വിഭാഗീയചിന്തയും വളർത്താൻ ഉതകുന്ന രീതിയിൽ അവരവരുടേതായ ശാസ്ത്രവാക്കുകളും, മറ്റും ഉണ്ടാക്കുന്നുണ്ട്. ഇതെല്ലാം തികച്ചും ഭ്രാന്തൻ പദ്ധതികളാണ്. കേരളവും ഇത് പിൻതുടരേണ്ട ആവശ്യമില്ല. കാരണം രാജ്യം, ഈ രീതിയിൽ പോയാൽ പല കക്ഷ്ണങ്ങളായിത്തീരും. ഇപ്പോൾത്തന്നെ ഒരു സംസ്ഥാനത്ത് നിന്ന് മറ്റൊന്നിലേക്ക് പോകുമ്പോൾ, വേറൊരു രാജ്യത്തിൽ പോയ പ്രതീതി പലപ്പോഴും സംജാതമകുന്നു. കാരണം, ഓരോ സംസ്ഥാനവും, യാതൊരു വിട്ടുവീഴ്ചയുമില്ലാതെ അവരവരുടെ ഭാഷയ്ക്ക് മാത്രം ഊന്നൽ നൽകുന്നു.

25. The whole of such acrimonious issues spring up from a stubborn attitude to promote only what a small group of learned scholars, who unfortunately have a very inward looking global perspective, want. They take upon themselves to view all of the outside world (especially the English world) in a hostile manner. They incessantly try to put up defences and barricades where none are necessary. Moreover a false sense of insecurity of being overrun by outsiders is tried to be inculcated in the common man's mind. It only leads to an unnecessary mood of belligerence, as if the whole of Kerala would be gobbled up by others.

25. ഇങ്ങിനെയുള്ള പ്രശ്നങ്ങളത്രയും വരുന്നുത് ഏതാനും, കുറച്ച്, പുറം ലോകത്തെ സംശയത്തോടെ നോക്കുന്ന വിദ്വാന്മാർ, അവർക്ക് ഇഷ്ടമുള്ളതേ ഇവിടെ വരാൻ പാടുള്ളൂ എന്ന് ശഠിക്കുന്നത് കൊണ്ടാണ്. ഇവർക്ക് ഇങ്ഗ്ലീഷിനോട് വരോധമാണ്. അവർ എല്ലായിടത്തും ഇങ്ഗ്ലീഷിനെതിരെ വേലികൾ കെട്ടുന്നു. മാത്രവുമല്ല ഇങ്ഗ്ലീഷ് എന്തോ ഒരു അധിനിവേശം വരുത്തുമെന്നും അവർ സാധാരണക്കാരിൽ ചിന്തവളർത്തുന്നു. അങ്ങിനെ, ഒരു തരം ആക്രമണം ആസന്നം എന്ന രീതിയിലുള്ള ഭീതി ഇവർ പരത്തുന്നു.

26. There are claims elsewhere (not made directly by the respondents) that the Kerala youngsters are *aping the West*. The word *West* is not a synonym of English. For English culture and language are very much different from that of Continental Europe. Moreover, it is quite doubtful if the so-called *West-aping* youngsters do have any deep knowledge in English. It is wrong to identify such behaviour with English language and English systems. English systems are quite

refined. And cannot be identified with the so-called *Western culture of the Keralites*.

26. എതിർ കക്ഷികൾ ഇവിടെപ്പറഞ്ഞിട്ടില്ലെങ്കിലും, ചെറുപ്പക്കാർ പാശ്ചാത്യരീതികൾ അനുകരിക്കുന്നു എന്ന് പലപ്പോഴും, വിമർശനങ്ങൾ ഉയർന്നുവരുന്നുണ്ട്. എന്നാൽ ഇവിടെപ്പറയാനുള്ളത്, പാശ്ചാത്യം എന്നു പറയുന്നത്, ഇങ്ഗ്ലീഷ് സംസ്കാരമല്ല. ഇങ്ഗ്ലീഷ് ഭാഷയും, സംസ്കാരവും, യൂറോപ്പിയൻ ഭൂഖണ്ഡത്തിലേതിൽ നിന്നും, വ്യത്യസ്തമാണ്. മാത്രവുമല്ല, പാശ്ചാത്യ സംസ്കാരം അനുകരിക്കുന്ന ചെറുപ്പക്കാർക്ക് അഗാധമായ ഇങ്ഗ്ലീഷ് പരിജ്ഞാനം ഉണ്ടോ എന്നും സംശയമാണ്. അവരുടെ പ്രകടനങ്ങളെ ഇങ്ഗ്ലീഷ് ഭാഷയുമായും, പെരുമാറ്റവുമായും സാമ്യപ്പെടുത്തുന്നത് തെറ്റാണ്. ഇങ്ഗ്ലീഷ് പെരുമാറ്റരീതികൾ തികച്ചും ലളിതമാണ്. അതിനെ കേരളീയരുടെ പാശ്ചാത്യ സംസ്കാരവുമായി യാതൊരു സാമ്യവുമില്ല.

27. Allusions have been made about the rich culture and heritage of Kerala. One can't find objection to the spirit that promoted the adjective. However, the fact about Kerala-culture is that it was quite feudal. So feudal that, the serf-level person and family was totally subordinated to the will and wishes of the *Janmi* (feudal landlord) class. The powerfully crushing and subordinating local dialect pejorative words was the basic tool that was the main machinery that aided in supporting this social system.

27. കേരളത്തിന്റെ മഹനീയമായ പാരമ്പര്യത്തെക്കുറിച്ചും, സംസ്കാരത്തെക്കുറിച്ചും എതിർകക്ഷിക്കാർ പരാമർശിച്ചിട്ടുണ്ട്. ഈ വികാരത്തെ കുറ്റം പറയാൻ പറ്റില്ല. എന്നിരുന്നാലും, കേരളത്തിന്റെ യഥാർഥ സംസ്കാരം അതിഭയങ്കര **ജന്മി-കുടിയാൻ ഫ്യൂഡലിസ**മായിരുന്നു. എന്നുവെച്ചാൽ, കുടിയാനും, അയാളുടെ കുടുംബവും, അയാളുടെ ജന്മിയുടേയും, കുടുംബത്തിന്റേയും, തികച്ചും അടിമകളായിരുന്നു. താഴെ നിൽക്കുന്നവരെ ശക്തമായി അമർത്തുന്ന, അവരുടെ വ്യക്തിത്വത്തെ തരംതാഴ്ത്തുകയും, മാലിന്യപ്പെടുത്തുന്നതുമായ വാക്കുകളും, പ്രയോഗങ്ങളുമായിരുന്നു, ജന്മിവർഗ്ഗത്തിന് ഇക്കാര്യത്തിൽ സഹായകരമായി വന്നത്. ഇവ തന്നെയായിരുന്നു, അടിച്ചമർത്തലിന്റെ ആയുധമായി നിലകൊണ്ടിരുന്നത്.

28. The fact was that even women folk, including a man's wife, sisters and daughters were all subject to the whims and fancies of the dominant class males. All art and cultural events that were conducted in the geographical area currently called Kerala, were more or less colluding with this social structuring. So, fanciful words that ennoble social systems and antiquity of doubtful quality cannot be accepted as legal arguments.

28. വാസ്തവം പറയുകയാണെങ്കിൽ, അടിയാന്മാരുടെ ഭാര്യയും, സഹോദരിമാരും, പെൺമക്കളും, ജന്മിവർഗ്ഗത്തിലെ പുരുഷന്മാരുടെ താല്പര്യങ്ങൾ തികച്ചും വിധേയരായിരുന്നു. ഈ നാട്ടിലെ മഹനീയമായ

സംസ്കാരവും, കലകളും, എല്ലാം തന്നെ ഈ സാമുദായിക ചട്ടക്കൂടിനെ അനുകൂലിക്കുന്നവയായിരുന്നു. ഇക്കാരണം കൊണ്ട് തന്നെ, വാസ്തവത്തിന് വിപരീതമായി അവകാശവാദങ്ങൾ കോടതിയിലെ വാദങ്ങളിൽ ഉപയോഗിക്കുന്ന് ശരിയല്ല.

29. An understanding that the various places in current day Kerala had, in days of yore, very egalitarian and pro-people social systems is a very wrong one. Many Malayalam films have aided in creating this feeling of a grand and regal past. Yet, on close examination of these films, one can see the protagonist as a very superior person, who is always surrounded by a cluster of clowns, jesters, jokers and other persons of subordinate individuality. In all senses, these themes carry the essential understanding of a feudal (*Janmi* on top, *kudiyaa*n at the bottom) social system.

29. പണ്ട് കാലങ്ങളിൽ കേരളത്തിൽ പൊതുജനങ്ങളെ ബഹുമാനിക്കുന്ന, അവർക്ക് സ്വാതന്ത്ര്യം നൽകുന്ന, ഒരു സംസ്കാരവും, രാഷ്ട്രീയന്തരീക്ഷവും, ഉണ്ടായിരുന്നു എന്നു പറയുന്നത് ശരിയല്ല. ഇങ്ങനെ ഒരു തെറ്റിധാരണ പരത്തുന്നതിൽ മാലയാള സിനിമക്ക് കാര്യമായ പങ്കുണ്ട്. എന്നാൽ ഈ സിനിമകളെ സക്ഷ്മപരിശോധനക്ക് വിധേയമാക്കുകയാണെങ്കിൽ കാണുന്നകാര്യം ഇതാണ്: ഹീറോ ആയി ഒരാൾ. അയാൾക്ക് ചുറ്റും, വിവിധവേഷം കെട്ടുന്നതും, താമാശക്കരും, വ്യക്തിത്വം കുറഞ്ഞതുമായ ഒരു കൂട്ടം. ഇതുതന്നെയാണ് കേരളത്തിന്റെ യഥാർത്ഥ ചരിത്രപരമായ സംസ്കാരവും. ഹീറോവായ ജന്മി മുകളിലും, കുറെ വ്യക്തിത്വം മാറ്റപ്പെട്ട അടിയാന്മാർ ചുറ്റും.

30. In fact, in the many areas of Malabar and possibly Travancore, in the pre-British period, no group of lowly placed persons could go around with their wares for selling or even with their women beyond the tightly kept, small areas around their houses. Going beyond would surely spell disaster for them, for only persons and groups with prestige, and high class and caste status could move around securely. This petitioner has personally seen the vestiges of this vulnerability in interior areas many years ago. Even now, moving all round India, without proper connections in the administration/police can be dangerous, to a limited extend, to people who come from the low-income bracket.

30. സത്യത്തിൽ ബ്രിട്ടീഷുകാർ വരുന്നതിന് മുമ്പ് മാലബറിൽ (തിരുവിതാംകൂറിലും ഇതുതന്നെയാവാം വാസ്തവം), താഴെക്കിടയിലെ ഏതൊരു വ്യക്തിക്കും, അയാളുടെ, വീടിനുചുറ്റുമുള്ള കുറഞ്ഞ ഇടംവിട്ട് ദൂരങ്ങളിൽ പോയി കച്ചവടം നടത്തുന്നത് അപകടകരമായിരിക്കും. പ്രതാപവും, ജാതിപരമായ ഉന്നതിയും, അങ്ങിനെ ആശ്വലവും, ഇല്ലാത്തവർക്ക് വീട്ടിൽ നിന്ന് വിദൂരങ്ങളിൽ തീരെ സുരക്ഷിതത്വം തന്നെയില്ലായിരുന്നു. വാർഷങ്ങൾക്കുമുമ്പ്, ഈ പെറ്റീഷണർ തന്നെ ഈ വിധം താഴെക്കിടയിലെ ആളുകളുടെ ശുരക്ഷയില്ലായ്മ ഉൾനാടൻ

പ്രദേശങ്ങളിൽ കണ്ടിട്ടുണ്ട്. ഇന്നും, ഇന്ത്യയിൽ സാമ്പത്തികമായി പിന്നോട്ട് നിൽക്കുന്നവർക്ക് മതിയായ രാഷ്ട്രീയസ്വധീനമോ, ഉദ്യോഗസ്ഥബന്ധമോയില്ലാതെ വിദൂരങ്ങളിൽ യാത്രചെയ്യുന്നത് അപകടകരമാണ്.

31. The petitioner clearly understands that all these negative social features are not limited to Kerala alone, but could possibly be true of most places in India and possibly in many other nations also.

31. കേരളത്തിന്റെ പിൻകലങ്ങളെക്കുറിച്ച് പറഞ്ഞകാര്യങ്ങൾ ഇന്ത്യയിലെ മറ്റു പല സ്ഥലങ്ങൾക്കും, മറ്റുചില രാജ്യങ്ങൾക്കും ബാധകമാണ് എന്നകാര്യം ഈ പെറ്റീഷണർ സമ്മതിക്കുന്നുണ്ട്.

32. The petitioner has used the term *feudal* in the petition. This term has been used by the respondents also, to describe what the petitioner has mentioned about the quality of Malayalam. However, the petitioner wishes to make it clear that a better usage would be *Janmi-kudiyaa* social relationship. For, this social relationship is quite different from the *Manorial system of feudalism* that existed in Continental Europe and also from English-based feudalism in England.

32. പെറ്റീഷണർ ഫ്യൂഡൽ എന്ന വാക്ക് ഈ പെറ്റീഷനിൽ ഉപയോഗിച്ചിട്ടുണ്ട്. മലയാത്തിന്റെ സ്വഭാവത്തെക്കുറിച്ച് ഈ പെറ്റീഷണർ പറഞ്ഞത് എന്താണെന്ന് പറയാൻ എതിർ കക്ഷിക്കാരും ഈ വാക്ക് ഉപയോഗിച്ചിട്ടുണ്ട്. എന്നാൽ പെറ്റീഷണർക്ക് ഫ്യൂഡൽ എന്ന വാക്കിനെക്കാൾ, ജന്മി-കുടിയാൻ സാമൂഹിക ബന്ധം എന്ന പദമാണ് ഉപയോഗിക്കാൻ ഇഷ്ടം. കാരണം, കേരളത്തിലെ സാമൂഹികാന്തരീക്ഷം യൂറോപ്പിലെ Manorial സമ്പ്രദായത്തിലെ ഫ്യൂഡലിസത്തിൽനിന്നും, ഇങ്ഗ്ലണ്ടിലെ ഇങ്ഗ്ലീഷ് രീതിയലുള്ള ഫ്യൂഡലിസത്തിൽ നിന്നും തികച്ചും വ്യത്യസ്തമാണ്.

33. The respondents claim that they are lovers of Malayalam who love their *Mother Tongue*. The petitioner wishes to place on record that he would support their claim to learn and propagate Malayalam by all means available. No one has a right to curtail that right of theirs. However, it is expected that they extend the same level of tolerance to others who have their infatuations on other languages. It is only correct to respect and tolerate other person's rights that do not intrude into the private zone of others.

33. എതിർ കക്ഷിക്കാർ, അവർ മലയാളത്തെ സ്നേഹിക്കുന്ന, മാതൃഭാഷാസ്നേഹികളാണെന്ന് പറയുന്നു. മലയാളഭാഷ പഠിക്കാനും, അതിനെ പ്രചരിപ്പിക്കുവാനും ഉള്ള അവരുടെ അവകാശത്തെ, ഈ പെറ്റീഷണർ, അംഗീകരിക്കുകയും, ആ അവകാശത്തിന് പൂർണ്ണ സഹകരണവും വാഗ്ദാനം നൽകുന്നു. ആർക്കും, ഇവരുടെ ഈ അവകാശത്തെ തടസ്സപ്പെടുത്താൻ അവകാശമില്ല. എന്നാൽ ഇതെ നിലയിലുള്ള സഹിഷ്ണുത,

മറ്റ് ഭാഷകളെയും ഇഷ്ടപ്പെടുന്ന ആളുകളോടും, ഇവർ കാട്ടണം. ഇവരെ ശല്യപ്പെടുത്താത്ത മറ്റുള്ളവരുടെ ആഗ്രഹങ്ങളിൽ ഇവർ ഇടപെടരുത്. തടസ്സം നിൽക്കരുത്. ഇവരുടെ ഇഷ്ടങ്ങൾ മറ്റുള്ളവരിൽ അടിച്ചേൽപ്പിക്കരുത്.

34. The petitioner is a person who is reasonably very good in Malayalam. He is not an outsider to the land. The good points in Malayalam are also known to him. In demeanour, looks and by domicile, he is a local man. He is neither an Englishman nor a foreigner to the land. He does write English annotations on Old Malayalam Film songs on the webpage: www.victoria.org.in/oldmalayalam.html

34. ഈ പെറ്റീഷണർക്ക് മലയാളത്തിൽ മോശമല്ലാത്ത പ്രവീണ്യം ഉണ്ട്. ഈ നാട്ടിന് പുറത്തുള്ള ആളല്ല. മലയാളത്തിന്റെ നല്ലവശങ്ങളെക്കുറിച്ച് അറിയാം. മുഖഭാവത്താലും, ശരീരപ്രകൃതിയാലും, ജനനം കൊണ്ടും, ഈ നാട്ടുകാരനാണ്. ഇങ്ഗ്ലീഷ്കാരനല്ല. വിദേശിയല്ല. മാത്രവുമല്ല, ഈ പെറ്റീഷണർ പഴയ മലയാള സിനിമാഗാനങ്ങളുടെ ഇങ്ഗ്ലീഷ് annotations www.vvv03.org/oldmalayalam.html എന്ന വെബ്സൈറ്റിൽ എഴുതാറുണ്ട്.

35. However, he has noticed that Malayalam does discriminate. Discrimination goes against the spirit of the Constitution of India. What is required is to study this aspect, instead of ignoring it. If there is discrimination, then the flaw needs to be rectified.

35. എന്നിരുന്നാലും. മലയാളത്തിൽ വിവേചന സ്വഭാവം ഉണ്ട് എന്ന് ഈ പെറ്റീഷണർ നിരീക്ഷിച്ചറിഞ്ഞിരുന്നു. വിവേചനം, ഇന്ത്യൻ ഭരണഘടനക്ക് എതിരാണ്. ഇത് ഇല്ലായെന്ന് നടിക്കാതെ, അതിനെക്കുറിച്ച് പഠിക്കുകയാണ് വേണ്ടത്. വിവേചനം ഉണ്ടെങ്കിൽ ആ പ്രശ്നം കണ്ടുപിടിച്ച് തിരുത്തുകയാണ് വേണ്ടത്.

36. The respondents are all persons of scholastic achievements in Malayalam study. However, it is quite surprising that they have not noticed any content of *Janmi-kudiyaan* social structuring in Malayalam or in other Indian vernaculars. Yet, what is more intriguing is that even after the issue has been pointed out, they still do not seem to see or sense it.

36. എതിർ കക്ഷിക്കാർ എല്ലാവരും, മലയാള പഠനത്തിൽ അഗാധമായ പ്രാവീണ്യമുള്ളവരാണ്. എന്നിട്ടുപോലും മലയാളത്തിലും, മറ്റ് ഇന്ത്യൻ ഭാഷകളിലും, ജന്മി-കുടിയാൻ സാമൂഹികാന്തരീക്ഷത്തിന്റെ അംശം, അവർക്ക് കാണാൻ കഴിഞ്ഞിട്ടില്ല എന്നത് അത്ഭുതം തന്നെയാണ്. അതിനെക്കാൾ അത്ഭുതം, ആ പ്രശ്നം ശ്രദ്ധയിൽ പെടുത്തിട്ടും, അവർക്ക് കാണാൻ പറ്റുന്നില്ല എന്നുള്ളതാണ്.

37. The issue is complicated. Yet, it can be simply conveyed by the idea that: Each of the words, *Sar, Maadam/Medam, Thangal, Ningal, Nee* (You) etc. and *Sar, Maadam/Medam, Adheham, Avar, Avanmaar, Ayaal, Avattakal, Avan, Aval* (He/She) etc. do have different affects on human psyche and social

understanding. The petitioner cannot believe that persons of scholastic leanings cannot sense the possibility that discrimination, suppression, ennoblement, enslavement and inequality before law and administration can be caused by the selective usage of different words for different persons.

37. പ്രശ്നം സങ്കീർണ്ണമാണ്. എന്നിരുന്നാലും, അതിനെക്കുറിച്ച് ഒരു ചെറിയ സൂചന ഇവിടെ നൽകാം: സാർ, മാഡം/മേഡം, താങ്കൾ, നിങ്ങൾ, നീ എന്നീ പദങ്ങളും, സാർ, മാഡം/മേഡം, അദ്ദേഹം, അവർ, അവന്മാർ, അവറ്റകൾ (ഐറ്റിങ്ങൾ), അവൻ, അവൾ തുടങ്ങിയ പദങ്ങൾ, മനുഷ്യ മനസ്സിലും, സാമൂഹിക ബോധത്തിലും, വ്യത്യസ്തങ്ങളായ ഇഫക്റ്റുകളാണ് ഉണ്ടാക്കുന്നത്. വ്യത്യസ്തരായ ആളുകളോട്, ഈ വാക്കുകളുടെ തരം തിരിച്ചുള്ള ഉപയോഗം, വിവേചനം, മാനസിക അമർച്ച, ഉന്നമനം, അടിമത്വം, നിയമത്തിനും, ഭരണസംവിധാനത്തിനും മുന്നിലുള്ള അസമത്വം, എന്നിവ സൃഷ്ടിക്കും എന്ന കാര്യം, വിവരവും, പഠിപ്പും, ഉണ്ട് എന്നവകാശപ്പെടുന്ന എതിർ കക്ഷിക്കാർക്ക് മനസ്സിലാക്കാൻ പറ്റുന്നില്ല എന്നു ശരിക്കും, ഈ പെറ്റീഷണർക്ക് മനസ്സിലാകുന്നില്ല.

38. It has been mentioned that the petitioner's contentions are liable to be rebutted by modern theories on languages. He can only say in reply that many English-based scholastic subjects, including that of psychiatry, psychology, political science and many others connected to human mind and social living are unable to clearly understand the variation and discrepancies that come into their contentions when taken into Asian hierarchical social communication environment.

38. ഈ പെറ്റീഷണറുടെ മലയാള ഭാഷയ്ക്ക് ഫ്യൂഡൽ സ്വഭാവം ഉണ്ട് എന്ന വാദം, ആധുനിക ഭാഷാ ശാസ്ത്രം അംഗീകരിക്കില്ല എന്നു എതിർ കക്ഷിക്കാർ പറയുന്നു. ഇതിന് ഉത്തരമായി ഈ പെറ്റീഷണർക്ക് ഇതെ പറയാനുള്ളൂ: ഇങ്ഗ്ലീഷ് അടിസ്ഥാനമാക്കിയിട്ടുള്ള പല, മനുഷ്യ മനസ്സുകളെക്കുറിച്ചും, സാമൂഹികാന്തരീക്ഷത്തെക്കുറിച്ചും, പ്രതിപാതിക്കുന്ന ശാസ്ത്രങ്ങൾ, എന്നിവ അടക്കമുള്ള ശാസ്ത്രങ്ങൾ, ഏഷ്യൻ ഉച്ചനീചത്വ സാമൂഹിക ആശയവിനിമയ സംവിധാനങ്ങളിലേക്ക് കടന്ന് വരുമ്പോളുണ്ടാകുന്ന വ്യതിയാനങ്ങളെക്കുറിച്ച് പൂർണ്ണമായി മനസ്സിലാക്കുന്നില്ല.

39. The issue of feudalism in Malayalam is this: if the society wants a feudal structuring, then Malayalam can be very effective. However, in India, the Constitution does not support feudal structuring. So Malayalam more or less creates problems. For, different kinds of mutually competing hierarchies are created by different strings of relationships. It would be like: from a specific angle, one man is superior; and when viewed from another string of relationships, he would be the subordinate. It can create a mood of continual belligerence in the society, unless suppressed by draconian law enforcement.

39. മലയാളത്തിലെ ഫ്യൂഡലിസത്തിന്റെ പ്രശം ഇതാണ്: ഈ നാട്ടിൽ ഒരു ഫ്യൂഡൽ സംവിധാനമാണ് ആവശ്യമെങ്കിൽ മലയാളം അതിന് ഉചിതമാണ്. എന്നാൽ ഇന്ത്യൻ ഭരണഘടന ഫ്യൂഡലിസത്തിന് എതിരാണ്. അങ്ങിനെ വരുമ്പോൾ മലയാളം പ്രശം ഉണ്ടാക്കുന്നു. കാരണം, വ്യത്യസ്ത, തമ്മിൽ മത്സരിക്കുന്ന, ഉച്ഛന്നീചത്വ ചരടുകൾ ആണ് സമൂഹത്തിൽ സൃഷ്ടിക്കപ്പെടുന്നത്. അത് ഇങ്ങിനെയാണ്: ഒരു കോണിൽ നിന്ന് നോക്കിയാൽ, ഒരു വ്യക്തി ഉരയത്തിലും, മറ്റൊരു ദിശയിൽ നിന്ന് നോക്കിയാൽ, അതെ, വ്യക്തി താഴ്ചയിലും വരാം. ഇങ്ങിനെയുള്ള അവസ്ഥ സമൂഹത്തിൽ നിലക്കാത്ത ഒരു യുദ്ധമനോഭാവം സൃഷ്ടിക്കും.

40. The petitioner has noticed that any professional commercial vehicle driver, who is forced to wear a *khaki* uniform by law, is invariably addressed as *Nee* (*Inhi* in Malabar), and referred to as *Avan* (*Oan* in Malabar) by the police. Behaviour standards towards them by the police are in accordance to the social sense those words hold. Such words as *Eda* etc. are very powerfully used to subdue any innate human individuality and quality the person has. The argument that the drivers do not have complaints about this, are only similar to the fact that school students do not object to their teachers using such words about them and to them. For they have been indoctrinated with the understanding that this is the only possible communication code that can exist.

40. ഏതൊരു കമ്മേർസ്യൽ വാഹന ഡ്രൈവറെയും, (നിയമം കാക്കിയിരിക്കണം എന്ന് ഷരിക്കപ്പെടുന്നവർ), പോലീസുകാർ നീ എന്നു സംബോധനചെയ്യുന്നു (മലബാറിൽ ഇങ്ങിനെ എന്നാണ് വിളിക്കുക). അവരെ അവൻ എന്നാണ് സൂചിപ്പിക്കാറ് (മലബാറിൽ ഓൻ എന്ന്). പോലീസുകാർ ഇവരോട് പെരുമാറുന്നരീതിയും, ഈ വാക്കുകളുടെ സാമൂഹീകർത്ഥം അടിസ്ഥാനപ്പെടുത്തിയാണ്. ആ വ്യക്തിയിലുള്ള പല ഉയർന്ന മാനുഷിക നിലവാരങ്ങളും, ഈ വാക്കുകളാലും, എടാ, തുടങ്ങിയ വാക്കുകളാലും, തേച്ച് മയക്കപ്പെടുന്നു. എന്നാൽ ഇക്കൂട്ടർക്ക് ഇതിൽ പരാതികളില്ല എന്ന് പറയുന്നത്, സ്കൂൾകുട്ടികൾക്ക് അവരുടെ ടീച്ചർമാർ അവരെ ഇങ്ങനെ സംബോധന ചെയ്യുന്നതിൽ യാതൊരു പരാതികളുമില്ല എന്നു പറയുന്നതു പോലെയാണ്. ഇതിന് കാരണം, ഇങ്ങിനെയല്ലാതെ അവരെ സംബോധനചെയ്യാനോ, അവരെപ്പറ്റിപ്പറയാനോ വെറൊരു രീതിയും ഇല്ല എന്നു ഇവരെ മനസ്സിലാക്കിക്കൊടുത്തിരിക്കുന്നു.

41. If the learned respondents do not acknowledge that there is discrimination in the varying manners of words used to different levels of people by the officialdom and the law enforcing machinery, one can only say that it is a great pity.

41. വളരെ പഠിപ്പും, വിദ്യാഭ്യാസവും അവകാശപ്പെടുന്ന എതിർകക്ഷിക്കാർ, നിയമപാലകരും, ഭരണസംവിധാനവും, വ്യത്യസ്ത ജോലിയിൽ ഏർപ്പെടുന്നവരെ വ്യത്യസ്ത വാക്കുകളാലും, വാക് പ്രയോഗങ്ങളാലും, വിശേഷിപ്പിക്കുന്നതിലും,

സംബോധനചെയ്യുന്നതിലും, അതിഗംഭീരമായ വിവേചനം പ്രയോഗിക്കുന്നുണ്ട് എന്ന് കാണുന്നില്ല എന്നു പറയുന്നത്, തികച്ചും, വ്യസനജനകമാണ്.

42. If the petitioner's arguments seem quite new and confounding, it can only be said that just because of that they cannot be defined as untenable.

42. ഈ പെറ്റീഷണറുടെ വാദങ്ങൾ തികച്ചും പുതിയതാണ് എന്നു തോന്നുന്നു, എന്നത് കൊണ്ട് മാത്രം, അവ ശരിയല്ല എന്നു പറയുന്നത് അബദ്ധമാണ്.

43. The petitioner is of the conviction that the Hon'ble High Court does have the obligation to order for an examination about points raised in the petition. The Hon'ble High Court of Kerala does statutorily hold unlimited judicial powers inside this state, and can rightfully take up the issues for judicial scrutiny.

43. ഈ പെറ്റീഷണറിൽ ഉയർത്തപ്പെട്ട ചോദ്യങ്ങൾക്കുള്ളപ്പറ്റിക്കൂടുതൽ പഠനങ്ങൾക്ക് ഉത്തരവിടാൻ ബഹുമാനപ്പെട്ട ഹൈക്കോടതി ബാധ്യസ്ഥമാണ് എന്നാണ് ഈ പെറ്റീഷണറുടെ ഉറച്ച വിശ്വാസം. ഈ സംസ്ഥാനത്തിൽ ബഹുമാനപ്പെട്ട കേരളാ ഹൈക്കോടതിക്ക് അതിരില്ലാത്ത ജുഡീഷ്യൽ അധികാരങ്ങൾ ഉണ്ട്. അതിനാൽ ഈ ചോദ്യങ്ങൾ ഒരു ജുഡീഷ്യൽ പഠനത്തിന് വിധേയമാക്കാം.

44. It is true that some other states have imposed their state language on all who live within the state's geographical area. The petitioner contends that just because another state has done a misdemeanour, it does not follow that Kerala should also commit the same transgression. Kerala can and should have the mental stamina to take a different stand. There is no need to follow the herd instinct. For *Keralites* do have claims to outstanding intellectual calibre. Let the State Government take a different stance, away from the nefarious claims of vested interests and show a new path.

44. മറ്റ് ചില സംസ്ഥാനങ്ങൾ അവിടങ്ങളിൽ താമസിക്കുന്നവരുടെ മുകളിൽ തദ്ദേശ ഭാഷകൾ അടിച്ചൽപ്പിച്ചിട്ടുണ്ട് എന്നത് ശരിയാണ്. എന്നാൽ മറ്റൊരിടത്ത് ഒരു തെറ്റ് നടപ്പിലാക്കി എന്നത് കൊണ്ട് മാത്രം, അത് കേരളവും നടപ്പിൽ വരുത്തണം എന്നു പറയുന്നതിൽ അർത്ഥമില്ല. കേരളത്തിന് വ്യത്യസ്തമായി നിലകൊള്ളാനുള്ള മനക്കരുത്ത് വേണം. കേരളീയർ ഉയർന്ന മാനസിക നിലവാരമുള്ളവരാണെന്ന് അവകാശപ്പെടുന്നവരാണ്. സർക്കാർ തൽപരകക്ഷികളുടെ സ്വാർത്ഥ താൽപര്യങ്ങൾക്ക് കീഴടങ്ങാതെ, തീരുമാനം എടുക്കണം.

45. The Constitution of India calls for the setting up of a Welfare State. That is what the State Government should be concerned about. Simply wasting time, energy and precious funds for promoting unwanted parochialism is not going

make the state reach the realm of a Welfare State. What is required is quality improvement to the people here.

45. ഇന്ത്യൻ ഭരണഘടന, ഇവിടെ ഒരു **Welfare State** സൃഷ്ടിക്കാനാണ് ആഹ്വാനം നൽകുന്നത്. സംസ്ഥാന സർക്കാർ അതിനാണ് പ്രാധാന്യം നൽകേണ്ടത്. യാതൊരു ആവശ്യവുമില്ലാതെ, വിലപ്പെട്ട സമയവും ഊർജ്ജവും, പണവും, അനാവശ്യമായി പ്രാദേശികവാദങ്ങൾക്ക് വേണ്ടി ചെലവഴിക്കുന്നത്, ഈ ഉദ്ദേശത്തിന് വിപരീതമായ ഫലമാണ് ചെയ്യുക. ഇവിടെ ആവശ്യം ജനങ്ങളുടെ ക്വാളിറ്റി ഉന്നമനമാണ്.

46. The petitioner admits that most of the contentions and counter contentions here do not fall purely within the ambit of jurisprudence. However there have been times when the Judiciary was called upon to make judgements in the realm of science and software, far removed from the core areas of judicial pursuits. I personally have seen a British judicial ruling done on a thing connected to the Software world. In a way the ruling was wrong. For only judicial points were discussed and made tenable. Yet, there was need to go beyond jurisprudence, and see how the software actually worked.

46. ഈ പെറ്റീഷനിൽ ഉയർത്തിയിട്ടുള്ള വാദങ്ങളും മറ്റും, നിയമശാസ്ത്രത്തിന്റെ വരമ്പുകൾക്ക് ഉള്ളിൽ പൂർണ്ണമായി ഒരുങ്ങുന്നവയാണ് എന്ന് ഈ പെറ്റീഷണർ അവകാശപ്പെടുന്നില്ല. എന്നിരുന്നാലും, ജുഡീഷറി ചിലപ്പോഴൊക്കെ ശാസ്ത്രത്തിന്റേയും, Software കളുടേയും ലോകത്തിൽ കടന്ന് വിധിന്യായങ്ങൾ നടത്തേണ്ടി വന്നിട്ടുണ്ട്. ഉദാഹരണത്തിന്, ഒരു ബ്യൂട്ടീഷ് കോടതി Softwareകളുടെ ലോകത്തിൽ ഒരു വിധിന്യായം നടത്തിയത് ഈ പെറ്റീഷണർ കണ്ടിട്ടുണ്ട്. ഒരു രീതിയിൽ നോക്കിയാൽ, വിധി തെറ്റായിരുന്നു. കാരണം, വെറും, ജുഡീഷ്യൽ വാദങ്ങളേ കണക്കിലെടുത്തുള്ളൂ. എന്നാൽ ജുഡീഷ്യൽ വാദങ്ങൾക്ക് അപ്പുറത്ത് കടന്ന്, ആ Software എങ്ങിനെയാണ് പ്രവർത്തിക്കുന്നത് എന്ന് അന്വേഷിക്കേണ്ടതുണ്ടായിരുന്നു.

47. The petitioner also wishes to place on record that he is not a Marxist or a communist sympathiser. He does this because the Hon'ble Chief Justice had mentioned that the claims for an egalitarian language here is a sort of Marxist theme. It is possibly true. Yet, the paradox is that the local communist party is totally against the spread of English, and spiritedly supports a feudal language communication system.

47. ഈ പെറ്റീഷണർക്ക് ഇവിടെപ്പറയാനുള്ളത്, ഈ പെറ്റീഷണർ ഒരു മാർക്സിസ്റ്റുകാരൻ അല്ല എന്നുള്ളതാണ്. ബഹുമാനപ്പെട്ട കേരള ചീഫ് ജസ്റ്റിസ്, എല്ലാവരെയും ഒരു പോലെക്കാണുന്ന ഭാഷ, ഒരു മാർക്സിസ്റ്റ് ആശയമാണ് എന്ന് പറഞ്ഞിരുന്നു. ആ പറഞ്ഞത് ശരിയായിരിക്കാം. എന്നിരുന്നാലും, ഇവിടെയുള്ള **കമ്മ്യൂണിസ്റ്റ് പാർട്ടി ഇങ്ഗ്ലീഷിന് എതിരാണ്** എന്നു മാത്രമല്ല, **ജന്മി-കൂടയാൻ കോഡുകളുള്ള ഭാഷകളെ പിൻതാങ്ങുകയും** ചെയ്യുന്നു.

48. The petitioner respectfully prays to the Hon'ble High Court that the issues need to be dealt with from all angles, including the issue of why the people are putting their children in private English medium schools. And also why the government is taking a rabidly opposite stance and forcing things that will negatively affect only the financially weaker sections.

48. ഈ പെറ്റീഷണർ ബഹുമാനപ്പെട്ട കേരള ഹൈക്കോടതിയോട്, ഈ പ്രശ്നത്തെപ്പറ്റി എല്ലാം അടങ്ങുന്ന ഒരു അന്വേഷണത്തിന് തയ്യാറാകണം എന്ന് വിനയപൂർവ്വം അപേക്ഷിക്കുന്നു. എന്തുകൊണ്ടാണ്, ഇവിടെയുള്ള അളുകൾ അവരുടെ കുട്ടികളെ ഇംഗ്ലീഷ് മീഡിയം സ്കൂളുകളിൽ ഇടുന്നത് എന്നും അന്വേഷിക്കണം. മാത്രവുമല്ല, സംസ്ഥാന സർക്കാർ എന്തിനാണ്, സാമ്പത്തികമായി പിന്നോട്ട് നിൽക്കുന്ന ജനങ്ങളെ ഹനിക്കുന്ന തീരുമാനങ്ങൾ എടുക്കുന്നത്.

49. It must be pointed out that that the respondents have simply avoided the core point admitted by the Hon'ble High Court of Kerala, viz. Whether the **impugned order has the effect of absolutely eliminating any choice for a child or of his or her parents** is the issue under judicial scrutiny. It is true that there are provisions in the Constitution of India that gives many powers to the State Government with regard to language and education. However, there are other more powerful dictums in the Constitution that strives to protect the **innate rights of the individual, defined as the *Fundamental Rights***. If any Act or rule contravenes or infringes upon these rights, it can rightfully be questioned in an appropriate court of law. The government can breach these *Fundamental Rights* only if the security of the state is under threat. In this issue there is no issue of the security of the state being in danger.

49. ബഹുമാനപ്പെട്ട കേരള ഹൈക്കോടതി എടുത്ത പോയിന്റ് ഇതാണ്: സർക്കാർ തീരുമാനം കുട്ടിയുടേയും, അയാളുടെ മാതാപിതക്കളുടേയും തിരഞ്ഞെടുക്കാനും, ഒഴിവാക്കാനും ഉള്ള അവകാശത്തിൽ കൈകടത്തുന്നുണ്ടോ എന്ന്? ഇന്ത്യൻ ഭരണഘടന, സംസ്ഥാന സർക്കറുകൾക്ക് പല നിയമങ്ങളും ഉണ്ടാക്കാനുള്ള അവകാശങ്ങൾ നൽകുന്നുണ്ട്. എന്നാൽ ഇവയെക്കാൾ ശക്തമാണ്, ഇവിടെയുള്ള പൗരന്മാർക്ക് നൽകിയിട്ടുള്ള **മൗലിക അവകാശങ്ങൾ**. സർക്കാരിന്റെ ഏതൊരു നിയമവും, ഇതിന് എതിരാവുകയോ, അവയെ ഖണ്ഡിക്കുകയോ ചെയ്യുകയാണെങ്കിൽ, അതിനെതിരെ ഒരു പൗരന്, അനുയോജ്യമായ ഒരു കോടതിയെ സമീപിക്കുവാൻ അവകാശമുണ്ട്. രാഷ്ട്രത്തിന്റെ നിലനിൽപ്പിന് ഭീക്ഷിണിനേരിടുന്ന അവസരങ്ങളിൽ മാത്രം, ഈ അവകാശങ്ങൾക്ക് കടിഞ്ഞാൺ ഇടാം. ഇവിടെ പ്രതിപാദ്യമായ വിഷയത്തിൽ അങ്ങിനെ ഒരു രാജ്യസുരക്ഷയുടെ പ്രശ്നം ഇല്ല.

50. Apart from all this is the issue of the petitioner's children who have not learned Malayalam. It is based on the research findings that the petitioner has

had. Now, if they are forced to learn Malayalam, they can escape from this draconian law only by moving out of Kerala. That in effect means that their right to stay in this place is infringed upon. In fact, many persons could be affected by such a rule. That is, they can escape this rule or law, by simply moving out of Kerala. That in effect, displays a very powerful stance of intolerance on the part of the State Government of Kerala. For, if such an eventuality were to be forced upon them, then it shall be a violation of the provisions of Article 19 (e) {Fundamental Rights}. This shall apply to any child who is thus forced to move out of Kerala for similar reasons.

50. ഇതിനെല്ലാം ഉപരിയായി, ഈ പെറ്റീഷണറുടെ കുട്ടികളുടെ കാര്യം ഉണ്ട്. അവർ മലയാളം പഠിച്ചിട്ടില്ല. ഇങ്ങനെ ചെയ്തത്, ഈ പെറ്റീഷണർ ചെയ്ത പഠനങ്ങളുടെ അടിസ്ഥാനത്തിലാണ്. അവരെ മലയാളം നിർബന്ധിച്ച് പഠിപ്പിക്കുകയാണെങ്കിൽ, അവർക്ക് ഈ കഠിനീയമത്തിൽ നിന്നും രക്ഷനേടാൻ ഈ സംസ്ഥാനം വിട്ടു പോകേണ്ടതായ് വരും. എന്നു വെച്ചാൽ അവർക്ക് ഇവിടെ ജീവിക്കാനുള്ള അവകാശം തടയപ്പെട്ടു വെന്നാണ്. ഇത് സംസ്ഥാന സർക്കാരിന്റെ ഭാഗത്തുനിന്നുള്ള അസഹിഷ്ണുതയാണ് കാണിക്കുന്നത്. അങ്ങനെ ഒരു സംഭവവികാസം വരുകയാണെങ്കിൽ, അത് ഇന്ത്യൻ ഭരണഘടനയിലെ [Article 19 \(e\)](#)ന്റെ ലംഘനമായിവരും. ഇത് കേരളത്തിൽനിന്നും, ഇക്കാരണത്താൽ ഒഴിഞ്ഞുപോകപ്പെടുന്ന ഓരോ കുട്ടിയുടെയും കാര്യത്തിൽ ശരിയാകും.

51. The petitioner wishes to discuss the legal and constitutional status of the inputs given by the respondents No: 2, for they have relied heavily on the Articles in the Constitution of India to support their contentions.

51. എതിർ കക്ഷിക്കാർ എല്ലാരും, വളരെ പഠിപ്പും, വിവരവും ഉള്ളവരാണ്. ഈ പെറ്റീഷണർ അവരെ തരം താഴ്ത്താനോ, അപമാനിക്കാനോ, ആഗ്രഹിക്കുന്നില്ല. അവർ നൽകിയ വാദഗതിയിൽ എന്തെങ്കിലും, ഗൂഢ ഉദ്ദേശ്യങ്ങൾ ഉണ്ട് എന്നും പറയുന്നില്ല. അവർ ഇക്കാര്യത്തിൽ മുന്നോട്ട് വന്നതിലുള്ള ഉദ്ദേശ ശുദ്ധിയേക്കുറച്ചും, ഈ പെറ്റീഷണർ ബോധവാനാണ്.

52. ഇനി ഈ പെറ്റീഷണർ, എതിർ കക്ഷിക്കാർ ഉയർത്തിയ നിയമപരവും, ഭരണഘടനാപരവുമായ, കാര്യങ്ങൾ ചർച്ചചെയ്യാൻ ആഗ്രഹിക്കുന്നു.

a. Malayalam is a language listed as item No: 11 in the 8th Schedule of the Constitution of India. Not disputed.

a. മലയാളം ഇന്ത്യൻ ഭരണഘടനയിലെ 8ാം ഷെഡ്യൂളിൽ ലിസ്റ്റ് ചെയ്തിരിക്കുന്ന ഒരു ഭാഷയാണ്. ഈ പെറ്റീഷണർ ഇത് സമ്മതിക്കുന്നു.

b. As per Article 345, the Legislature of the state has the right to adopt any language as the Official Language of the State. Not disputed.

b. ഇന്ത്യൻ ഭരണഘടനയിലെ 345ാം Article പ്രകാരം ഏതൊരു സംസ്ഥാനത്തിനും, അതിനിഷ്ഠമുള്ള ഭാഷയെ ഔദ്യോഗിക ഭാഷയായി

അംഗീകരിക്കാം. ഈ പെറ്റീഷണർ ഇത് സമ്മതിക്കുന്നു.

c. Now, a reading of the Articles 343 to 350 as requested by the respondents and beyond to 351 shall not really highlight the point raised by the respondents that the spirit of the Articles here is to promote regional languages. The general spirit visible in these Articles is really to propagate Hindi; which this petitioner thinks is not what the respondents are pleading for.

c. എതിർ കക്ഷിക്കാർ ആവശ്യപ്പെട്ട പ്രകാരം Article 343 മുതൽ 350 വരെയും, അതിനപ്പുറം, 351ഉം, വായിക്കുകയാണെങ്കിൽ അവയിലെ ആന്തരികാർത്ഥം, അവ പ്രാദേശികഭാഷകളുടെ പ്രചരിപ്പിക്കലല്ല, മറിച്ച് ഹിന്ദിയുടെ വളർച്ചയാണ് കാമിക്കുന്നതെന്നാണ് മനസ്സിലാവുക. ഇതാണ് എതിർ കക്ഷിക്കാർ ആഗ്രഹിക്കുന്നത് എന്ന് തോന്നുന്നില്ല.

d. Even if the contentions of the respondents that the State Government has every right to enforce a State Language as the official language of the state is true, there is **Article 350A**, which states thus: *It shall be the endeavour of every State and of every local authority within the State to provide adequate facilities for instruction in the mother-tongue at the primary stage of education to children belonging to linguistic minority groups; and the President may issue such directions to any State as he considers necessary or proper for securing the provision of such facilities.* If the respondents are quoting from the Constitution of India, then they shouldn't have missed this. This Article more or less emphasises that primary education should be in the *Mother Tongue* of the child. Now, what is *Mother Tongue* is a debatable item, for in the case of this petitioner's children's case, their Mother's language is an interior village, uneducated form of Malayalam. So, the term *Mother Tongue* needs to be properly defined. It may be mentioned in passing that the quality of a person's *speech, words, usages, tone and dialect* is used as a measure of a person's calibre and intellectual standards in social interactions.

d. എതിർ കക്ഷിക്കാർ സംസ്ഥാന സർക്കാരിന് ഏതൊരു ഭാഷയെയും, ഔദ്യോഗിക ഭാഷയായി പ്രഖ്യാപിക്കാനുള്ള അവകാശം ഉണ്ട് എന്ന് പറയുമ്പോഴും, ഇന്ത്യൻ ഭരണഘടനയിലെ Article 350A കൂടി നോക്കേണ്ടതുണ്ട്: *It shall be the endeavour of every State and of every local authority within the State to provide adequate facilities for instruction in the mother-tongue at the primary stage of education to children belonging to linguistic minority groups; and the President may issue such directions to any State as he considers necessary or proper for securing the provision of such facilities.* എതിർ കക്ഷിക്കാർ ഭരണഘടനയാണ് ഉദ്ദരിക്കുന്നതെങ്കിൽ അവർ ഇത്

കൂടികാണേണ്ടതായിരുന്നു. ഇവിടെ ഭാഷാസ്വഭാവങ്ങളുടെ കൂട്ടികൾക്ക് അവരുടെ മാതൃഭാഷയിൽ പ്രൈമറി വിദ്യാഭ്യാസം നടത്താൻ അവകാശം നൽകുന്നു. ഇവിടെ മാതൃഭാഷ എന്നാൽ എന്താണ് എന്നതിനെ ശരിയായി നിർവ്വചിക്കേണ്ടതുണ്ട്. കാരണം, ഈ പെറ്റീഷണറുടെ കൂട്ടികളുടെ അമ്മയുടെ ഭാഷ, ഒരു ഉൾനാടൻ, വിദ്യാഭ്യാസമില്ലാത്ത ഒരു തരം മലയാളം ആയിരുന്നു. ഇവിടെ പറയേണ്ടുന്ന ഒരു കാര്യം, ഒരു വ്യക്തിയുടെ ഭാഷ, വാക്കുകളുടെ ക്വാളിറ്റി, സ്വരം, ശൈലി എന്നിവ അയാളുടെ മാനസിക നിലവാരവും, ബുദ്ധിയുടെയും, സാമൂഹിക നിലവാരത്തിന്റെയും അളവുകോലായി, സാമൂഹിക ബന്ധങ്ങളിൽ നിലകൊള്ളുന്നു.

e. Education comes under the Concurrent List. Well, that is agreed, for it definitely doesn't come under the State List. As to its limitations mentioned in entries 63, 64, 65 and 66, they have relevance here to the extent that all the elite levels of educational institutions connected to scientific research, technical education, professional, vocational & police training, special studies, scientific detection of crime, and coordination in higher education, research, scientific and technical institutions are all under a national educational scheme. Here itself it is clear, that the children from the financially weaker sections would be at a disadvantage, if they are not provided good quality English education, and are compelled to learn all technical terminology in a regional language.

e. വിദ്യാഭ്യാസം Concurrent list ലാണ് വരുന്നത്. അതിനോട് പൂർണ്ണമായി യോജിക്കുന്നു; അത് State listൽ വരുന്നില്ല തന്നെ. പരാമർശിച്ചിട്ടുള്ള entries 63, 64, 65, 66 എന്നിവയിലെ പരിമിധികളെപ്പറ്റിപ്പറയുകയാണെങ്കിൽ ദേശീയ നിലകളിൽ പ്രാഗൽഭ്യമുള്ള, ശാസ്ത്രീയ, ഗവേഷണ, ടെക്നിക്കൽ, പോഹഷനൽ, വൊക്കേഷനൽ, പോലീസ് ട്രൈനിങ്, സ്പെഷൽ സ്റ്റഡീസ്, കുറ്റങ്ങളുടെ ശാസ്ത്രീയ രീതിയിലുള്ള കണ്ടുപിടിക്കൽ, ഉന്നതവിദ്യാഭ്യാസം, റിസർച്ച്, സൈന്റിഫിക് & ടെക്നിക്കൽ ഇൻസ്റ്റിറ്റ്യൂഷനുകൾ എന്നിവയിലുള്ള കോ-ഓഡിനേഷൻ, തുടങ്ങിയ എല്ലാ ഉയർന്ന നിലവാരമുള്ള വിദ്യാഭ്യാസകാര്യങ്ങളും, ദേശീയ പദ്ധതിയിലാണ് (Union list) വരുന്നത്. ഇതിൽ നിന്നു തന്നെ മനസ്സിലാകും, സാമ്പത്തികമായി പിന്നോട്ടുനിൽക്കുന്ന വീടുകളിൽനിന്നും വരുന്ന വിദ്യാർത്ഥികൾക്ക് മലയാളത്തിലുള്ള വിദ്യാഭ്യാസം, വിദ്യാഭ്യാസപരമായ വളർച്ചക്ക് തടസ്സങ്ങൾ ഏറെ ഉണ്ടാകും എന്ന്. കാരണം, അവർ പഠിച്ച മഴുവൻ ടെർമിനോളജിയും മലയാളത്തിലാണ്

f. The only item connected to education specifically entrusted to the State as per the State List is Agricultural education (entry 14 of State List).

f. പൂർണ്ണമായും, State listൽ കൊടുത്തിരിക്കുന്നത് കാർഷിക വിദ്യാഭ്യാസം മാത്രമാണ്.

g. Since the issues have to be settled by the spirit and words of the Constitution of India, the petitioner insists that the provisions of Article 14 have to be examined thoroughly: *The State shall not deny to any person equality before the law or the equal protection of the laws within the territory of India.*

g. ഇവിടെയുള്ള ചോദ്യങ്ങൾക്കുള്ള പൂർണ്ണമായ ഉത്തരം ഇന്ത്യൻ ഭരണഘടനയുടെ സ്പിരിറ്റിന് അനുസൃതമായി കണ്ടെത്തേണ്ടതുണ്ട്. അത് കൊണ്ട് തന്നെ ഈ പെറ്റീഷണർ ഇന്ത്യൻ ഭരണഘടനയുടെ Article 14നെ സസൂക്ഷ്മമായി പരിശോധിക്കണം എന്നു വിനീതമായി ആവശ്യപ്പെടുന്നു: *The State shall not deny to any person equality before the law or the equal protection of the laws within the territory of India.*

h. Social inequality based on hierarchical codes and contents in Malayalam is a reality here. However, that is **not a legal or statutory** feature, and need not be discussed here. But the issue comes up when the *official language, legal language, and language of administration* start getting filled with hierarchical codes of inequality. For example, a person approaches someone like the Village Officer, Police Constable, a clerk in a Taluk office and such lower level government officials. He or she can be addressed and also referred to, by three levels of words and usages. Moreover, the words, he or she has to use to the officials are to be consistently of the obsequious, hom-age-bearing type, if he or she is a lower level person as per Malayalam usages. In which case, he or she automatically or spontaneously goes in for a submissive, low-personal dignity posture (as has been ingrained into him from his Malayalam school education). It is clearly seen that there is discrimination at the official level. However, if the language of administration is English, at least to some extent, this discrimination can be avoided. Using a language with hierarchical codes as the official, administrative and legal language can immediately involve the infringement of the safeguards mentioned in Article 14. Why nobody has not taken this up for legal action against the officials concerned is just because they are not fully aware of the egalitarian codes inside English and do not fully understand the wonderful spirit of Article 14 of the Constitution of India.

h. മലയാളഭാഷയിലെ ഉച്ച - നീചത്വ കോഡുകളുടെ അടിസ്ഥാനത്തിലുള്ള സാമൂഹിക അസമത്വം കേരളത്തിൽ ഒരു യാഥാർത്ഥ്യം തന്നെയാണ്. എന്നാൽ ഇത് ഇന്ന് ഒരു നിയമപരമായ കാര്യമല്ല. അതുകൊണ്ട് തന്നെ ഇവിടെ ചർച്ച ചെയ്യേണ്ട കാര്യമില്ല. എന്നാൽ ഈ ഭാഷ [ഔദ്യോഗിക](#)

ഭാഷയും, നിയമത്തിന്റെ ഭാഷയും, ഭരണത്തിന്റെ ഭാഷയും, ആകുമ്പോൾ കാര്യം മാറുന്നു. കാരണം, അങ്ങിനെയാകുമ്പോൾ, ഇപ്പറഞ്ഞതിലെല്ലാം, അസമത്വത്തിന്റെ കോഡുകൾ നിറയുന്നു. ഉദാഹരണത്തിന്: ഒരാൾ ഒരു വില്ലജ് ഓഫീസർ, അല്ലെങ്കിൽ പോലീസ് കോൺസ്റ്റബിൾ, അല്ലെങ്കിൽ ഒരു താലൂക്ക് ഓഫീസിലെ ക്ലാർക്ക് എന്നിങ്ങനെയുള്ള താഴെക്കിടയിലുള്ള ഏതെങ്കിലും സർക്കാർ ഉദ്യോഗസ്ഥനെ സമീപിക്കുന്നു. അവർക്ക് ഈ ആളെ മുമ്പ് സാമൂഹിക നിലവാരങ്ങളിലുള്ള വാക്കുകളാലും, വാക്യങ്ങളാലും, സംബോധന ചെയ്യാനും, നിർവ്വചിക്കാനും കഴിയും. അതെ സമയം, അയാൾ മലയാള വാക്കുകളുടെ താഴെക്കിടയിലുള്ള ആളാണെങ്കിൽ, ഈ താഴെക്കിടയിലുള്ള ഉദ്യോഗസ്ഥരെപ്പോലും അയാൾ ഒരു ജന്മിയോടെന്ന പോലുള്ള വാക്കുകളാൽ സംബോധന ചെയ്യുകയും, ബഹുമാനിക്കുകയും വേണം. അപ്പോൾ മലയാളം-സ്കൂളുകളിൽ അയളുടെ മനസ്സിൽ പതിപ്പിച്ചുമാതിരിയുള്ള മാനസിക അധഃപ്പതനം, അയാൾ പ്രകടിപ്പിക്കണം. ഇതിൽ നിന്നു തന്നെ ഇവിടെ ഔദ്യോഗികതലത്തിൽ വിവചനം നടക്കുന്നുണ്ട് എന്ന് വ്യക്തമാണ്. ഭരണഭാഷ ഇങ്ഗ്ലീഷാണെങ്കിൽ ഇതിന്റെ ആഗാതം കുറെയൊക്കെത്തടയാം. പ്രത്യേകിച്ചും, അയാൾക്ക് ഇങ്ഗ്ലീഷ് അറിയാമെങ്കിൽ. സമൂഹത്തിൽ വിവേചനം കൊണ്ടുവരുന്ന ഒരു ഭാഷയെ ഭരണഭാഷയും, ഔദ്യോഗിക ഭാഷയും, നിയമത്തിന്റെ ഭാഷയും ആക്കുന്നത്, ഇന്ത്യൻ ഭരണഘടനയുടെ Article 14ന്റെ നഗ്നമായ ലംഘനമാകും. ഉദ്യോഗസ്ഥന്മാർ ഇങ്ങിനെ പെരുമാറുമ്പോൾ എന്ത് കൊണ്ട് ആരും, നിയമപരമായി ആ ഉദ്യോഗസ്ഥനെ ശിക്ഷിക്കാൻ ആവശ്യപ്പെടുന്നില്ല എന്ന് ചോദിക്കുമ്പോൾ, അതിന്റെ കാരണം, ഇന്ത്യൻ ഭരണഘടനയിലെ Article 14ന്റെ അതിഗംഭീരമായ അർത്ഥത്തെക്കുറിച്ച് ആരും ബോധവാന്മാരല്ല എന്നു വേണം കരുതാൻ. മാത്രവുമല്ല, ഇങ്ഗ്ലീഷിലെ സാമൂഹിക സമത്വത്തിനെക്കുറിച്ചും, അവർക്കു അറിയില്ല എന്നു വേണം കരുതാൻ.

i. Then we need to simply go through the Preamble of the Constitutions: JUSTICE, **Social**, ———; LIBERTY of thought, **expression**, belief, faith and worship (please note the word *expression*); EQUALITY of **status** and opportunity (please note the word *status*); FRATERNITY assuring the **dignity** of the individual — (please note the word **dignity**). Imposing a hierarchical coded, feudal (*Janmi-kudiyaan* relationship) language statutorily goes against the very preamble of the Constitution of India. Words that gnaw at the dignity of the individual should not be used. However, they are a natural part of Malayalam usages and are not considered as profanity or expletives.

i. ഇനി നമ്മൾ ഇന്ത്യൻ ഭരണഘടനയുടെ Preambleയുടെ ഒന്ന് പോകാം: JUSTICE, Social, ———; LIBERTY of thought, **expression**, belief, faith and worship (please note the word *expression*); EQUALITY of **status** and opportunity (please note the word *status*); FRATERNITY assuring the dignity of the individual ---- (please note the word *dignity*). ഒരു ജന്മികുടിയാൻ , ഉച്ചനീചത്വ കോഡുകളുള്ള ഭാഷ അടിച്ചേൽപ്പിക്കുമ്പോൾ അത്, ഇന്ത്യൻ

ഭരണഘടനയുടെ **Preamble**ലിന് എതിരാവുന്നു. ഒരു വ്യക്തിയുടെ വ്യക്തിത്വത്തിനെ ഉറച്ചുകൊള്ളുന്ന വാക്കുകൾ ഉപയോഗിക്കരുത്. എന്നാൽ അവ മലയാളഭാഷയുടെ സ്വാവാഭിക ഭാഗം മാത്രമാണ്. അവയൊന്നും തന്നെ ചീത്തവാക്കുകളായിക്കരുതപ്പെടുന്നില്ല.

j. Now we need to examine the word *expression*. For as per Article 19, the citizens of India have been given the **Right to Freedom of Speech and Expression**. Right to freedom of expression is just not a limited right that all persons domiciled in Kerala should do their verbal expressions and mental thought processes **only in Malayalam**. Moreover, in the Preamble of the Constitutions itself, it is clearly mentioned in golden words: *WE, THE PEOPLE OF INDIA, having solemnly resolved to constitute India into a SOVEREIGN SOCIALIST SECULAR DEMOCRATIC REPUBLIC and to secure to all its citizens: ————— LIBERTY of thought, expression—————*. Well, it may be construed that this liberty of expression can be extended to liberty to study and express his or her knowledge and learning in whatever language he or she desires. And also to refuse to learn and express in any language the person is not inclined to do so.

j. ഇനി നമ്മൾ **expression** എന്ന വാക്ക് പരിശോധിക്കണം. കാരണം, Article 19 പ്രകാരം, ഇന്ത്യൻ പൗരന് **the Right to Freedom of Speech and Expression** നൽകപ്പെട്ടിട്ടുണ്ട്. ഇതിന്റെ അർത്ഥം, കേരളത്തിൽ ജീവിക്കുന്ന ഏവരും, മലയാളത്തിൽ മാത്രമെ ആശയ വിനിമയം ചെയ്യാവൂ എന്നോ, ചിന്തിക്കാവൂ എന്നോ അല്ല. മാത്രവുമല്ല, ഇന്ത്യൻ ഭരണഘടനയുടെ **Preamble**ൽ ഇക്കാര്യം സ്വർണ്ണലിപികളിൽ അലേഖനം ചെയ്യപ്പെട്ടിട്ടുണ്ട്. *WE, THE PEOPLE OF INDIA, having solemnly resolved to constitute India into a SOVEREIGN SOCIALIST SECULAR DEMOCRATIC REPUBLIC and to secure to all its citizens: ----- LIBERTY of thought, expression-----*. ഈ അവകാശം, ഒരു പൗരന്, അയാൾക്ക് ഇഷ്ടപ്പെട്ട ഭാഷയിൽ പഠിക്കാനോ, അറിവുള്ളകാര്യങ്ങൾ ഇഷ്ടപ്പെട്ട ഭാഷയിൽ പ്രകടിപ്പിക്കാനോ അവകാശം നൽകുന്നു. അയാൾക്ക് ഇഷ്ടമില്ലാത്ത ഭാഷ പഠിക്കാതിരിക്കാനും, സംസാരിക്കാതിരിക്കാനുമുള്ള അവകാശം ഇതിൽ ഉൾപ്പെട്ടിരിക്കുന്നു.

k. This petitioner would again quote Article 19 (e): *to reside and settle in any part of the territory of India*. If a person is compelled to teach his children what he or she does not desire the child to learn, then he or she may be compelled to move out of the state. The issue is not like moving out of a nation, but something more parochial. This goes against the provisions of Article 19 (e), for it is connected to a person's right to reside anywhere inside India, and not about moving out of India.

k. ഈ പെറ്റീഷണർ ഇന്ത്യൻ ഭരണഘടനയിലെ Article 19 (e) വീണ്ടും ഉദ്ദരിക്കാൻ ആഗ്രഹിക്കുന്നു: *to reside and settle in any part of the territory of India*. ഒരു വ്യക്തി അയാൾ ഇഷ്ടപ്പെടാത്ത ഭാഷ അയാളുടെ കുട്ടികളെ പഠിപ്പിക്കുവാൻ നിർബന്ധിതനായാൽ, അയാൾ അയാളുടെ കുട്ടികളെ ആ സംസ്ഥാനത്ത് നിന്നും എടുത്ത് പുറത്ത് പോയിതാമസിക്കാൻ നിർബന്ധിതനായേക്കും. ഇത് രാജ്യം വിട്ടു പോകുന്നത് പോലെയല്ല. ഭരണഘടനയിലെ Article 19 (e) ന്റെ പൂർണ്ണമായ ലംഘനമാണ് ഇവിടെ നടക്കുന്നത്.

l. Last, the Hon'ble High Court of Kerala has taken up the issue of whether the right of the Child or of his or her parents to opt out of learning a language has been infringed. This petitioner contends that it has been infringed upon. For, it goes against the words and spirit of Article 19 of the Constitution of India; specifically Article 19 (a).

l. ഏറ്റവും ഒടുവിൽ പറയാനുള്ളത്: ഒരു ഭാഷ പഠിക്കുന്നതിൽ നിന്ന് ഒഴിവാകാനുള്ള ഒരു കുട്ടിയുടേയും, അയാളുടെ മാതാപിതാക്കളുടെ അവകാശം ലംഘിക്കപ്പെടുന്നുണ്ടോയെന്ന ചോദ്യമാണ് ബഹുമാനപ്പെട്ട ഹൈക്കോടതി പരിശോധനക്കെടുത്തിരിക്കുന്നത്. ഈ പെറ്റീഷണർക്ക് പറയാനുള്ളത്, അത് ലംഘിക്കപ്പെട്ടിട്ടുണ്ടെന്നാണ്. കാരണം മലയാളം അടിച്ചേൽപ്പിക്കുമ്പോൾ ഇന്ത്യൻ ഭരണഘടനയിലെ മൗലികാവകാശങ്ങൾ ഖണ്ഡിക്കപ്പെടുന്നു.

m. It is stressed that even though the State Legislature has powers to make rules, those rules and Acts should pass the test of whether they are compatible with the spirit of the Fundamental Rights. If they go against the Fundamental Rights, they are null and void. For, Fundamental Rights are enshrined in our Constitutions to bridle State Legislatures from running amok, impelled by emotional fervours of parochial political pragmatism.

m. സംസ്ഥാന സർക്കാരുകൾക്ക് പല നിയമങ്ങൾ പാസാക്കാനുള്ള അധികാരം ഉണ്ടെങ്കിലും, അവയൊന്നും തന്നെ ഭരണഘടനയിൽ ആലേഖനം ചെയ്യപ്പെട്ടിട്ടുള്ള മൗലിക അവകാശങ്ങളെ ഖണ്ഡിക്കരുത്. അവയിൽ ഏതെങ്കിലും ഒന്ന്, മൗലിക അവകാശങ്ങൾക്ക് വിപരീതമായ നിലകൊള്ളുന്നവയായാൽ അതിന് നിയമ പ്രാബല്യം നഷ്ടപ്പെടും. മൗലിക അവകാശങ്ങൾക്ക് ഭരണഘടനയിൽ ദിവ്യമായ സ്ഥാനമാണ്. അവയാണ് രാഷ്ട്രീയക്കരുടേയും, ഉദ്യോഗസ്ഥ വർഗ്ഗത്തിന്റേയും, അഴിഞ്ഞാട്ടത്തിന് തടസ്സമായി, നിൽക്കുന്ന ഏക ആയുധം. അതിനെ തകർക്കുന്ന ഒന്നും തന്നെ ഇവിടെ നടത്താൻ പറ്റില്ല.

n. Now, let this petitioner call the attention of the Hon'ble High Court to the Directive Principles of State Policy of our Constitution.

n. ഇനി ഈ പെറ്റീഷണർ ബഹുമാനപ്പെട്ട ഹൈക്കോടതിയുടെ ശ്രദ്ധ ഭരണഘടനയിലെ Directive Principles of State Policy ലെക്ക് ക്ഷണിക്കുന്നു:

1. Article 38 (2): The State shall, ————— endeavour to eliminate **inequalities in status**, facilities and opportunities, not only amongst individuals but also amongst groups of people residing in different areas or engaged in **different vocations**. {Malayalam does view different vocations with different social levels and status}.

2. Article 39A: The State shall secure that the operation of the *legal system* promotes justice, on a **basis of equal opportunity**, and shall, ————— ensure that opportunities for securing justice are not denied to any citizen by reason of economic or **other disabilities**.

3. Article 46: *The State shall promote with special care the educational and economic interests of the weaker sections of the people, and, in particular, of the Scheduled Castes and the Scheduled Tribes, and shall **protect them from social injustice** and **all forms** of exploitation*. The petitioner has pointed out in his findings presented before the Hon'ble High Court: *Social classes that have been amalgamated into the Indian nation such as the **Adivasis**, have been despoiled, since even their clan chieftains have been degraded by the use of lower grade words by even the government peons and policemen of shipai rank, apart from all other officials*.

3. ഈ പെറ്റീഷണർ ബഹുമാനപ്പെട്ട ഹൈക്കോടതിയുടെ മുമ്പാകെ സമർപ്പിച്ച ഹരജിയൽ ചൂണ്ടിക്കാട്ടിയകാര്യമാണ് ഇവിടെ പ്രതിപാദ്യം: ഇന്ത്യാരാജ്യത്തിൽ ലയിപ്പിക്കപ്പെട്ട ആദിവാസികളെപ്പോലുള്ള പല ജനവിഭാഗങ്ങളും, താഴ്ത്തപ്പെട്ടുപ്പോയി. കാരണം, അവരുടെ മൂപ്പന്മാരെ വരെ സർക്കാരിലെ വളരെ താഴ്ന്ന നിലവാരമുള്ള പ്യൂണുകളും, പോലീസ് കോൺസ്റ്റബിൾമാരും വരെ, മലയാളത്തിലെ താഴ്ന്ന വാക്കുകളായ നീ, അവൻ, ഇവൻ, അവൾ, എടാ, എടീ തുടങ്ങിയവാക്കുകളാൽ മലിനപ്പെടുത്തി.

Article 46 പ്രകാരം ഇവർക്ക് ലഭിക്കേണ്ടുന്ന സംരക്ഷണം ലഭിച്ചില്ല.

VICTORIA INSTITUTIONS

Aaradhana, DEVERKOVIL 673508 India

www.victoriainstitutions.com

admn@victoriainstitutions.com

Contact via Telegram: https://t.me/VICTORIA_INSTITUTIONS

The following items are available for free-use inside Telegram Channels created and maintained by VICTORIA INSTITUTIONS.

You need to have / install Telegram Messenger in your computer or mobile device. Click on this link to reach the Home Page Channel inside Telegram. From there you can move to the various other Channels.

Some of the Internet Service Providers are seen blocking links to Telegram Channels. If which case, the links will not move through the browser windows. If that be the case, you can search for this: @VI_Home inside Telegram. You will find the Channel in the Global Search location – VICTORIA HOME Page. Or else post this link inside Telegram https://t.me/VI_Home and then click on it.

VICTORIA INSTITUTIONS is an online-entity that supports pristine-English in the form in which it existed before the end of the WW2 in pristine-England.

JOIN PRO pristine-English organisation [CLICK HERE](#)

α. English Learning

1. English Class
2. English use corrections
3. Passage and questions
4. Aesop fables reading
5. Impromptu / extempore speeches
6. Reading English Classics (audio)
7. English annotations of old Malayalam filmsongs
8. Multiple-choice questions for various entrance exams
9. ദക്ഷിണേഷ്യൻ ഉപഭൂഖണ്ഡ ചരിത്രത്തെക്കുറിച്ചുള്ള ഒരു അനുഭാവ്യ ചിത്രീകരണം (ഫ്യൂഡൽ ഭാഷകൾ) (with English translation.)
10. English phrases

b. Books from the English Colonial rule period in South Asia

1. Malabar Manual by William Logan (along with commentary by VED from VICTORIA INSTITUTIONS)
2. Travancore State Manual by V Nagam Aiya (along with commentary by VED from VICTORIA INSTITUTIONS)
3. Native Life in Travancore by The REV. SAMUEL MATEER, F.L.S. (along with commentary by VED from VICTORIA INSTITUTIONS)
4. Castes & Tribes of Southern India by EDGAR THURSTON (along with commentary by VED from VICTORIA INSTITUTIONS)
5. OMENS AND SUPERSTITIONS OF SOUTHERN INDIA by Edgar Thurston

c. English Classics

1. Silas Marner by George Eliot)
2. De profundis by Oscar Wilde

d. ILLUSTRATED BOOKS

1. ENGLISH CLASSICS Illustrated
2. ENGLISH Fairytales Illustrated

e. ENGLISH FILMS & VIDEOS

1. Old English films

g. Books by VED from VICTORIA INSTITUTIONS

Read inside Telegram Channel

1. MARCH OF THE EVIL EMPIRES; English versus the feudal languages!
2. SHROUDED SATANISM in FEUDAL LANGUAGES! Tribulations and intractability of improving others!!
3. Software codes of Reality, Life and Languages!
4. Codes of reality! What is language?
5. The Machinery of Homœopathy!
6. Software codes of mantra, tantra, witchcraft, black magic, evil eye, evil tongue &c.
7. COMPULSORY FORMAL EDUCATION! A travesty!
8. MEIN KAMPF by Adolf Hitler - A demystification!
9. Idiocy of the Indian Protection of Women from Domestic Violence Act!
10. My Online Writings (2004 - 07) (on one GB web-forums)
11. Horrendous India! A parade of facade in verbal codes!
12. PRISTINE-ENGLISH! What is different about it?
13. An urgent appeal for ENGLISH RACISM
14. A different perspective on International Relationship!
15. Indian Married Life - The undercurrents!
16. GANDHI and his JJ! Grooming up of a fake!!
17. Writ Petition against Compulsory Malayalam Study!
18. ദക്ഷിണേഷ്യൻ ഉപഭൂഖണ്ഡ ചരിത്രത്തെ കുറിച്ചുള്ള ഒരു അനുഭാവ്യചിത്രീകരണം
19. An impressionistic history of the South Asian subcontinent

h. Download as PDF files

1. Prospects for research studies in language codes
2. The tragic consequences of teaching Hindi in Australia! (Require Foxit Reader)
3. Vintage English
4. British sailors in Indian stinking jails!
5. VEILED routes to resources in Computers & on the Internet, unVEILED!

i. Read as part of Shrouded Satanism in feudal languages - Telegram Channel

1. Indian Culture! What is it exactly?
2. ENTERING the WORLD of ANIMALS
3. FENCE EATING the CROPS! A treatise on the bureaucratic loot & swindle of India. (English-Hindi)

j. MULTIPLE CHOICE Questionnaires

1. South Asia (Pdf digital book to be opened Foxit Reader)
2. World General Knowledge
3. Medical / Engineering Entrance Exam questions

k. Public Domain books published by VICTORIA INSTITUTIONS

1. Fifteen Thousand Useful Phrases by Greenville Kleiser
2. The Picture of Dorian Gray by Oscar Wilde
3. Prose writings of Oscar Wilde: Stories, Short stories, essays &c.
4. KNOTS, SPLICES and ROPE WORK: A PRACTICAL TREATISE
5. THE STORY OF CAWNPORE by CAPT. MOWBRAY THOMSON
6. THE ART OF WAR by SUN TZU
7. THE KAMA SUTRA of VATSYAYANA
8. Palmistry for all by Cheiro
9. THE CAPTIVITY, SUFFERINGS AND ESCAPE of JAMES SCURRY